• मध्यप्रदेश में आएगा पानीदार कानून • कीटनाशक कंपनियों की जमकर चांदी

In Pursuit of Truth

पाक्षिक

अक्स

www.akshnews.com

बैंकिंग प्रणाली गहरे संकट में

वर्ष 18, अंक-12 | 16 से 31 मार्च 2020 | मूल्य 25 रूपये

R.N.I NO.HIN/2002/8718 M.P. BPL/642/ 2015-17

बाजीगर कौन?

मध्यप्रदेश शासन

NATIONAL HEALTH MISSION
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन

कमल नाथ, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

कोरोना वायरस संक्रमण को फैलने से रोकें

लक्षण ➡ खाँसी | बुखार | साँस लेने में तकलीफ

वायरस संक्रमण से बचने के लिये...

छींकते और खाँसते समय नाक और मुँह ढकें, ढकने में प्रयोग किये गये टिशू को किसी बंद डिब्बे में फेंक दें।

नियमित रूप से साबुन और पानी से हाथ धोएं

हाथ मिलाने के बजाय **नमस्ते करें**

जिस व्यक्ति में खाँसी, जुकाम या बुखार के लक्षण हों, उससे दूरी बनाएं।

भीड़-भाड़ वाली जगह से बचें अनावश्यक यात्रा न करें

सावधानी रखें **कोरोना वायरस से बचें**

खाँसी, बुखार या साँस लेने में परेशानी है तो शासकीय चिकित्सक से उपचार लें।

अधिक जानकारी के लिये टोल फ्री नं. 104 पर सम्पर्क करें

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश शासन द्वारा जनहित में जारी

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2020

इस अंक में

आर्थिकी

10-11 | बैंकिंग प्रणाली गहरे संकट में

देश आर्थिक बदहाली के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में बैंकिंग प्रणाली भी गहरे संकट में है। देश का सबसे बड़ा निजी बैंक यस बैंक संकट में है। सरकार ग्राहकों को आश्वासन दे रही है कि घबराने की जरूरत नहीं है।

विकास

12 | अवैध अब वैध

राजधानी के सुनियोजित विकास की योजना से जुड़ा भोपाल मास्टर प्लान 2031 जारी किया गया है। इस मास्टर प्लान को लगभग 35 लाख की आबादी मानकर तैयार किया गया है और इसमें ग्रीन बेल्ट को संरक्षित करने पर विशेष...

अपराध

13 | झांसेबाजों पर नकेल

आर्थिक राजधानी कहे जाने वाला इंदौर शहर ठगी करने वाली एडवाइजरी कंपनियों का गढ़ बनता जा रहा है। पुलिस के पास आ रही शिकायतों से पता चला कि शहर में कई कंपनियां सेबी से पंजीयन के बिना अवैध रूप से चल रही है, कई मामले ऐसे भी हैं...

स्वास्थ्य

15 | महामारी बना कोरोना

दुनिया में पिछले कुछ दशकों में कई खतरनाक वायरस के हमले हुए। इनसे बड़े पैमाने पर लोगों की मौत भी हुई। पिछले दो-तीन दशकों में इबोला, सार्स और स्वाइन फ्लू को सबसे किलर वायरस माना गया, लेकिन माना जा रहा है कि जिस तरह कोरोना वायरस पूरी दुनिया में फैल रहा...

आवरण कथा 24, 25, 26, 27, 28

बाजीगर कौन?

हार कर जीतने वाले को बाजीगर कहते हैं! शाहरुख खान की फिल्म बाजीगर का ये डायलॉग यूं ही मशहूर नहीं हो गया। इस डायलॉग में जीवन का सार छुपा है। जब हम हार से हारते नहीं, लगातार जीतने की कोशिश करते रहते हैं, तो हमारी जीत निश्चित होती है। हम तब तक नहीं हारते, जब तक हम हार नहीं मान लेते। कुछ ऐसी ही स्थिति इन दिनों मप्र की राजनीति में भी देखने को मिल रही है। यहां असली बाजीगर कौन है, यह जल्द ही सामने आ जाएगा।

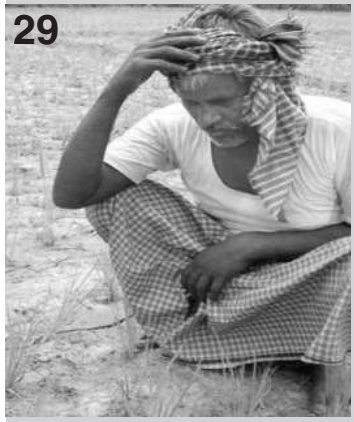

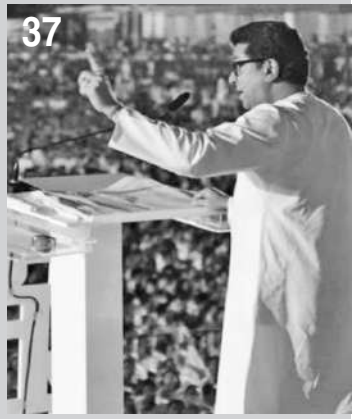

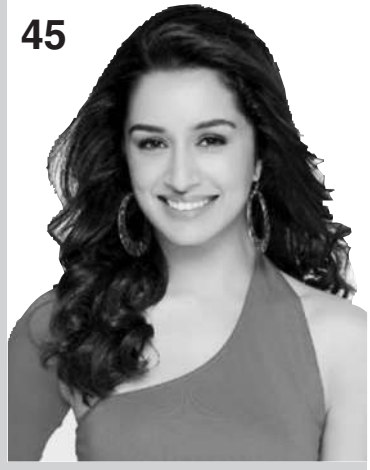

राजनीति

30-31 | संघर्षों में उलझी कांग्रेस

देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस इन दिनों दो संघर्षों में उलझी हुई है। दोनों समानांतर स्तर पर चल रहे हैं। पहला संघर्ष कांग्रेस के सामने अस्तित्व बचाने का है। दूसरा, कांग्रेस के प्रथम परिवार यानी नेहरू-गांधी परिवार का रुतबा कायम रखने या कहिए कि वीटो बनाए रखने का है।

सियासत

32-33 | ब्रांड अमित शाह!

भारतीय राजनीति का यह दौर युवा नेताओं का है। लगभग हर पार्टी में युवा नेतृत्व आगे बढ़ रहा है। केवल भाजपा ही ऐसी पार्टी है जिसमें फिलहाल कोई युवा अन्य पार्टी के युवाओं की तरह नेतृत्व नहीं संभाले हुए है। लेकिन भाजपाई इस बात को सिरे से नकारते हैं।

उत्तरप्रदेश

36 | दोराहे पर खड़ी बसपा

बात ज्यादा पुरानी नहीं है। मध्य जनवरी की गुनगुनी धूप और सर्द हवाओं की ठिठुरन के बावजूद समाजवादी पार्टी के लखनऊ मुख्यालय में जबरदस्त सियासी गरमी दिख रही थी। किसी रैली जैसे माहौल में उत्साही कार्यकर्ताओं की भीड़ के बीच मंच...

6-7 अंदर की बात
40 विदेश
41 महिला जगत
43 कहानी
44 खेल
45 फिल्म
46 व्यंग्य

अपनी बात

न जाने प्रकृति ने ऐसा, कड़वा रुख क्यों अपनाया?

किसी कवि ने ठीक ही कहा है...

लोग तो झूठे हैं ही यहां पर, मौसम भी बेईमान हुआ।
बेकार हुई सारी मेहनत, और बहुत नुकसान हुआ।।

कुछ ऐसी ही दशा अपने देश के किसानों की है। सरकार 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुना करने की दिशा में काम कर रही है, लेकिन प्रकृति के कोप के आगे किसान ही नहीं सरकार भी बेहाल है। हर साल किसान बड़ी लगन और मेहनत के साथ अपने खेत में फसल बोता है। फिर जैसे ही फसल लहलहाने लगती है, उसे अपना भाग्य बदलते नजर आने लगता है। लेकिन तभी प्रकृति का कोप बरसता है और उसकी मेहनत और सपने दोनों धराशाही हो जाते हैं। तब उसके मन में यह सवाल उठता है कि- न जाने प्रकृति ने ऐसा, कड़वा रुख क्यों अपनाया? जिसके क्रोध की आग में, हमने अपना सर्वस्व गंवाया। यह किसी एक फसल क्रम या एक साल की बात नहीं है बल्कि यह क्रम हर साल देखने को मिलता है। आलम यह है कि हर साल केंद्र सरकार किसानों की मदद के लिए सवा दो लाख करोड़ रुपए की भारी भरकम राशि खर्च करती है। ये राशि फर्टिलाइजर सब्सिडी, बिजली, फसल बीमा, बीज, किसान कर्ज, सिंचाई जैसी मदों में खर्च की जाती है। बावजूद इसके देश का किसान बदहाल है। उसकी हालत इतनी खराब है कि वो अपनी दैनिक जरूरतों को भी पूरा नहीं कर पा रहा है। उसकी और उसके जैसे दूसरे 75 फीसदी आबादी की मदद के लिए सरकार सस्ती दर पर अनाज के साथ परिवार के एक सदस्य को मनरेगा के तहत 100 दिनों का रोजगार मुहैया कराती है लेकिन किसानों की स्थिति सुधरने का नाम नहीं ले रही है। जब किसान बदहाल होता है तो उसका असर सरकार पर भी पड़ता है। फसल खराब होने के बाद अनाज महंगे हो जाते हैं इसका प्रभाव आम जनता पर पड़ता है। इससे हमारी अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। यह दुख की बात है कि जो क्षेत्र हमारी अर्थव्यवस्था का मुख्य घटक है यानी कृषि जो 62 प्रतिशत जनसंख्या को आजीविका देता है, 56 प्रतिशत लोगों को रोजगार देता है, वह मौसम और प्राकृतिक आपदाओं की मार झेलने को मजबूर है। आज स्थिति यह है कि आर्थिक बदहाली के इस दौर में राज्य सरकार के पास किसानों को मुआवजा देने तक का फंड नहीं है। केंद्र सरकार हो या फिर प्रदेश सरकार दोनों आर्थिक तंगी के दौर से गुजर रहे हैं। हाल ही में बेमौसम हुई बरसात और ओलावृष्टि से किसानों की फसलों का नुकसान हुआ है। ऐसे में किसानों को मुआवजे की भी आस जाती रही है क्योंकि सरकार का खजाना पूरी तरह खाली है। दरअसल, किसानों के उत्थान के लिए सरकार की जितनी भी योजनाएं हैं, वे भी किसानों की समस्या दूर करने में सफल नहीं हो रही हैं। एक दशक से ज्यादा पहले किसानों की हालत सुधारने या उन्हें राहत देने के मकसद से सरकारी स्तर पर राष्ट्रीय फसल बीमा योजना शुरू हुई थी। दुखद है कि फसल नष्ट होने की स्थिति में क्षतिपूर्ति के लिए किसानों को काफी भागदौड़ करनी पड़ती है। किसानों को मुआवजा भी तब मिलता है जब प्रखंड स्तर पर फसल बर्बाद हुई हो। एक विडंबना तो यह भी है कि एक ओर किसानों को फसल बीमा का फायदा नहीं मिलता तो दूसरी ओर बैंक कर्ज वसूली के लिए किसानों पर दबाव बनाते हैं। कुल मिलाकर देखा जाए तो सरकारों के तमाम दावों और वादों के बावजूद फसल बीमा योजना किसानों के लिए सिर्फ एक छलावा ही साबित हुई है। ऐसे में किसानों की बदहाली कैसे दूर होगी यह सवाल लगातार बना हुआ है। इस सवाल के समाधान के लिए केंद्र और राज्य सरकार को संगठित तौर पर किसान हितैषी योजना बनानी होगी। वरना किसान साल-दर-साल बदहाल होता रहेगा।

-राजेन्द्र आगाल

पाक्षिक अक्स

वर्ष 18, अंक 12, 16 से 31 मार्च, 2020

प्रकाशक एवं संपादक : राजेन्द्र आगाल

सम्पादकीय कार्यालय :
प्लाट नम्बर 150, जोन-1 मनोरमा कॉम्पलेक्स,
एफ-03, 04, प्रथम तल, एम.पी. नगर
भोपाल- 462011 (म.प्र.),
फोन नं. 0755-2557777, टेलीफेक्स - 0755-4017788
email : akshmagazine@gmail.com
Website : www.akshnews.com
RNI NO. HIN/2002/8718 MPBPL/642/2015-17

ब्यूरो
मुंबई :- ऋतेन्द्र माथुर, **कोलकाता:**- इंद्रकुमार, **जयपुर:**- आर.के. बिन्नानी, **छत्तीसगढ़:**- संजय शुक्ला, मार्केण्डेय तिवारी, टी.पी. सिंह, **लखनऊ :**- मधु आलोक निगम।

प्रदेश संवाददाता
094251 25096 (इंदौर) विकास दुबे
098276 18400 (जबलपुर) धर्मेन्द्र कथूरिया
094259 85070, (उज्जैन) श्यामसिंह सिकरवार
094259 85070, (मंदसौर) धर्मवीर रत्नावत
098934 77156, (विदिशा) ज्योत्सना अनूप यादव

क्षेत्रीय कार्यालय
नई दिल्ली : ईसी 294 माया इंक्लेव मायापुरी-
फोन : 011 25495021, 011 25494676
मुंबई : बी-1, 41 शिव पावर्ती चेम्बर प्लाट नंबर 106-110 सेक्टर-21
नेरूल, नवी मुंबई-400706 मो.-093211 54411
कोलकाता : 70/2 हजरा रोड कोलकाता
फोन-033 24763787, मोबाइल: 09331 033446
जयपुर : सी-37, शांतिपथ, श्याम नगर (राजस्थान)
फोन- 0141 2295805, मोबाइल-09829 010331
रायपुर : एमआईजी 1 सेक्टर-3 शंकर नगर, फोन : 0771 2282517
भिलाई : नेहरू भवन के सामने, सुपेला, रामनगर, भिलाई,
मोबाइल 094241 08015
इंदौर : 39 श्रुत्रि सिलंटर निपानिया, इंदौर
मोबाइल - 094251 25096

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक, राजेन्द्र आगाल द्वारा आगाल प्रिंटर्स, प्लाट नं. 150, जोन-1, प्रथम तल, एफ-03, मनोरमा काम्पलेक्स, एम.पी. नगर भोपाल 462011 (म.प्र.), से मुद्रित एवं प्रकाशित

इस अंक में प्रकाशित सामग्री लेखकों के अपने विचार हैं इनसे सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं समस्त विवादों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।

पत्र–संपादक के नाम

akshnews.com

अच्छी योजनाएं लाएं

मप्र की कांग्रेस सरकार द्वारा अच्छे काम किए जा रहे हैं। प्रदेश में राशन की कालाबाजारी जोरों पर है। सरकार को इस ओर ठोस कदम उठाने चाहिए। जिससे कोई भी गरीबों का हक न छीन सके। आज भी कई क्षेत्रों में जिन्हें राशन की आवश्यकता है उन्हें राशन नहीं मिलता।

● **कौशल वर्मा,** शिवपुरी

कब तक कर्ज की सरकार

सरकार आखिर कब तक कर्ज लेकर प्रदेश को चलाएगी। सरकार को कुछ ऐसी योजनाएं लानी चाहिए, जिससे प्रदेश में राजस्व की स्थिति सुधरे, रोजगार बढ़े और प्रदेश को केंद्र सरकार से और कर्ज न लेना पड़े। मप्र सरकार पिछले एक साल में हजारों करोड़ का कर्ज ले चुकी है।

● **रमेश सेन,** इंदौर

मप्र से भेदभाव क्यों

केंद्र सरकार द्वारा मध्यप्रदेश से भेदभाव किया जा रहा है। इस कारण प्रदेश में कई योजनाएं बंद होने की कगार पर हैं। मनरेगा और प्रधानमंत्री आवास जैसी कई योजनाओं का पैसा अभी तक केंद्र सरकार ने रोककर रखा हुआ है। आखिर ऐसा किसलिए हो रहा है।

● **प्रदीप सिंह,** ग्वालियर

भाजपा की ओर आकर्षित होगी युवा पीढ़ी

मध्यप्रदेश भाजपा के नए प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा के कंधों पर बड़ी जिम्मेदारियां हैं। संगठन के साथ ही पार्टी के सांसदों, विधायकों और कार्यकर्ताओं को भी सक्रिय करने का दायित्व वीडी शर्मा पर है। उम्मीद है कि संगठन के साथ युवाओं को जोड़ने का काम शर्मा बखूबी कर पाएंगे। इससे प्रदेश की युवा पीढ़ी का आकर्षण भाजपा की ओर बढ़ेगा। संगठन चुनाव में जिन मंडल और जिलों में चुनाव नहीं हो पाए हैं। वहां आम सहमति बनाकर मनोनयन करने का दायित्व भी वे अच्छे से निभा पाएंगे। लोगों को उम्मीद है कि वीडी शर्मा एक अच्छे प्रदेश अध्यक्ष के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभाएंगे।

● **राजेश कुमार,** भोपाल

केजरीवाल को सड़कों पर आना चाहिए था

दिल्ली में जो हिंसा हुई, उसमें सिर्फ अकेले गृहमंत्री अमित शाह की जिम्मेदारी नहीं थी, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को भी कुछ करना चाहिए था। आखिर केजरीवाल ने इन दंगों को इस स्थिति तक न पहुंचने देने के लिए क्या किया? क्या मुख्यमंत्री अपने विधायकों, मंत्रियों के साथ तनाव वाली सड़कों में उतर नहीं सकते थे? इसमें कोई संदेह नहीं है कि राजनीतिक कमजोरी के साथ ही पुलिस की निष्क्रियता भी इस हिंसा का कारण रही है। लेकिन सीएम होने के नाते केजरीवाल को भी लोगों के बीच जाना चाहिए था।

● **रोहित यादव,** नई दिल्ली

रिश्ते मजबूत हुए

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारत आकर हमारे देश और प्रधानमंत्री की तारीफ की। इससे ये बात साबित होती है कि विदेश में भारत की छवि काफी अच्छी है। भारत की संस्कृति और यहां पर अतिथियों को किस प्रकार सम्मान दिया जाता है, इसकी तारीफ कई देशों ने की है। हमें इसी तरह अपने रिश्ते अन्य देशों से मजबूत करके रखना चाहिए।

● **शंकर दयाल,** जबलपुर

पाठकों से निवेदन

कृपया अपनी प्रतिक्रियाएं पक्ष या विपक्ष जो भी संभव हो इस पते पर भेजें

अक्स

150 जोन-1, मनोरमा काम्पलेक्स,
एफ-02, 03, एमपी नगर, भोपाल

बड़े बेआबरू हो निकले पटनायक

अगर किसी को सौगात में कोई पद मिले और बाद में छिन जाए तो उसे कैसा लगता होगा, यह तो हर किसी को एहसास है। ऐसा ही कुछ दिल्ली पुलिस कमिश्नर अमूल्य पटनायक के साथ भी हुआ है। अमूल्य पटनायक सेवा विस्तार पर चल रहे थे। 31 जनवरी को उन्होंने रिटायर होना था, लेकिन केंद्र सरकार ने दिल्ली विधानसभा चुनाव के चलते उन्हें एक माह का एक्सटेंशन दिया था। इस बीच उन्हें पोस्ट रिटायरमेंट किसी महत्वपूर्ण पद में बैठाए जाने की खबर दिल्ली के सत्ता गलियारों में घूम रही थी कि तभी राजधानी का एक बड़ा हिस्सा हिंसा की चपेट में आ गया। दिल्ली पुलिस पूरी तरह से इस हिंसा को रोक पाने में विफल रही। हाईकोर्ट ने तक पुलिस को जबरदस्त फटकार लगा डाली। इस सबके चलते पटनायक की खासी किरकिरी हो रही है। इससे पहले जामिया और जेएनयू मामले को लेकर भी पटनायक पर सवाल उठ चुके हैं। सूत्रों का दावा है कि भले ही पटनायक की कार्यशैली पर लाख हो-हल्ला मच रहा हो, भाजपा नेतृत्व आज नहीं तो कल उन्हें कोई न कोई जिम्मेदारी देगा जरूर। इस बीच चौतरफा आलोचना का शिकार हो रहे पटनायक खासे व्यथित हैं कि केंद्र सरकार ने उनके रहते दिल्ली पुलिस की जिम्मेदारी अपरोक्ष रूप से स्पेशल कमिश्नर श्रीवास्तव को सौंप दी।

न घर के, न घाट के

अपनी दबंग छवि के लिए पहचाने जाते रहे फिल्म अभिनेता, राजनेता शत्रुघ्न सिन्हा राजनीतिक वनवास काट रहे हैं। भाजपा के दिग्गजों में गिने जाने वाले शॉटगन सिन्हा के मोदी राज में गर्दिश के दिन शुरू हुए। बाकी नेताओं की तरह 'खामोश' न रह शत्रुघ्न ने नए आकाओं के खिलाफ बगावत कर डाली। बड़ी धूमधाम से कांग्रेस में शामिल हुए सिन्हा को पटना की जनता ने लोकसभा चुनाव में भाव नहीं दिया। खबर है कि भारी अंतर से भाजपा प्रत्याशी रविशंकर प्रसाद के हाथों पराजित हुए शॉटगन अब भाजपा में वापसी के लिए छटपटा रहे हैं। आजकल जब मौका मिले सिन्हा गृहमंत्री का स्तुति गान करते सुने जा सकते हैं। जानकारों की मानें तो 74 बरस के सिन्हा की चाह किसी राजनिवास में जा बैठने की है। लेकिन समस्या यह है कि मोदी-शाह की जोड़ी सिन्हा को भाव देने के कतई मूड़ में नहीं है, तो दूसरी तरफ कांग्रेस आलाकमान भी उनके बिगड़े बोल के चलते उनसे नाराज हो चला है।

छुपे रुस्तम

ओडिशा के मुख्यमंत्री के नाते नवीन पटनायक ने इसी माह लगातार 20 साल पद पर बने रहने का रेकार्ड बना दिया। नवीन ने पिता की मृत्यु के बाद अचानक उनकी विरासत संभाली। जनता दल टूटा तो 1998 में अपनी अलग पार्टी बीजू जनता दल बनाई। वाजपेयी सरकार में मंत्री बने। फिर विधानसभा चुनाव हुआ तो पहली बार 5 मार्च वर्ष 2000 को मुख्यमंत्री बने और तब से सत्ता पर मजबूती से कायम हैं। शुरुआत भाजपा के साथ राजग में शामिल रहते की। फिर गठबंधन तोड़ा और अकेले चुनावी जंग में कूदे। विवाह नहीं किया। यहां तक कि शुरू में तो उड़िया भी ठीक से नहीं बोल पाते थे। पर सियासी मंत्र ऐसे पढ़े कि कोई न टिक पाया मुकाबले में। एक तो आज के चर्चित नेताओं वाली आत्मप्रशंसा की बीमारी नहीं पाली। दूसरे खुद को केवल ओडिशा के लोगों की सेवा तक सीमित रखा। न केंद्र की सियासत के पचड़े में फंसे और न प्रधानमंत्री पद का ख्वाब ही देखा। सियासी सफर में कई साथी साथ आए तो कई साथ छोड़ गए। पर नवीन ने किसी को जरूरत से ज्यादा भाव नहीं दिया। गरीबों के सच्चे रहनुमा की ऐसी छवि बना रखी है कि खुद को राजनीति का चाणक्य समझने वाले भी उनके चक्रव्यूह को सारे जतन करके भी नहीं भेद पाए।

वक्त का फेर

राजस्थान में अब नए नेतृत्व को उभारने के एजंडे पर काम कर रहा है भाजपा आलाकमान। सत्ता से बेदखली के बाद वसुंधरा राजे को अपनी पार्टी के भीतर भी उपेक्षा का सामना करना पड़ रहा है। सब वक्त का फेर है। सदा किसी के दिन एक से नहीं रहते। वसुंधरा की तूती बोलती रही सूबे की सियासत में पूरे डेढ़ दशक तक। आलम यह था कि 2014 में प्रधानमंत्री के शपथग्रहण समारोह से गैरहाजिर रहने वाले भाजपा नेताओं में वसुंधरा ही अकेली थीं। यही नहीं वसुंधरा के तमाम प्रयासों के बावजूद उनके पुत्र को वरिष्ठता के बावजूद केंद्र में मंत्री पद नहीं दिया। मोदी मंत्रिमंडल में उन्हें मंत्री बनाया, जो वसुंधरा को नहीं भाते। फिर बची-खुची कसर वसुंधरा की सलाह लिए बिना युवा जाट विधायक सतीश पूनिया को पार्टी की कमान सौंप दी। कोटा के ओम बिरला को लोकसभा अध्यक्ष जैसा अहम दायित्व सौंप वसुंधरा को संकेत दे दिया कि अब उनके दिन लद गए। बदलाव की हवा का रुख भांप अब वसुंधरा खेमे के नेता भी पाला बदल रहे हैं।

राजधानी के लिए दांवपेच

उत्तराखंड बेशक छोटा है पर उठापटक में कोई कमी नहीं। फिलहाल राजधानी देहरादून यानी गढ़वाल में है और हाईकोर्ट नैनीताल यानी कुमाऊं में। भौगोलिक नजरिए से देखें तो देहरादून कुमाऊं वासियों को ही नहीं गढ़वाल के भी दूर-दराज पर्वतीय इलाकों के लोगों के लिए काफी दूर है। राजधानी कहीं मध्य में हो, इसी सोच से कांग्रेस ने गैरसैण को राजधानी बनाने का फैसला किया था। यह बात अलग है कि दो दशक बाद भी राजधानी देहरादून में ही कायम है। अब त्रिवेंद्र सिंह रावत ने गैरसैण को ग्रीष्मकालीन राजधानी घोषित किया है। कांग्रेस इसे स्थाई राजधानी बनाने की पक्षधर रही है। मुख्यमंत्री की ग्रीष्मकालीन राजधानी की घोषणा पर सूबे के भाजपाई जश्न मना रहे हैं। यह बात अलग है कि कांग्रेस की सरकार में जब विजय बहुगुणा मुख्यमंत्री थे तो उन्होंने गैरसैण में तंबू लगवा कर विधानसभा का एक सत्र भी आयोजित कर दिया था। अब देखना यह है कि मुख्यमंत्री की मंशा पूरी होती है या नहीं।

मैं कोई चोर-उचक्का नहीं

मप्र की राजनीति में मचे घमासान के बीच इन दिनों तरह-तरह के रंग देखने को मिल रहे हैं। भाजपा और कांग्रेस अपने विधायकों को एक रखने के साथ ही दूसरी पार्टी के विधायकों पर भी डोरे डाल रही है। फिलहाल भाजपा ने कांग्रेस के 22 विधायकों को अपने पाले में कर लिया है। कांग्रेस के पाले में गए विधायकों को लाने के लिए भाजपा तरह-तरह के कदम उठा रही है। गत दिनों पूर्व में कांग्रेस सरकार में मंत्री रहे एक कांग्रेसी विधायक ने भाजपा का दामन थाम लिया तो उस पर प्रदेश की राजनीति में जमकर बवाल मचा। कुछ समय तक गायब रहने वाले ये वरिष्ठ विधायक प्रकट हुए तो उन्होंने पहले अपनी पार्टी में निष्ठा जताई फिर कुछ दिन बाद जाकर भाजपा में शामिल हो गए। सूत्र बताते हैं कि पिछले कई दिनों से गायब रहे इन माननीयों की खोज के लिए कांग्रेस ने अपने चहेते कुछ अफसरों को भी तैनात किया था। बताया जाता है कि माननीय की खोज में लगे एक सीएसपी का जब सामना उनसे होता है तो साहब की बांछे खिल जाती हैं। उन्होंने आव देखा न ताव और माननीय से कहा- अरे! आप मिल गए। मैं कबसे आपको ढूंढ रहा था। मैं आप ही को लेने आया हूं। सीएसपी की बात सुनकर माननीय इस कदर चिढ़ गए कि उन्होंने उन्हें डांटते हुए कहा- मैं कोई चोर-उचक्का नहीं हूं, जो तुम मुझे लेने आए हो। मेरी जब मर्जी होगी, मैं आ जाऊंगा। इस बीच सीएसपी ने सरकार को फोन लगा दिया और प्रदेश सरकार के एक मंत्री चार्टेड प्लेन से उन्हें लेने पहुंच गए।

जिसकी रैली उसके हम

जब भी किसी राजनीतिक दल की रैली या सभा होती है तो उसमें पार्टी के निष्ठावान कार्यकर्ता शामिल होते हैं। लेकिन अक्सर इन रैलियों में कुछ ऐसे भी लोग शामिल होते हैं जो हाथ की सफाई में माहिर होते हैं। रैलियां और सभाएं इनके लिए किसी आशीर्वाद से कम नहीं हैं। गत दिनों भोपाल में भाजपा की एक बड़ी रैली आयोजित की गई। यह रैली भाजपा कार्यालय पहुंची और वहां मौजूद कार्यकर्ता अपने नए महाराज के स्वागत-सत्कार में ऐसे लीन हुए कि उनकी जेबें कट गईं। वह भी एक-दो नहीं बल्कि आधा सैकड़ा से अधिक। इससे पहले जब कमलनाथ प्रदेश के मुख्यमंत्री बने तो उनके शपथग्रहण समारोह में भी आधा सैकड़ा लोगों की जेबें काट ली गई। यही नहीं, इंदौर में भाजपा के नेता अमित शाह की बड़ी सभा हुई थी, वहां भी कई लोगों की जेबें कटी थीं। उस दौरान कुछ जेब कतरे पकड़े भी गए थे। उन जेब कतरों का कहना था कि यही तो हमारे लिए मौका होता है जब हम अपनी हाथ की सफाई दिखाते हैं। रैली किस पार्टी की है, किस नेता की है, उससे हमें कुछ भी लेना-देना नहीं है। जिसकी रैली होती है, हम उसी के हो जाते हैं। सबसे हैरानी की बात यह है कि जिन रैलियों में सुरक्षा के चाक-चौबंद प्रबंध रहते हैं, उन्हीं रैलियों में सबसे अधिक जब कटी होती है।

पहली किश्त भी नहीं निकली...

प्रदेश की राजनीति में रोज-रोज हो रहे उतार-चढ़ाव से अफसरशाही भी हैरान है। खासकर जिलों में तैनात अफसर हैरान, परेशान हैं। प्रदेश की प्रशासनिक वीथिका में यह चर्चा जोरों पर है कि कई कमिश्नर और कलेक्टर रोजाना फोन करके फीडबैक ले रहे हैं कि सरकार स्थिर है या अस्थिर। अफसरों की बेचैनी की जब पड़ताल की गई तो यह तथ्य सामने आया कि जिलों में पदस्थ अधिकांश अफसर लक्ष्मीजी का दान करने के बाद वहां गए हुए हैं। कई अफसरों ने तो कुर्सी पाने के लिए मोटी राशि दान की है। अभी तक कुछ अफसर ऐसे भी हैं जिन्होंने अपनी देनदारी की पहली किश्त भी नहीं निकाली है। यही अफसर सबसे अधिक चिंतित हैं। गौरतलब है कि वर्तमान सरकार ने अपने 14 माह के शासनकाल में रिकार्डतोड़ तबादले किए हैं। सूत्र बताते हैं कि इन तबादलों में बड़ी लेनदेन की गई है। जो अफसर पहले से जिलों में पदस्थ हैं, उन्होंने तो कुछ कमाई कर ली है, लेकिन हाल के दिनों में जो जिलों में पदस्थ हैं वे सर्वाधिक चिंतित हैं। सूत्र यह भी बताते हैं कि कई अफसर तो देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना करने लगे हैं कि किसी तरह सरकार बच जाए। अब देखना यह है कि इन अफसरों की दुआ कितनी काम आती है। अगर वाकई सरकार गिर जाती है तो कई अफसरों की सालों की कमाई पर पानी फिर सकता है। क्योंकि उन्हें डर है कि प्रदेश में सत्ता परिवर्तन के बाद अगली सरकार आते ही उन्हें किनारे कर देगी।

किस्मत का प्रबल होना

कुछ लोग किस्मत के धनी होते हैं। ये जो चीज नहीं सोचते हैं वो भी हो जाता है। ऐसा ही कुछ पुलिस के नए मुखिया के साथ हुआ है। दरअसल, साहब के भाग्य का छींका इस तरह फूटा है कि साहब तरबतर हो गए हैं। एक तो साहब को बिना प्रयास के पुलिस मुखिया की कुर्सी मिली। हालांकि केंद्र में प्रतिनियुक्ति पर होने के कारण उनके समय पर नहीं आने पर प्रभारी के तौर पर एक अन्य साहब को कुर्सी पर बैठा दिया गया। प्रभारी के तौर पर कुर्सी मिलने वाले साहब सपने देखने लगे कि अभी नहीं तो कुछ दिन बाद तो यह कुर्सी मुझे ही मिल जाएगी। लेकिन दिल्ली में पदस्थ रहे साहब का भाग्य इतना प्रबल रहा कि होली के दिन ही उन्हें रिलीव कर दिया गया। अब इसे भाग्य ही कहेंगे कि छुट्टी के दिन उन्हें मप्र जाने की अनुमति मिल गई। साहब यहां आए और प्रभारी से प्रभार लेकर अपना काम संभाला। काम संभालते ही साहब का भाग्य एक बार फिर चमका और सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें दो साल का एक्सटेंशन दे दिया। इसके पीछे कयास लगाए जा रहे हैं कि साहब जहां से आए हैं वहां से पौवा लगा होगा। दरअसल, प्रदेश में बदले राजनीतिक समीकरण से जुड़कर इसे देखा जा रहा है।

अब पछताए क्या हो...

मध्यप्रदेश में पिछले 15 वर्षों के बाद लगभग सवा साल पहले आई कांग्रेस सरकार के नेता अब अपनी किस्मत पर रो रहे हैं। पार्टी के एक पदाधिकारी का कहना है कि कई बार बैठकों में सरकार और संगठन को सचेत किया गया कि अगर खाली पड़ी कुर्सियों का बंटवारा जल्द से जल्द नहीं किया गया तो स्थिति बेकाबू हो सकती है। जिसका डर था वह हो गया है। वह कहते हैं कि पिछले दिनों हुई कैबिनेट बैठक में जब एक मंत्री ने यह मुद्दा उठाया तो उन्हें यह कहकर शांत करा दिया गया कि अब पछताए क्या हो, जब चिड़िया चुग गई खेत। निश्चित रूप से सरकार बनने के बाद कांग्रेस के पास मौका था कि वह गुटों में बंटी पार्टी को एकजुट करने के लिए सभी गुटों के नेताओं को निगम मंडलों में खाली कुर्सियां बांट दे। लेकिन पार्टी के रणनीतिकार मौके की नजाकत नहीं समझ सके। बताया जाता है कि पार्टी के अधिकांश लोग यह मान रहे हैं कि आज सरकार जिस स्थिति में है उसके लिए एक व्यक्ति जिम्मेदार है जो अपने आप को सुपर सीएम समझते थे।

देश में आर्थिक बदहाली चरम पर है। देश कई समस्याओं से ग्रस्त है। उसके बाद भी केंद्र की मोदी सरकार इन समस्याओं के समाधान पर ध्यान नहीं दे रही है। उलट इसके वह कांग्रेस की सरकारों को अस्थिर करने में लगी हुई है।

● **राहुल गांधी**

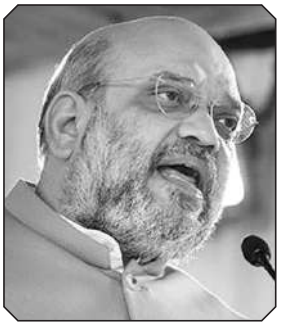

दिल्ली में हिंसा एक गहरी साजिश के बिना नहीं हो सकती थी। जांच के दौरान पाया गया कि इस साजिश में यूपी से लोग आए थे। पुलिस ने बड़ी साजिश के बावजूद दंगे को दिल्ली के 4 प्रतिशत क्षेत्र और 13 प्रतिशत आबादी के बीच ही सीमित रखा। दिल्ली पुलिस ने अच्छा काम किया और पहली सूचना मिलने के बाद महज 36 घंटे में पूरी स्थिति में काबू पा लिया।

● **अमित शाह**

बीसीसीआई ने मुझे मुख्य चयनकर्ता की जो जिम्मेदारी दी है उसका सही ढंग से निर्वहन करूंगा। मेरी हमेशा यही कोशिश रहेगी कि भारतीय क्रिकेट टीम में प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को जगह मिले। आज भारत में प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की कमी नहीं है। ऐसे में हमारे लिए खिलाड़ियों का चयन बड़ी चुनौती है। हम इस पर खरा उतरने की कोशिश करेंगे।

● **सुनील जोशी**

कोरोना वायरस पूरी दुनिया का साझा दुश्मन है। हमें इसे जल्द से जल्द और सुरक्षित तरीके से हराना होगा। कोरोना वायरस अमेरिका में ही नहीं बल्कि अन्य देशों में भी खतरा बन गया है। इसलिए हमें लोगों की सुरक्षा से ज्यादा और कुछ महत्वपूर्ण नहीं है।

● **डोनाल्ड ट्रम्प**

मैं अपने से जुड़ी उन बातों को नहीं छुपाती हूं, जो मुझे खुशी देती हैं। मेरे पास मेरा अपना निजी स्पेस है और मुझे पसंद नहीं कि कोई उसमें घुसने की कोशिश करे। इन दिनों मेरी शादी की अफवाह जोरों पर है। शादी एक पवित्र बंधन है। ये जितना किसी अन्य के लिए महत्वपूर्ण है, उतना ही मेरे लिए भी है। और जिस दिन ये वास्तव में होगी, लोगों को पता चल जाएगा। हो सकता है मैं सार्वजनिक रूप से घोषणा नहीं करूं कि मैं किससे शादी कर रही हूं, लेकिन पूछने वाले लोगों का हमेशा स्वागत करूंगी और उन्हें जवाब देने के लिए हमेशा तैयार हूं।

● **अनुष्का शेट्टी**

वाक्युद्ध

भाजपा हमेशा चाल, चेहरा और चरित्र की बात करती है, लेकिन जब भी मौका मिलता है वह दूसरी विचारधारा के लोगों को तोड़ने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ती है। दरअसल, भाजपा की यही कोशिश रहती है कि वह हर हाल में सत्ता में रहे। इसके लिए वह लोकतंत्र की हत्या करने में भी देर नहीं करती है।

● **प्रियंका गांधी**

भाजपा सीमित विचारों की पार्टी नहीं है। न ही यह परिवारवाद से ग्रसित है। इस पार्टी में हर आने वाले का स्वागत है। भाजपा पर आरोप लगाने वालों को पहले अपने घर में झांकना चाहिए। जिसके घर शीशे के हों, वे दूसरों के घरों में पत्थर नहीं फेंकते। अगर कांग्रेस में सबकुछ सही रहता तो लोग भाजपा में क्यों आते।

● **देवेंद्र फडणवीस**

मध्यप्रदेश का वन क्षेत्र देश में सबसे बड़ा है। इस प्रदेश को हरा-भरा बनाने के लिए पूर्ववर्ती भाजपा सरकार ने रिकार्डतोड़ पौधरोपण कराया था। लेकिन हकीकत यह है कि ये पौधरोपण केवल कागजों तक ही सीमित रहे...

बनते रिकॉर्ड और सूखते पौधे

गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के लिए ढाई साल पहले रोपे गए 6 करोड़ पौधों की स्थिति बेहद खराब है। 50 फीसदी पौधे पूरी तरह नष्ट हो चुके हैं। यह हाल प्रदेशभर में लगाए पौधों का सामने आया है। अब वन विभाग ने 200 वनकर्मियों से स्पष्टीकरण मांगा है। विभाग की सख्ती के चलते वनकर्मियों ने वसूली का विरोध शुरू कर दिया है। दरअसल 2 जुलाई 2017 को तत्कालीन भाजपा सरकार ने पूरे प्रदेशभर में 6 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा था। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराने के लिए महज एक दिन में ये पौधे लगाए गए। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन, धार, आलीराजपुर, रतलाम, मंदसौर, नीमच, झाबुआ, खंडवा, खरगोन समेत अन्य वनमंडल में वनक्षेत्र के हिसाब से लक्ष्य रखा था।

गौरतलब है कि प्रदेश में सरकार बदलते ही नई सरकार ने इनकी गिनती कराने का निर्णय लिया। वन मंत्री उमंग सिंघार ने मई 2019 में जहां पौधे रोपे वहां का निरीक्षण करने का आदेश दिया। प्रत्येक वनमंडल में अलग-अलग टीम के अधिकारियों ने दौरा कर वन विभाग मुख्यालय को अपनी रिपोर्ट सौंपी। छह महीने में काम पूरा हुआ। सूत्रों के मुताबिक, अधिकांश जगह टीम ने पौधे नष्ट होना, बराबर विकसित नहीं होना और पौधारोपण में गड़बड़ी का जिक्र रिपोर्ट में किया है। वन मुख्यालय से वसूली का आदेश दिया है। अब वनकर्मियों से स्पष्टीकरण मांगा है। इसके बाद पौधरोपण को लेकर हुए नुकसान का आंकलन किया जाएगा। इसके आधार पर वसूली निकाली जाएगी।

मध्यप्रदेश में सरकार से हटने के बाद शिवराज सरकार के दौरान हुए कारनामे एक-एक कर सामने आ रहे हैं। अब ताजा मामला शिवराज सरकार द्वारा करोड़ों पौधे लगाने का दावा कर पौधरोपण में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराने का है। शिवराज सरकार में हुए इस कारनामे की पोल मध्यप्रदेश के वन मंत्री उमंग सिंघार ने खोल दी है। इस मामले में वन विभाग के कई अधिकारी और कर्मचारी जद में आ गए हैं, जिन पर कार्रवाई हुई है। बता दें कि शिवराज सरकार ने जुलाई 2017 में मध्यप्रदेश स्थित बैतूल वन क्षेत्र के शाहपुर रेंज की पाठई बीट में कक्ष संख्या 227 में रिकॉर्ड पौधरोपण का दावा कर वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराकर खूब वाहवाही लूटी थी। कांग्रेस द्वारा इतने बड़े पैमाने पर पौधरोपण के दावे को शुरुआत से ही फर्जी करार दिया जा रहा था। इसके बाद जब राज्य में सत्ता परिवर्तन हुआ तो कांग्रेस सरकार के वन मंत्री उमंग सिंघार ने इसकी जांच-पड़ताल शुरू करते हुए अधिकारियों से रिपोर्ट तलब कर दी। अधिकारियों ने रिपोर्ट में कई पेड़ों के गिरने का दावा किया। जिसके बाद वन मंत्री सिंघार अचानक 26 जून को बैतूल पहुंच गए। अधिकारियों के साथ यहां उन्होंने भौतिक सत्यापन किया, जिसमें अधिकारियों और शिवराज सरकार की पोल खुल गई। इसके बाद दो डीएफओ समेत आठ वनकर्मियों पर गाज गिर गई है।

वन मंत्री उमंग सिंघार ने बताया कि यह शिवराज सरकार का एक बड़ा घोटाला है। जो रिपोर्ट मुख्यालय भेजी गई थी उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता था। यहां आकर भौतिक सत्यापन में पांच टीमों का गठन कर पौधों के गणना कक्ष में पौधों की गणना की गई। रिपोर्ट में पाया गया कि पूर्व सरकार की रिपोर्ट में 15,625 पौधे लगाने की बात है, लेकिन गड्ढे केवल 9,375 ही खोदे गए। और उसमें से भी गणना में मात्र 2,343 यानी 15 फीसदी पौधे ही जीवित मिले।

वन मंत्री ने बताया कि पूरे मामले में जिन अधिकारियों-कर्मचारियों की लापरवाही सामने आई है, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा रही है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा जारी फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया की 2019 की रिपोर्ट जारी कर दी गई है। इस रिपोर्ट से पता चलता है कि प्रदेश के 50 जिलों में से 25 में वनक्षेत्र दो साल में कम हुआ और 25 में बढ़ा है। सबसे ज्यादा जंगल सीहोर जिले में कटे हैं। जंगल कटने की सूची में वनमंत्री उमंग सिंघार का गृहजिला धार भी शामिल है। वहीं पन्ना में सबसे ज्यादा वनक्षेत्र बढ़ा है। उज्जैन ऐसा जिला है जहां कुल क्षेत्रफल का एक प्रतिशत भी जंगल नहीं है। यहां जंगल सिर्फ 0.59 प्रतिशत जमीन पर है। 10 जिलों में वनक्षेत्र 10 प्रतिशत से कम है और 17 में 20 प्रतिशत से कम। सिर्फ 2 जिलों में 50 प्रतिशत से ज्यादा। ये दो जिले बालाघाट और श्योपुर हैं। 10 प्रतिशत से कम वन वाले जिलों में झाबुआ भी शामिल है। 35 प्रतिशत से ज्यादा जंगल वाले जिले मात्र 10 हैं। इसरो के सैटेलाइट से मिले आंकड़ों से ये रिपोर्ट जारी की गई है। इसके पहले साल 2017 में रिपोर्ट आई थी। दो सालों में प्रदेश में 68.49 वर्ग किलोमीटर जंगल बढ़े हैं। प्रदेश में 25.14 प्रतिशत जंगल है। 2017 में ये 25.11 प्रतिशत थे। 17 जिलों में वेरी डेंस फॉरेस्ट (अधिक घनत्व वाले जंगल) नहीं है। आलीराजपुर और झाबुआ भी इस श्रेणी में रखे गए हैं।

● **सुनील सिंह**

वसूली पर वनकर्मियों ने किया विरोध

प्रदेश में 200 वनकर्मियों पर वसूली निकाली है। इसमें डिप्टी रेंजर, फॉरेस्ट गार्ड और नाकेदार शामिल हैं। वसूली का नोटिस मिलते ही वनकर्मियों ने सामूहिक स्पष्टीकरण देकर अपना विरोध जताया है। वनकर्मियों के मुताबिक, 2 जुलाई 2017 को लगाए पौधों में कुछ की गुणवत्ता ठीक नहीं थी। उस दौरान विभाग के पास महज 4 करोड़ पौधे अप्रैल तक तैयार थे। बाद में आनन-फानन में 3 करोड़ पौधे तैयार किए जो पौधरोपण के हिसाब से उचित नहीं थे। यहां तक मानक स्तर के गड्ढे भी नहीं खोदे गए। पौधे लगाने के ढाई महीने तक बरसात नहीं हुई, जिससे पौधों को पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं मिला। इसके चलते वे नष्ट हो गए, जिसमें वनकर्मियों को दोषी बताना गलत है।

देश आर्थिक बदहाली के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में बैंकिंग प्रणाली भी गहरे संकट में है। देश का सबसे बड़ा निजी बैंक यस बैंक संकट में है। सरकार ग्राहकों को आश्वासन दे रही है कि घबराने की जरूरत नहीं है। एक-एक पाई मिल जाएगा। लेकिन कब, इसका जवाब सरकार के पास नहीं है। बैंक की बदहाली और सरकार के रुख से लोगों में निराशा का भाव है।

बैंकिंग प्रणाली गहरे संकट में

क्या भारतीय बैंकिंग प्रणाली किसी गहरे संकट में है? यस बैंक के मौजूदा संकट के बाद यह सवाल फिर एक बार हमारे सामने खड़ा है। वित्त मंत्रालय और आरबीआई भले ही भरोसा दे रहे हों कि यस बैंक के ग्राहकों के पैसे सुरक्षित हैं, लेकिन लोगों को विश्वास नहीं हो रहा है। इसकी वजह यह है कि पूर्व में जितने भी बैंक, चिटफंड कंपनियां और उद्योगपति दिवालिया हुए हैं, उसमें डूबी लोगों की रकम नहीं मिली है या फिर इसके लिए वर्षों इंतजार करना पड़ा है।

यस बैंक जैसे बैंकों में अधिकतर पैसा **रिटायर** हो चुके लोगों, **शासकीय** और गैर शासकीय अधिकारियों-कर्मचारियों, छोटे-बड़े व्यवसायियों के जमा हैं। कंपनी के अधिकारियों एवं एक्जीक्यूटिव ने ग्राहकों को बड़े-बड़े प्रलोभन देकर फंसाया है। उनसे एफडी करवाया। और अब जब बैंक दिवालिया होने की कगार पर पहुंच गया है तो वे लोग चुप्पी साध गए हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि ग्राहकों की रकम वापस दिलाने की जिम्मेदारी किस पर है। बैंक प्रबंधन की गलतियों का खामियाजा ग्राहक क्यों भुगते?

दरअसल, देश में बैंक, चिटफंड कंपनियों और उद्योगपतियों के दिवालिया होने से अभी तक सरकार ने कोई सबक नहीं लिया है। सवाल उठता है कि सरकार ने अभी तक ऐसा कानून क्यों नहीं बनाया है, जिससे यह तय हो सके कि अगर किसी का पैसा बैंक के दिवालिया होने से डूबता है तो उसे किस स्रोत से उसका मूलधन मिलेगा। और इसके लिए कौन जिम्मेदार होगा? देश में **सारदा** चिटफंड घोटाला अभी भी लोग भूले नहीं होंगे। इस घोटाले के बाद संभावना बनी थी कि सरकार कोई सख्त कानून बना सकती है लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। अब यस बैंक के मौजूदा संकट से एक बार फिर सवाल उठने लगे हैं कि ग्राहकों की परेशानी का जिम्मेदार कौन है?

पीएमसी बैंक संकट के समय कहा गया था कि यह एक सरकारी बैंक था और प्रबंधन द्वारा दिए गए कुछ बड़े कर्जों के कारण उसके सामने नगदी की समस्या उत्पन्न हुई। यस बैंक के संकट में आने के ठीक-ठीक कारण क्या हैं, यह तो जांच के बाद ही पता चलेगा। लेकिन, उसके प्रबंधन से जुड़े विवाद काफी दिनों से चल रहे थे। इन विवादों के बीच बैंक की आर्थिक स्थिति के बारे में भी सवाल उठते रहते थे, लेकिन इस बारे में स्थिति कभी साफ नहीं की गई। शुरू-शुरू में तो लोगों से बड़े-बड़े वादे करके बैंक में खाते खुलवाए गए और उनके जीवनभर की पूंजी जमा कराई गई। लेकिन अब उनको अपनी रकम निकालने के लिए भी पाबंदियों का सामना करना पड़ रहा है। आखिर में ग्राहकों की क्या गलती थी? सरकार ने यस बैंक के चेयरमैन राणा कपूर और उनकी बेटी को अपने कब्जे में ले लिया है। सवाल उठता है कि क्या इससे लोगों की जमापूंजी उन्हें समय पर मिल पाएगी? क्या आरबीआई या सरकार को यस बैंक की खराब होती स्थिति का अहसास नहीं था?

दरअसल यस बैंक के खराब दिनों की

आरबीआई का एक गलत फैसला संकट की वजह

वर्तमान परिस्थितियों के बीच यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि जब यस बैंक के ग्राहकों और निवेशकों को आने वाला संकट दो साल पहले ही दिख गया था तो फिर रिजर्व बैंक की आंखों पर पट्टी क्यों बंधी रही? दरअसल यह कहना सही नहीं होगा कि रिजर्व बैंक ने यस बैंक के मामले की अनदेखी की। लेकिन यह अवश्य कहा जा सकता है कि रिजर्व बैंक अनिर्णय का शिकार हुआ। राणा कपूर की रीति-नीति और यस बैंक के कामकाज को निकट से देखने वाले विशेषज्ञों का मानना है कि अगस्त 2018 में कपूर को हटाए जाने के लिए 31 जनवरी 2019 तक की समयसीमा तय करना रिजर्व बैंक के लचर प्रशासनिक फैसले का एक उदाहरण है। कपूर ने जिस तरह यस बैंक की बैलेंस शीट को कमजोर किया था, उसमें गड़बड़ी की थी और कई आवश्यक जानकारियां छिपाने की कोशिश की थी, उसे देखते हुए बहुत पहले उनकी विदाई हो जानी चाहिए थी।

कहानी उसी दिन शुरू हो गई थी जब चेयरमैन राणा कपूर को आरबीआई की ओर से जबरन हटाया गया। यह तभी स्पष्ट हो गया था कि बैंक के कामकाज में कुछ न कुछ ऐसा है जिसकी पर्देदारी है। बैंक की ओर से बैलेंसशीट और डूबे हुए कर्ज (एनपीए) की सही जानकारी आरबीआई को न देने का अंदेशा भी इसके बाद गहराया था। आरबीआई की ओर से स्विफ्ट कम्प्लाइंसेस में अनदेखी के कारण यस बैंक पर एक करोड़ रुपए की पेनल्टी भी लगाई गई थी। इससे यस बैंक के एक क्यूआईपी को भी खरीदार नहीं मिले थे, यानी बड़ी झोली वाले निवेशकों का भरोसा भी डगमगाने लगा था।

ताजा हालत यह है कि राणा कपूर खुद बैंक में अपनी हिस्सेदारी बेच रहे हैं और बैंक ने जिन कंपनियों को कर्ज दे रखा है उनकी हालत पतली है। इसमें एस्सेल ग्रुप, अनिल अंबानी की एडीएजी, दीवान हाउसिंग और इंडियाबुल्स हाउसिंग प्रमुख कंपनियां हैं। एनबीएफसी संकट उभरने के बाद यस बैंक में बिकवाली में तेजी हो गई। एक ताजा रिपोर्ट यह संकेत देती है कि भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में दूसरे दौर के एनपीए की शुरुआत होने जा रही है। ऐसे में यस बैंक का भविष्य बहुत बेहतर नजर नहीं आ रहा।

पीएमसी, यस बैंक जैसी घटनाओं, मार्गन स्टेनले की ओर से एसबीआई की रेटिंग कम करना और ताजा रिपोर्ट्स बीते एक हफ्ते की इन तीनों खबरों ने पूरे बैंकिंग सेक्टर का मूड बिगाड़ दिया। ऊपर के दाम में यस बैंक के शेयर खरीदकर बैठे लोग निकलने का रास्ता तलाशेंगे, ऐसे में अगर निचले स्तर से कुछ रिकवरी देखने को मिलती भी है तो यह कितनी टिकाऊ होगी यह कहना मुश्किल है। तकनीकी चार्ट्स पर भी यस बैंक जिस स्तर पर आ चुका है उसे नो चार्ट टेरेटरी कहेंगे यानी चार्ट्स से भी संकेत मिलना बंद। अगर आप यस बैंक को सस्ता मानकार शेयर खरीदने की योजना बना रहे हैं तो सर्तक रहिए और बाजार विशेषज्ञ से पूछकर ही निर्णय लें क्योंकि 400 रुपए से 30 रुपए का सफर तय करने वाले यस बैंक की यात्रा में कई ऐसे मुकाम आए होंगे जब निवेशकों को यह सस्ता मालूम हुआ होगा, नतीजा आपके सामने है।

रिजर्व बैंक की नाक के नीचे **घटिया** बैलेंस शीट वाली कंपनियों को यस बैंक कर्ज देता रहा, उसके एनपीए में बढ़ोतरी होती रही, उनका पीसीआर रिजर्व बैंक द्वारा तय सीमा से बहुत नीचे चलता रहा और रिजर्व बैंक को हस्तक्षेप की जरूरत महसूस नहीं हुई, यह आश्चर्यजनक है।

वित्तीय वर्ष 2018-19 में यस बैंक ने पहली बार एनपीए को कारण बताते हुए घाटा दर्ज किया। एनपीए का अनुपात बढ़ता हुआ 10 प्रतिशत के पार पहुंच गया और रिजर्व बैंक का धैर्य तब टूटा जब अक्टूबर-दिसंबर 2019 के तिमाही नतीजे जारी करने में यस बैंक की ओर से देरी की जाने लगी। कई विशेषज्ञों ने अनुमान जताया कि बैंक का वास्तविक एनपीए 30 प्रतिशत से भी ऊपर पहुंच गया है। यह एक ऐसा भयानक आंकड़ा है, जिसके सच साबित होने की स्थिति में यस बैंक का भी आइएलएंडएफएस की गति को प्राप्त होना तय था।

पहले से ही सुस्ती झेल रहे भारतीय आर्थिक ढांचे के लिए पांचवें सबसे बड़े निजी बैंक का धराशायी होना एक ऐसी परिस्थिति होती जिसे संभालना सरकार और आरबीआई के लिए बहुत मुश्किल होता। इसीलिए आखिरकार रिजर्व बैंक ने एक ऐसा कदम उठाया जो अपने आप में असाधारण है। नियामक को यह भी पता है कि यदि तीन जुलाई से पहले जमाकर्ताओं में यह भरोसा नहीं बैठाया गया कि यस बैंक में जमा उनकी रकम सुरक्षित है तो उसमें जमा करीब दो लाख करोड़ रुपए से ज्यादा की रकम निकालने की होड़ मच जाएगी। यदि ऐसा हुआ तो यस बैंक ही नहीं, बल्कि पूरे भारतीय बैंकिंग तंत्र के लिए इस झटके को झेल पाना कठिन होगा। इसीलिए बिना समय गंवाए रिजर्व बैंक और सरकार ने मिलकर भारतीय स्टेट बैंक को यस बैंक की 49 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदने के लिए तैयार कर लिया है। इसके लिए एसबीआई 10 रुपए प्रति शेयर के भाव पर यस बैंक के दो रुपए फेस वैल्यू वाले शेयर खरीदेगा और इस तरह उसमें करीब 12,000 करोड़ रुपए निवेश करेगा। लेकिन यस बैंक को बचाने के लिए करीब 30,000 करोड़ रुपए की तुरंत जरूरत है। ऐसे में 18,000 करोड़ रुपए की शेष रकम की व्यवस्था करना अब एसबीआई की जिम्मेदारी है।

रिजर्व बैंक और सरकार को भरोसा है कि एसबीआई जैसे विश्वसनीय नाम के यस बैंक से जुड़ जाने से निवेशकों की तलाश आसान होगी। पर इस घोषणा के बाद एसबीआई के शेयरों में आई एक दिन में 10 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट यह समझने के लिए काफी है कि सरकार और रिजर्व बैंक के लिए अभी चैन से बैठने का समय नहीं आया है और यदि यह मान भी लिया जाए कि यस बैंक को बचा लिया जाएगा तो असल चुनौती भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने और यस बैंक के असली गुनहगारों को कानून के शिकंजे में लाने की होगी।

● **अरूण दीक्षित**

यस बैंक में भगवान जगन्नाथ के भी जमा हैं 592 करोड़

यस बैंक में आम आदमी के साथ-साथ पुरी स्थित भगवान जगन्नाथ मंदिर के भी पैसे फंस गए हैं। आरबीआई के नए आदेश के बाद भक्त और पुजारी दोनों चिंतित हैं। यस बैंक की एक शाखा में भगवान जगन्नाथ के नाम से खुले अकाउंट में 545 करोड़ रुपए जमा हैं। इस मामले पर ओडिशा के मंत्री प्रताप जेना ने कहा है कि जगन्नाथ मंदिर के 592 करोड़ रुपए यस बैंक में जमा हैं। मार्च 2029 में फिक्स डिपॉजिट की अवधि पूरी हो जाएगी। इसके बाद मंदिर प्रबंधन पैसे निकालकर किसी राष्ट्रीय बैंक में जमा कराएगा। पैसे निकालने पर सिर्फ सेविंग अकाउंट पर प्रतिबंध है। वित्तीय संकट से जूझ रहे यस बैंक के ग्राहकों के लिए रिजर्व बैंक ने यस बैंक पर जमा राशि के निकालने की सीमा तय कर दी है। अगले 30 दिनों में ग्राहक सिर्फ 50 हजार रुपए की राशि ही निकाल सकते हैं, हालांकि मेडिकल और कुछ खास स्थितियों में इस सीमा से छूट दी गई है। यहां तक कि दिन के कारोबार के दौरान यस बैंक के शेयर 50 फीसदी तक गिर गए। जिसके बाद लोगों में हलचल का माहौल है। देशभर में यस बैंक और एटीएम के बाहर लोगों की भीड़ जुट गई है। हालांकि, इस दौरान लोगों को कई तरह की परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि एक व्यक्ति पूरे महीने में सिर्फ 50 हजार रुपए ही निकाल सकता है। हालांकि, बैंक की ओर से ग्राहकों को बताया जा रहा है कि ये हालात सिर्फ 3 अप्रैल तक ही रहेंगे, बाकी हालात सुधारने की कोशिशें जारी हैं।

अवैध अब वैध

राजधानी के सुनियोजित विकास की योजना से जुड़ा भोपाल मास्टर प्लान 2031 जारी किया गया है। इस मास्टर प्लान को लगभग 35 लाख की आबादी मानकर तैयार किया गया है और इसमें ग्रीन बेल्ट को संरक्षित करने पर विशेष जोर दिया गया है। नगरीय विकास मंत्री जयवर्धन सिंह ने बताया कि वर्तमान में शहर की आबादी 20 लाख के आसपास है। माना जा रहा है कि वर्ष 2031 तक शहर की आबादी पैंतीस लाख के आसपास हो जाएगी। इस स्थिति में शहर में कौन सी सुविधाएं होनी चाहिए और शहर का विकास कैसा हो, यह सब योजना इस मास्टर प्लान में दर्शायी गई हैं। राजधानी के लालघाटी क्षेत्र में बड़े तालाब से सटी हलालपुर की ओर जाने वाली सड़क का लैंडयूज बदल गया है। इसे अब रेसीडेंशियल माना जाएगा। गत दिनों जारी हुए भोपाल के मास्टर प्लान-2031 में इस सड़क और खानूगांव को रेसीडेंशियल क्षेत्र दिखाया गया है। यानी अब यहां मकान निर्माण की अनुमति मिल सकेगी।

उल्लेखनीय है कि इन मैरिज गार्डन्स को अब तक बड़े तालाब में अतिक्रमण मानते हुए नगर निगम कई नोटिस जारी करता रहा है। जो मास्टर प्लान अभी लागू है, उसमें इन गार्डन्स को लेक फ्रंट पीएसपी (सार्वजनिक-अर्ध सार्वजनिक) लैंडयूज में दिखाया गया है। इसलिए इन्हें अब तक वैध नहीं किया गया। जिला प्रशासन भी हर साल इन्हें नोटिस जारी कर बंद करने के आदेश भी जारी कर देता है, लेकिन इन पर अब तक ऐसी कोई कार्रवाई नहीं हुई। दूसरी तरफ नीलबड़ और रातीबड़ को अभी भी कृषि क्षेत्र ही बताया गया है। यानी यहां बनी अवैध कॉलोनियों के वैध होने का रास्ता नहीं खुला है।

जिला योजना समिति में मिले सुझाव के आधार पर तालाब की हदबंदी के लिए चारों तरफ सड़क प्रस्तावित की जा रही है। कहा जा रहा है कि तालाब के बड़े हिस्से में एप्रोच नहीं होने से अवैध कब्जे हो रहे हैं। सीहोर रोड पर तालाब के भीतर कच्चे-पक्के मकान बन गए हैं। सड़क बन जाने से इस पर रोक लगने का दावा किया जा रहा है। कहा जा रहा है कि वीआईपी रोड बन जाने से इस क्षेत्र में तालाब पर अतिक्रमण नहीं हो रहे हैं। विवादित रिटेनिंग वॉल बन जाने के बाद वॉल के भीतर के हिस्से में भी कोई नया निर्माण नहीं हुआ है। मैरिज गार्डन संचालकों ने मास्टर प्लान तैयार होते समय ही सुझाव दिया था कि मैरिज गार्डन शहर की जरूरत है और जब रेसीडेंशियल में अनुमति दी जा रही है तो पीएसपी में भी अनुमति दी जाना चाहिए। जीआईएस बेस्ड नक्शे में भी यहां **मैरिज गार्डन** दर्शाए गए हैं। इसी नक्शे के आधार पर खानूगांव को भी रेसीडेंशियल कर दिया गया है। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार इन मैरिज गार्डनों को दोबारा अनुमति लेनी होगी।

भोपाल मास्टर प्लान के लिए तय 1016 वर्ग किमी के प्लानिंग एरिया में पांच जगहों पर रसूखदारों का कब्जा है। टीएंडसीपी आने वाले दिनों में प्लान का ड्राफ्ट जारी करने जा रहा है, लेकिन जिस तरह से इसके प्रावधान बाहर आ रहे हैं, उससे ये रसूख के दबाव में तैयार प्लान लग रहा है। यदि इस दबाव को दरकिनार करते हुए प्लान बने तो फिर शहर का हित सधेगा, नहीं तो जिस तरह अब तक रसूखदारों को लाभ पहुंचाने प्लान बनते आए हैं, ये भी उसी श्रेणी में शामिल होगा। बड़े तालाब के कैचमेंट एरिया में 230 हेक्टेयर जमीन बड़े अफसरों और राजनेताओं ने खरीदी हुई है। सस्ती दर में ये जमीनें खरीदकर उम्मीद की जा रही है कि मास्टर प्लान में कैचमेंट में गतिविधियों को अनुमति दी जाए, ताकि यहां पर व्यवसायिक व कॉलोनी विकसित करने के काम शुरू किए जा सकें। हालांकि फिलहाल कैचमेंट को लो-डेंसिटी एरिया रखने की बात हो रही है। फिलहाल कैचमेंट नीलबड़, रातीबड़, प्रेमपुरा, कोलूखेड़ी, बरखेड़ी खुर्द, गोल, बिशनखेड़ी में बड़े रसूखदारों के बड़े प्लॉट हैं और मनोरंजन केंद्र के तौर पर अनुमतियां ली हुई हैं। इन क्षेत्रों में सस्तीदर में प्लॉट उपलब्ध होने के जगह-जगह लगे बोर्ड आसानी से देखे जा सकते हैं। मास्टर प्लान से उम्मीद की जा रही थी कि खानूगांव में अवैध निर्माण और रिटेनिंग वॉल जैसे निर्माणों को हटाने का प्रावधान होगा, लेकिन ऐसा नहीं किया जा रहा। इसके उलट, खानूगांव में आवासीय क्षेत्र बढ़ाने की कवायद है। यहां तालाब के एफटीएल में बने मैरिज गार्डन, कॉलेज व अन्य निर्माण में रसूखदारों की बड़ी भूमिका है, इसलिए ही यहां आवासीय के साथ पीएसपी बढ़ाने की कवायद हो रहा है, ताकि ये वैध की जा सके।

मंत्री जयवर्धन सिंह ने बताया कि शहर में स्मार्ट सिटी क्षेत्र में निर्माण कार्य के कारण कई पेड़ काटे गए हैं। इस प्लान में सिर्फ स्मार्ट सिटी क्षेत्र में ही 50 हजार पेड़ लगाने का प्रावधान किया गया है। मास्टर प्लान का प्रारूप आम लोगों के लिए विभाग की वेबसाइट पर भी उपलब्ध कराया गया है। अब इस पर आम लोगों ने दावे और आपत्तियां दर्ज कराई हैं। एक निर्धारित प्रक्रिया को पूर्ण करने के बाद इसे आवश्यक संशोधनों के साथ लागू करने पर विचार किया जाएगा। लेकिन मास्टर प्लान के अनुमोदन के दिन जिस तरह मंत्री आरिफ अकील और विधायक आरिफ मसूद ने चेतावनी दी कि सरकार मास्टर प्लान को लागू करके दिखाए उसी दिन से यह माना जा रहा है कि इस बार भी मास्टर प्लान अधर में लटक सकता है।

● **अरविंद नारद**

रोड किनारे फ्री पार्किंग देने का सुझाव

पार्किंग की समस्या से निपटने के लिए विस्तृत प्लान बनाने का सुझाव दिया गया है। भोपाल में 1971 से अब तक आबादी 4.5 गुना बढ़ी, जबकि वाहनों की संख्या 87 गुना बढ़ गई है। वाहनों की इस बढ़ती संख्या से बिगड़ते ट्रैफिक की एक बड़ी वजह पिछले मास्टर प्लान में प्रस्तावित ज्यादातर सड़कों का निर्माण नहीं होना थी। इसके साथ ही शहर में पार्किंग स्थल भी डेवलप नहीं हो पाए। नतीजा ये हुआ कि 10 नंबर जैसे बाजारों में आने वाले 96 फीसदी वाहनों को पार्किंग के लिए जगह नहीं मिलती। इस समस्या से निपटने के लिए नए ड्राफ्ट में 795.61 किमी सड़कें प्रस्तावित की गईं हैं। कहा जा रहा है कि इन सड़कों के निर्माण के लिए जहां एक तरफ टीडीआर (ट्रांसफरेबल डेवलपमेंट राइट्स) का उपयोग किया जाएगा। वहीं प्रीमियम एफएआर से मिलने वाली राशि से ये सड़कें बनाई जाएंगी। मास्टर प्लान के ड्राफ्ट में अनुमान लगाया गया है कि प्रीमियम एफएआर से सरकार को 8572 करोड़ रुपए मिलेंगे। टीडीआर से 1057.80 करोड़ की बचत होगी। इस तरह से 9629.80 करोड़ रुपए विकास कार्य के लिए लगाए जा सकेंगे। तर्क दिया जा रहा है कि पिछला प्लान फिजिकल सर्वे के आधार पर बना था इसलिए नक्शे पर ले आउट और मौके की स्थिति में अंतर आ गया। जबकि इस बार जीआईएस बेस्ड मैप का इस्तेमाल किया गया है, इसलिए बेहतर ले आउट बने हैं।

झांसेबाजों पर नकेल

सेबी के पास आई 6800 शिकायतें

एडवाइजरी कंपनियों की ठगी की जांच कर रही क्राइम ब्रांच के सामने सेबी की लापरवाही भी आई है। नियमानुसार किसी भी कंपनी को काम करना है तो एडवाइजरी कंपनी का रजिस्ट्रेशन कराना होता है। बाहरी लोग ठगाते हैं तो ऑनलाइन सेबी को ही शिकायत करते हैं लेकिन सेबी सीधे कोई कार्रवाई नहीं करती, जिसके कारण ठगी की शिकायतें लगातार बढ़ती जाती है। एएसपी राजेश दंडोतिया के मुताबिक, सेबी से पता चला कि उन्हें इंदौर की कंपनियों के खिलाफ 6800 ठगी की शिकायतें मिली है। यह बात सामने आई कि देशभर में मिलने वाली सेबी की कुल शिकायतों में से करीब 85 प्रतिशत इंदौर की कंपनियों की है। करीब 20 कंपनियां ऐसी थीं जिनके खिलाफ 150 से 200 शिकायतें थी। इन लोगों के पैसे निवेश के नाम पर ठगे गए और बाद में कंपनी ने अपना ऑफिस भी बंद कर दिया। सेबी ने इतनी शिकायतों में 20 कंपनियों को ही ब्लैक लिस्ट किया। विजयनगर इलाके में रहने वाले अग्रवाल दंपती की कंपनी की अलग ठगी सामने आई है। पुलिस ने पिछले दिनों इनकी कंपनी पर छापा मारा तो संचालक दंपती फरार हो गए थे। छानबीन करने पर पता चला कि पहले अग्रवाल दंपती की कंपनी अहमदाबाद में काम करती थी। वहां लोगों से लाखों की ठगी करने पर ब्लैक लिस्टेड किया तो इंदौर आकर दूसरी कंपनी के नाम से कारोबार शुरू कर दिया। करीब 70 लाख रुपए इनके नाम से जमा हुए थे जो सभी धोखाधड़ी कर जमा किए गए थे।

आर्थिक राजधानी कहे जाने वाला इंदौर शहर ठगी करने वाली एडवाइजरी कंपनियों का गढ़ बनता जा रहा है। पुलिस के पास आ रही शिकायतों से पता चला कि शहर में कई कंपनियां सेबी से पंजीयन के बिना अवैध रूप से चल रही है, कई मामले ऐसे भी हैं जिसमें एक कंपनी का पंजीयन करने के बाद संचालक ने दो अन्य कंपनियां शुरू कर दी। इन कंपनियों के द्वारा शहर के लोगों के बजाय बाहरी राज्यों के लोगों के नंबर हासिल कर उन्हें ज्यादा निशाना बनाया जा रहा है ताकि वे राशि वापस लेने के लिए ज्यादा शिकायत न कर सकें।

पुलिस ने पहले एडवाइजरी कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई शुरू की तो कई कंपनियों ने यहां से अपना कामकाज समेटकर अहमदाबाद शिफ्ट कर लिया लेकिन पिछले दो महीने से फिर शहर में सक्रिय हो गई है। पुलिस की हेल्पलाइन में आई शिकायतों में अभी तक करीब 235 कंपनियों के नाम से ठगी की शिकायतें आ गई हैं जबकि सेबी से **क्राइम ब्रांच** ने जानकारी ली तो पता चला कि वहां 158 कंपनियां ही पंजीकृत है। सभी कंपनियों ने शेयर बाजार में निवेश करने की सलाह देने के लिए सेबी में रजिस्ट्रेशन कराया है लेकिन यह लोगों से लाखों की राशि निवेश के नाम पर अपने व्यक्तिगत खाते में डलवाते हैं और फिर हाथ खड़े कर देते है। अभी तक की जांच से यह बात भी सामने आई है कि इन कंपनियों ने अपने निशाने पर दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, नागालैंड, त्रिपुरा आदि राज्यों के लोगों को ले रखा है। कंपनी की ओर से युवतियों को निवेश का काम सौंपा जाता है जो बातों में उलझाकर व **राशि दोगुना** करने का झांसा देकर राशि खाते में डलवाती हैं। यह बात भी सामने आई है कि कंपनियां रिटायर्ड लोगों को ज्यादा निशाना बनाती हैं। बाहरी लोग व रिटायर्ड लोगों को निशाना बनाने का उद्देश्य होता है कि वे शिकायत नहीं करते और पैसों के लिए चक्कर नहीं लगा पाते हैं।

एडवाइजरी कंपनी के फरार संचालकों से सेटलमेंट करने के लिए शिकायतकर्ता निवेशकों को धमकी देने वाले छह बिचौलियों को क्राइम ब्रांच ने चिन्हित किया है। ये लोग जहां कंपनियों से निवेशकों को रुपए दिलाने का झांसा देते थे, वहीं संचालकों से भी रुपए लेते थे। इधर, सेबी ने 22 ब्लैक लिस्टेड एडवाइजरी कंपनियों की सूची क्राइम ब्रांच को सौंपी है। क्राइम ब्रांच एएसपी राजेश दंडोतिया ने बताया कि शहर में 100 से ज्यादा फर्जी एडवाइजरी कंपनियां हैं।

इनमें से अधिकांश की हम निगरानी कर रहे हैं। जिन भी निवेशकों ने सेबी के पोर्टल पर शिकायतें की हैं, उन सभी पीड़ितों की जानकारी ली जा रही है। सूत्रों की मानें तो विजय नगर में संचालित एडवाइजरी कंपनियों के निवेशकों को धमकाने में सुनील राठौर, विवेक झा, संजय वैद, प्रशांत मिश्र और दो अन्य लोग हैं। इन्होंने केस दर्ज होने या सेबी पर शिकायत मिलने के बाद निवेशकों को धमकाया है। इन्हें भी जल्द पूछताछ के लिए बुलाया जाएगा। हालांकि क्राइम ब्रांच को कोई लिखित शिकायत इनके खिलाफ नहीं मिली है, लेकिन शहर से बाहर के कई निवेशकों ने इनके नामों का जिक्र किया है।

इधर, ब्लैक लिस्टेड कंपनियों की शिकायतों की जांच के लिए एएसपी राजेश दंडोतिया को नोडल अधिकारी बनाया गया है। एएसपी ने बताया कि एडवाइजरी कंपनियों के खिलाफ अन्य प्रदेशों के कई पीड़ित लगातार शिकायत करने आ रहे हैं। सर्वाधिक पीड़ित और बड़ी राशि से घाटा खाने वालों में गुजरात के लोग हैं। सेबी से हमें जिन 22 ब्लैक लिस्टेड कंपनियों की सूची मिली है, उनमें कैपिटल टू फाइनेंशियल सर्विस, झोडी रिसर्च, हाईब्रो मार्केट रिसर्च, ट्रेड ब्रिज रिसर्च, प्रीमियम रिसर्च फाइनेंशियल सर्विस, प्रीमियम कैपिटल सर्विस, एमआई रिसर्च, स्टार इंडिया मार्केट रिसर्च, कैपिटल हीड फाइनेंशियल रिसर्च, कोर इनवेस्टमेंट रिसर्च, कोर ग्रुप, स्मार्ट ट्रेड्स, थ्री एम टीम रिसर्च, रिसर्च इन्फोटेक, ट्रेड इंडिया रिसर्च, एपिक रिसर्च, मनी क्लासिक, रिपल्स एडवाइजरी प्रालि, मनी डिजायर, द यूकॉम फाइनेंस रिसर्च, प्रॉफिट गुरु और इन्वेस्ट मार्ट लिमिटेड कंपनियां शामिल हैं। इस नाम की कंपनियों को लेकर क्राइम ब्रांच एडवाइजरी भी जारी कर रही है कि इन नामों से कोई भी निवेश एडवाइज न ले। ये सभी ब्लैक लिस्टेड हैं।

इधर, वेलवेट पेंसिल के नाम पर लोगों से करोड़ों की धोखाधड़ी करने वाले आरोपी को पुलिस ने गतदिनों गिरफ्तार किया है। उसे 12 मार्च तक रिमांड पर लिया है। आरोपी का नाम रवदीप सिंह निवासी अहमदाबाद है। पुलिस को सूचना मिली थी कि वह अहमदाबाद से जमानत करवाने के लिए इंदौर आया है, तभी उसे पकड़ लिया। उसके खिलाफ शंकर बाग छावनी निवासी ऋषभ सिलावट व अन्य लोगों ने धोखाधड़ी की शिकायत की थी। रवदीप ने पिछले तीन माह में कई लोगों से वेलवेट कोटिंग पेंसिल बनाने के नाम पर व्यापार देने के नाम पर मोटी रकम ली।

● **विशाल गर्ग**

रेत संकट

इस माह के समाप्त होते ही मध्यप्रदेश में रेत का संकट बढ़ना तय है। इसकी बड़ी वजह है 31 मार्च को प्रदेश की करीब एक सैकड़ा रेत खदानों का बंद हो जाना। इन खदानों का अनुबंध 31 मार्च को समाप्त हो रहा है। अनुबंध समाप्त होने वाली खदानों में से पंचायतों की 70 और खनिज निगम की 30 खदानें शामिल हैं। इधर, सरकार इन बंद होने वाली रेत खदानों के मामले में उहापोह की स्थिति में है, जिसके चलते वह कोई फैसला नहीं ले पा रही है। गौरतलब है कि अभी पंचायतों की **275 खदानों** में से मात्र **70 खदानें ही चालू हैं,** इसकी वजह शेष खदानों के माइनिंग प्लान और पर्यावरण स्वीकृति नहीं मिल पाना है। दरअसल, पंचायतों की खदान से रेत उत्खनन के लिए माइनिंग प्लान और पर्यावरण स्वीकृति का भी समय समाप्त हो रहा है। ऐसे में खनिज विभाग पंचायतों की चालू रेत खदानों के दस्तावेजों की भी जांच कर यह पता कर रहा है कि किन खदानों की माइनिंग प्लान और पर्यावरण स्वीकृति 31 मार्च के बाद तक हैं, जिससे उन्हें आगे तक चालू रखा जा सके। खनिज विभाग के अफसरों का दावा है कि पंचायत की **अन्य 205 खदानों के लंबित माइनिंग प्लान** और पर्यावरणीय स्वीकृति 31 मार्च से पहले करवाने का प्रयास किया जा रहा है। जिससे बंद होने वाली पंचायतों की खदान के साथ दूसरी पंचायत की खदानें शुरू की जा सकें।

नई खनिज नीति में **43 में से 41 जिलों में रेत** के नए ठेके हुए हैं। उज्जैन और आगर-मालवा जिले की **रेत खदानों के लिए ठेकेदार** आगे नहीं आ रहे हैं। इसी तरह से होशंगाबाद, मंडला और अशोकनगर जिले के ठेके शासन स्तर पर विचाराधीन हैं। इधर विभाग ने कटनी, देवास, हरदा, बैतूल, भिंड, बालाघाट, पन्ना और जबलपुर जिले की करीब 100 खदानों के माइनिंग प्लान स्वीकृत कर दिए हैं। इसके साथ ही विभाग ने कलेक्टरों को निर्देश दिए हैं कि जिन जिलों की खदानें ठेकेदारों को आवंटित की जा रही हैं, उन जिलों की खदानों को पंचायतों से वापस लेकर ठेकेदारों के नाम ट्रांसफर कर दिया जाए।

दो माह में महज चार जिलों की रेत खदानों का ही खनिज निगम ठेकेदारों से अनुबंध कर सका है। इनमें शिवपुरी, सीहोर, भिंड और कटनी शामिल है। यह खदानें पंचायतों से लेकर ठेकेदारों को दे दी गई हैं। इन खदानों का माइनिंग प्लान और पर्यावरण की स्वीकृति पहले से है। इनकी ठेकेदारों के जरिए ईटीपी जनरेट कर रेत की बिक्री भी शुरू कर दी गई है। खनिज निगम ने विभाग से पंचायतों के जरिए संचालित खदानों के रेत उत्खनन की जानकारी मांगी है। क्योंकि इन खदानों से उतनी ही रेत निकालने के लिए ठेकेदारों को अनुमति दी जाएगी, जितनी खदान के वार्षिक माइनिंग प्लान में स्वीकृत मात्रा है। जिन रेत खदानों के माइनिंग प्लान में इस वर्ष रेत निकालने की मात्रा समाप्त हो गई है उन ठेकेदारों को रेत निकालने की अनुमति नहीं दी जाएगी। खनिज निगम एक ठेकेदार के मात्र दस कर्मचारियों को ही ओटीपी जनरेट करने की अनुमति देगा। इसी तरह से ठेकेदार एक ओटीपी जनरेट कर मात्र दस खदानों की ही रेत बेच सकेगा। इसके अलावा रेत चोरी रोकने के लिए ठेकेदार नाके लगा सकेंगे। ठेकेदार अवैध रेत परिवहन करने वाले वाहनों की सूचना पुलिस और खनिज अधिकारियों को देंगे, वे अपने स्तर पर कोई कार्रवाई नहीं कर सकेंगे। गौरतलब है कि अवैध उत्खनन के मामले में मध्यप्रदेश देश के दूसरे नंबर पर है। पहले नंबर पर उत्तरप्रदेश है। जबकि अवैध उत्खनन पर कार्रवाई करने और वसूली करने में मामले में मप्र देश में पहले नंबर पर है। गौड़ खनिज में सबसे ज्यादा रेत के अवैध उत्खनन के मामले दर्ज किए गए हैं। रेत उत्खनन को रोकने के लिए खनिज विभाग के पास न तो अमला है और न ही कोई अलग से सुरक्षा व्यवस्था है। खनिज विभाग में मैदानी अमले की भारी कमी है। प्रदेश में बढ़ रहे खनन कारोबार और अवैध उत्खनन को लेकर विभाग ने अफसर से लेकर सुरक्षाकर्मियों तक के करीब 500 पद सरकार से मांगे हैं। हालांकि खनन के मामले बढ़ने के पीछे विभाग के आला अधिकारी वर्ष 2018 की रेत नीति को मान रहे हैं। अधिकारियों का कहना है कि पंचायतों को रेत खदान देने से अवैध उत्खनन के मामले प्रदेश में बढ़े हैं। अब नई रेत नीति 2019 पूरी तरह से मूर्तरूप ले लेगी वैसे ही उत्खनन के मामले रुकेंगे। यह खुलासा भारतीय खान ब्यूरो (आईबीएम) की ताजा रिपोर्ट से हुआ है।

भारतीय खान ब्यूरो के अनुसार मध्यप्रदेश में तीन साल में लगातार अवैध उत्खनन के मामले बढ़े हैं। इसमें सबसे ज्यादा उत्खनन के मामले रेत और गिट्टी के हैं। प्रदेश में प्रतिवर्ष करीब 1300 मामले बढ़ रहे हैं। कई जिले ऐसे हैं जहां विभाग सिर्फ खनिज इंस्पेक्टरों के भरोसे ही अवैध उत्खनन रोक रहा है। खनन माफिया से मुकाबला करने के लिए विभाग ने इन अधिकारियों को खटारा गाड़ी दे रखी है। इन वाहनों पर जब तक वे दो होमगार्ड के जवानों को लेकर जाते हैं तब तक तो खनन माफिया मौके से भाग जाते हैं। इसके चलते अक्सर यह देखने में आता है अधिकारी बड़ी कार्रवाई से पीछे हटने लगते हैं। क्योंकि कई बार खनिज अधिकारियों पर भी खनन माफिया के लोग हमला कर चुके हैं।

● **राजेश बोरकर**

अवैध उत्खनन की सबसे ज्यादा वसूली प्रदेश में

अवैध उत्खनन के मामले में सबसे ज्यादा 1600 करोड़ रुपए की वसूली मप्र में की गई है। जबकि सबसे ज्यादा अवैध उत्खनन के मामले उप्र में दर्ज किए गए हैं। वसूली के मामले में महाराष्ट्र दूसरे नंबर पर था, जहां 700 करोड़ की वसूली की गई है। वहीं अवैध उत्खनन और वसूली के मामले में तीसरे नंबर पर उप्र है। प्रदेश में अवैध उत्खनन से न्यायालयीन मामले भी बढ़ रहे हैं। पिछले साल जहां न्यायालयीन मामलों की संख्या 25 हजार के करीब थी, वहीं अब यह बढ़कर 26 हजार से पास पहुंच गई है। विभाग के अधिकारियों और पुलिस विभाग की संयुक्त कार्रवाई में तीन साल के अंदर लगभग ढ़ाई हजार वाहनों को जब्त किया गया है। आईबीएम की रिपोर्ट के अनुसार पूरे प्रदेश में अवैध उत्खनन पिछले साल की तुलना में कम हुआ है। गत वर्ष जहां रेत सहित अन्य गौड़ खनिजों के अवैध उत्खनन के मामले पूरे देश में 1,16,198 दर्ज किए गए थे, वहीं अब ये घटकर 1,15,492 हो गए हैं, इसमें करीब 700 मामलों की कमी आई है। जबकि प्रदेश में अवैध उत्खनन के मामले वर्ष 2018 में 15,205 थे, जो बढ़कर 2019 में 16,405 हो गए हैं।

महामारी बना कोरोना

दुनिया में पिछले कुछ दशकों में कई खतरनाक वायरस के हमले हुए। इनसे बड़े पैमाने पर लोगों की मौत भी हुई। पिछले दो-तीन दशकों में इबोला, सार्स और स्वाइन फ्लू को सबसे किलर वायरस माना गया, लेकिन माना जा रहा है कि जिस तरह कोरोना वायरस पूरी दुनिया में फैल रहा है और बड़े पैमाने पर चपेट में ले रहा है, उसके बाद कहा जा रहा है कि ये अब तक का सबसे खतरनाक वायरस है। कोरोनावायरस को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने महामारी घोषित कर दिया है। भारत ने कोरोनावायरस को लेकर नए निर्देश जारी कर दिए हैं। 13 मार्च को शाम 5.30 बजे (12 जीएमटी) से अगले 35 दिन के लिए दुनिया के किसी भी देश के हर व्यक्ति के वीजा रद्द कर दिए गए हैं। सिर्फ डिप्लोमैटिक और एम्प्लॉयमेंट वीजा को छूट दी गई है। सरकार ने साफतौर पर कहा है कि अगर जरूरी न हो तो भारतीयों को विदेशों में जाने से बचना चाहिए। उधर, मप्र सरकार ने 12वीं तक स्कूल तथा कॉलेज अनिश्चितकाल के लिए बंद कर दिए हैं।

कोरोनावायरस सार्स से भी ज्यादा खतरनाक बनकर उभरा है। सार्स वर्ष 2002 से 2003 के बीच चीन से फैला था। उसकी वजह से करीब 1500 से 2000 लोगों की जान गई थी। ये **बीमारी भी चीन** से फैली थी। माना गया था कि वहां ये वायरस किसी जानवर या बर्ड से मनुष्यों में पहुंचा और फिर हवा के जरिए फैलने लगा। वहीं 2014 में जब दुनियाभर में **इबोला** महामारी ने दस्तक दी तो इसने 26800 लोगों को प्रभावित किया, जिसमें 40 फीसदी लोग मारे गए लेकिन उसका असर भौगोलिक तौर पर सीमित था। ये वायरस आमतौर पर पश्चिमी अफ्रीका के तीन देशों तक ज्यादा फैला रहा। लेकिन कोरोना विश्वव्यापी हो गया है।

चीन के बाहर कोरोना से मौत का आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है। इटली और ईरान में तेजी से संक्रमण फैल रहा है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक दुनिया के 124 देश कोरोना की चपेट में हैं और कुल 1,26,367 लोग कोरोना से संक्रमित हैं। दुनियाभर में अब तक 4,633 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि कुल 68,304 लोगों को इलाज के बाद छुट्टी दी जा चुकी है। कोरोनावायरस के प्रकोप को देखते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अगले एक महीने के लिए यूरोप से अमेरिका की सभी यात्राओं पर पाबंदी लगा दी है। हालांकि यूके को इस रोक से अलग रखा गया है। अमेरिका में कोरोनावायरस से अब तक 38 लोगों की मौत हो गई है जबकि 1300 लोग इससे संक्रमित बताए जा रहे हैं।

भारत में कोरोना के 91 मामले हो गए हैं। केंद्र सरकार के दफ्तरों में 31 मार्च तक बायोमीट्रिक अटेंडेंस पर रोक लगा दी गई है। देश के 30 एयरपोर्ट्स पर विदेश से आने वाले यात्रियों की स्क्रीनिंग की जा रही है। कोरोनावायरस को डब्ल्यूएचओ ने महामारी घोषित कर दिया है। संगठन ने कहा कि समाज और अर्थव्यवस्था पर पड़ रहे कोरोना के प्रभाव को कम करने के लिए हम कई सहयोगियों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। भारत ने 31 मार्च तक सभी विदेशी शिप की एंट्री बैन कर दी है।

लंदन के स्कूल ऑफ हाइजीन और ट्रॉपिकल मेडिसिन ने कोरोनावायरस के फैलने का एक मैप तैयार किया है। ये मैप बताता है कि कोरोनावायरस कहीं ज्यादा देशों में फैल चुका है। **इबोला, सार्स और स्वाइन फ्लू जो पिछले तीन दशक** के सबसे खतरनाक वायरस माने गए, वो भी इतने देशों तक नहीं फैल पाए थे। कोरोनावायरस की शुरुआत चीन के शहर वुहान में दिसंबर में हुई। हालांकि उस समय चीन ने उससे संबंधित खबरों को दबाने या छिपाने की कोशिश की लेकिन जनवरी आते-आते ये बेकाबू हो चुका था। जनवरी में इसकी पहचान कोरोनावायरस फैमिली के नए घातक सदस्य के तौर पर की गई। साथ ही ये खबरें भी आने लगीं कि इसके शिकार बड़े पैमाने पर बढ़ते जा रहे हैं। उसी गति से मरने वालों की तादाद भी बढ़ रही है। चीन द्वारा इस खबर तो दबाने-छिपाने की वजह से ये वायरस दुनियाभर में फैल चुका है, क्योंकि दिसंबर और जनवरी में बड़े पैमाने पर जो लोग चीन आए और वहां से दुनिया के अन्य देशों में गए, वहां ये वायरस भी फैल गया। शोधकर्ताओं का कहना है कि इसमें सबसे चिंताजनक बात यह है कि जिन लोगों को बीमारी हो रही है, उनमें इसके संकेत काफी देर से प्रगट होते हैं, उन्हें खुद नहीं मालूम होता कि वो ये बीमारी साथ लेकर चल रहे हैं।

कोरोनावायरस के खतरे को लेकर भारत में चिंता बढ़ रही है। सरकार लगातार संक्रमण से लड़ने के लिए कदम उठा रही है। केंद्र ने अपने सभी दफ्तरों में 31 मार्च तक बायोमेट्रिक अटेंडेंस पर रोक लगा दी है। इसके अलावा वाघा बॉर्डर पर रिट्रीट सेरेमनी आम लोगों के लिए बंद कर दी गई है। विदेश से आने वाले यात्रियों की स्क्रीनिंग अब 21 की बजाय 30 एयरपोर्ट पर की जाएगी। इस बीच पर्यटन मंत्रालय ने कहा है कि वह फरवरी महीने में देश में आए 450 ईरानी नागरिकों का पता, ठिकाना लगा रहा है। मंत्रालय यह कदम इसलिए उठा रहा है, क्योंकि ईरान में कोरोनावायरस तेजी से लोगों को अपनी चपेट में ले रहा है।

● **बृजेश साहू**

कैसे फैल सकता है कोरोना वायरस?

कोरोना के संक्रमण फैलने की चार वजह हो सकती है। आप संक्रमित व्यक्ति के पास कितनी देर रहे? आप उसके कितने पास गए? क्या उस व्यक्ति के छींकने या खांसने की वजह से आपको छींटे पड़े? आपने अपने चेहरे को कितनी बार छुआ? आपके उम्र और स्वास्थ्य की वजह से भी कोरोना के संक्रमण का असर पड़ता है। कोरोना का वायरस कहीं भी पहुंच सकता है, जब तक इसकी राह में कोई बाधा नहीं आए। जब हम छींकते हैं या खांसते हैं तो हमारे मुंह से कुछ बूंदें गिरती हैं। अगर इनकी राह में कुछ नहीं आए तो ये सीधे जमीन पर पहुंच सकती हैं। कोरोना का वायरस आपके शरीर में तभी पहुंच सकता है जब यह आपके आंख, नाक या मुंह में पहुंचे। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि कोरोना के संक्रमण की प्रमुख वजह खांसना या छींकना ही है। किसी व्यक्ति के बहुत करीब जाकर बात करने या साथ खाना खाने से भी कोरोना का वायरस फैल सकता है।

मप्र में आएगा पानीदार कानून

मध्यप्रदेश सरकार प्रदेश की आवाम के लिए राइट-टू-वाटर एक्ट लाने जा रही है। हर कंठ को साफ पानी मुहैया कराने की दिशा में बड़े स्तर पर मंथन चल रहा है। इस मंथन में जल संसाधन मंत्री और ग्रामीण विकास मंत्री, अपनी-अपनी टीम को लेकर एक साथ हैं। वहीं, पानी का कानून लाने के लिए कई कार्यशालाएं आयोजित की जा चुकी हैं। पिछले दिनों हुए एक सम्मेलन में तो देशभर के जलविद् और विषय विशेषज्ञों ने सरकार को सुझाव दिए। सरकार ने इनके अनुभवों और विचारों को एकत्रित कर पानीदार कानून लाने की ओर तेजी से कदम बढ़ाए हैं। मुख्यमंत्री कमलनाथ खुद इसकी मॉनीटरिंग कर रहे हैं। मुख्यमंत्री प्रदेश के जलसंकट से स्थायी तौर पर निपटना चाहते हैं। वहीं, समाज को पानी पर अधिकार देना चाहते हैं। मध्यप्रदेश सरकार का लक्ष्य अपने नागरिकों को उनके घर पर ही प्रतिदिन 55 लीटर पानी उपलब्ध कराना है।

दरअसल, भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 में प्रत्येक नागरिक को प्रदूषणमुक्त पानी उपलब्ध कराने का प्रावधान है। राष्ट्रीय जल नीति 2012 के पेरा 2.2 के अनुसार राज्यों द्वारा पानी के प्रबंध को सार्वजनिक धरोहर के सिद्धांत के आधार पर करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। संयुक्त **राष्ट्रसंघ और मानवाधिकार काउंसिल** ने भी पेयजल को मानवाधिकार के रूप में मान्यता देने पैरवी की है। इन सारे प्रावधानों का मकसद बिना भेदभाव के हर नागरिक को उसकी दैनिक जरूरत का शुद्ध पानी, उपलब्ध कराना है।

प्रदेश के जलसंकट का जायजा लेने से पता चलता है कि गर्मी आते-आते अनेक इलाकों में पेयजल संकट गहरा जाता है। वह आपाधापी का दौर होता है। उस दौर में सरकार और समाज पानी की कमी से जूझते हैं। सभी जगह पानी की कमी का अहसास होता है। बुंदेलखंड, मालवा, ग्वालियर-चंबल और दक्षिण मध्यप्रदेश के अनेक स्थानों में पानी की कमी सबसे अधिक होती है। यह तकलीफ गहरी खदानों वाले इलाकों में भी देखी जाती है। सरकार को एहसास हो गया है कि जलसंकट का संबंध सूखे दिनों से है। सूखे दिनों की जलसंकट की यह हकीकत, राज्य सरकार के मौजूदा चिंतन में नजर आती है। उसे अच्छी तरह समझ में आ रहा है कि प्रदेश का जलसंकट, पूरी तरह से बरसात की कमी के कारण नहीं है। हकीकत में जलसंकट की शुरुआत बरसात के बाद होती है। अगली बरसात तक चलती है। यानी जलसंकट का समय दो बरसात के बीच के सूखे 8 महीनों में होता है। इन्हीं 8 महीनों में नदियों, जलाशयों, कुओं, हैंडपंप से पानी खींचा जाता है। अर्थात् भूजल दोहन प्रारंभ होता है, भूजल स्तर नीचे गिरने लगता है। भूजल स्तर के नीचे गिरने के कारण नदी-नाले, कुएं, तालाब और नलकूप सूखने लगते हैं। जाहिर है, सूखे दिनों के लिए अपनाई मौजूदा रणनीति कारगर नहीं है। उस पर संकट के बादल गहराने लगे हैं। उससे भी बड़ा संदेश है, उस स्थिति को हासिल किया जाए जिसको हासिल करने के बाद **जलसंकट** को पनपने का अवसर ही न मिले। यही कारण है, प्रदेश के दो बड़े विभाग एक मंच पर आकर उस रोडमैप को क्रियान्वित करना चाहते हैं जिस पर चलकर जलस्त्रोतों के संकट का स्थायी समाधान मिल सकता है। इसके लिए पीएचई के संकल्प और ग्रामीण विकास विभाग की मौजूदा योजनाओं को देखना और समझना होगा।

● **नवीन रघुवंशी**

40 नदियों को 12 महीने जिंदा रखेंगे

ग्रामीण विकास विभाग प्रदेश की लगभग 100 किलोमीटर बहने वाली 40 नदियों पर काम कर रहा है। इस काम का लक्ष्य है सूखे महीनों में इन 40 नदियों के प्रवाह को बढ़ाना। उनके पुराने बारह मासी चरित्र को बहाल करना। इसे हासिल करने के लिए जिस गाइडलाइन पर काम किया जा रहा है, उसके तहत नदी कछार की सीमा से लेकर मुख्य नदी के पास तक, परम्परागत तालाबों की तर्ज पर गहरे और बड़े आकार के तालाबों का निर्माण किया जाना है। इसका उद्देश्य अधिक से अधिक वर्षाजल का संचय और गहराई के कारण भूजल रीचार्ज करना है। भूजल दोहन के कारण नीचे उतरने वाली वाटर टेबिल की गिरावट को यथासंभव कम करना भी मकसद है। जाहिर है, वाटर टेबिल की गिरावट की रोकथाम का लाभ जलस्त्रोतों को मिलेगा। प्रदूषण अपने आप कम होगा। पानी के साफ होने का रास्ता साफ होगा।

ग्राम सरोवर विकास प्राधिकरण बनेगा

ग्रामीण विकास विभाग की दूसरी पहल तालाब निर्माण को लेकर है। पिछले माह ग्रामीण विकास मंत्री ने जल का अधिकार तथा नदी पुनर्जीवन के लिए आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में इसकी जानकारी दी थी। इसके अनुसार ग्रामीण विकास विभाग ग्राम सरोवर विकास प्राधिकरण का गठन करेगा। यह स्वतंत्र निकाय होगा। इसका अपना बजट होगा। इस प्राधिकरण के गठन का उद्देश्य प्रदेशभर में तालाबों और जल स्त्रोतों को संरक्षित करना है। इस प्राधिकरण के गठन के बाद अगले पांच साल में हर गांव के पास अपना तालाब होगा। इसके साथ-साथ गांव के प्राचीन तालाबों का भी गहरीकरण किया जाएगा। जिन गांवों में तालाब नहीं हैं, उन गांवों में नए तालाब खोदे जाएंगे। धन की व्यवस्था सरकार करेगी। प्रदेश में प्राचीन तालाबों की ही संख्या लाखों में है। इन कामों की बदौलत लाखों हेक्टेयर मीटर पानी धरती के पेट में और तालाबों में जमा होगा। यह काम जल स्वराज की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। इस पर पर्यावरण और जलविद् अनुपम मिश्र ने अपनी किताब 'आज भी खरे हैं तालाब' में विस्तार से बात की है। यह किताब गहन पड़ताल के साथ लिखी गई है।

कागजी विकास

मप्र में पूर्ववर्ती भाजपा सरकार के शासनकाल में आदिवासियों के विकास के बड़े-बड़े दावे किए गए, लेकिन सारे दावे कागजी निकले हैं। क्योंकि प्रदेश और केंद्र सरकार की अधिकांश योजनाओं का फायदा आदिवासियों को नहीं मिल पाता है। इसका अंदाजा **डिस्ट्रिक्ट मिनरल फाउंडेशन** (डीएमएफ) की परफॉर्मेंस से लगाया जा सकता है। मप्र में आदिवासियों के उत्थान के लिए पिछले 4 साल में डीएमएफ ने 2795.39 करोड़ रुपए को संचय किया है, लेकिन उसमें से केवल 1812.71 करोड़ रुपए ही खर्च हो पाए हैं। बाकी राशि पर अफसर कुंडली मारकर बैठे हैं।

गौरतलब है कि खनिज समृद्ध जिलों में निवासरत आदिवासियों के उत्थान के लिए केंद्र सरकार ने जिला खनिज फाउंडेशन यानी डिस्ट्रिक्ट मिनरल फाउंडेशन (डीएमएफ) की स्थापना की है। नियमानुसार, डीएमएफ फंड पेयजल, स्वास्थ्य देखभाल, पोषण, आजीविका के साधन इत्यादि में कम से कम **60 प्रतिशत** खर्च किया जाना चाहिए। लेकिन प्रदेश की पूर्ववर्ती शिवराज सिंह चौहान सरकार और स्थानीय प्रशासन की वजह से इस फाउंडेशन का लाभ जरूरतमंदों को नहीं मिल पाया। उल्लेखनीय है कि मप्र के 22 जिलों में कोयला, आयरन, बाक्साइड की मुख्य खदानें हैं। इससे प्रदेश को हर साल करीब 600 करोड़ रुपए तक मिलता है। इसमें कुछ राशि राज्य निधि में जमा होती है और कुछ राशि डीएमएफ में जमा की जाती है। वर्ष 2015 से लेकर 2019 तक 22 जिलों को खनिज रॉयल्टी से करीब 2795.39 करोड़ रुपए मिले हैं। इसमें से केवल 1812.71 करोड़ का उपयोग जिलों के विकास कार्यों के लिए कर पाए हैं। वहीं 982.68 करोड़ रुपए बेकार पड़े हैं।

गौरतलब है कि मार्च 2015 में भारत के केंद्रीय खनन कानून, द माइंस एंड मिनरल्स (डेवलपमेंट एंड रेगुलेशन) या एमएमडीआर एक्ट (1957) में संशोधन कर डीएमएफ की स्थापना की गई। देश के सभी खनन जिलों में डीएमएफ एक गैर लाभकारी ट्रस्ट के रूप में स्थापित किया गया है। इसका स्पष्ट उद्देश्य है-खनन संबंधित कार्यों से प्रभावित क्षेत्रों के लोगों के हित और लाभ के लिए काम करना। डीएमएफ ट्रस्ट के लिए खननकर्ता (माइनर्स) पैसा देते हैं। यह राशि 2015 संशोधन से पहले दिए गए पट्टे के लिए रॉयल्टी राशि के 30 प्रतिशत के बराबर है और इसके बाद की लीज के लिए 10 प्रतिशत है।

सूत्रों के अनुसार, डीएमएफ की राशि को खर्च करने के लिए कलेक्टरों को प्लान तैयार कर खनिज विभाग से इस प्लान को स्वीकृत कराना होता है। 22 जिलों में से 16 जिलों में कुछ न कुछ राशि खर्च की गई है, लेकिन छतरपुर, झाबुआ, ग्वालियर, नरसिंहपुर, सागर, अलीराजपुर तो ऐसे जिले हैं, जहां एक भी पैसा खर्च नहीं किया गया है। सूत्र बताते हैं कि पूर्ववर्ती सरकार ने शासन स्तर पर कभी भी डीएमएफ की राशि का संज्ञान नहीं लिया। कलेक्टरों ने अपने विवेक के अनुसार उक्त राशि खनिज विभाग से लेकर खर्च की। बताया जाता है कि वर्तमान सरकार ने जिलों से डीएमएफ की रिपोर्ट तलब की है।

मप्र के जिन जिलों में कोयला, आयरन, बाक्साइड की मुख्य खदानें हैं उनमें से सिंगरौली को सबसे अधिक 1712 करोड़ रुपए की डीएमएफ राशि मिली है। इसके अलावा अनूपपुर को 289 करोड़, सतना को 221 करोड़, छिंदवाड़ा को 81 करोड़, बालाघाट को 76 करोड़, शहडोल को 72 करोड़, कटनी को 70 करोड़, बैतूल को 62 करोड़, उमरिया को 51 करोड़ और दमोह को 39 करोड़ रुपए मिल हैं। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार अभी तक खनिज निधि की जिस राशि का उपयोग आदिवासियों पर हुआ है उसमें से 33 फीसदी राशि उनके उत्थान और उनके क्षेत्रों में किए गए कार्यों पर हुई। इसके बाद 24 फीसदी राशि शिक्षा पर खर्च की गई है, जबकि 21 फीसदी रशि स्वास्थ्य पर खर्च की गई है।

प्रदेश में आदिवासी क्षेत्रों में **स्वास्थ्य देखभाल** और पोषण की स्थिति सबसे खराब है। ऐसा तब है जब ये क्षेत्र उच्च खनन राजस्व पैदा करते हैं। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (एनएफएचएस-4) के अनुसार, प्रदेश के सिंगरौली में 5 साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर बहुत है। इस आयु वर्ग के बच्चों में स्टंटिंग (लंबाई न बढ़ना) और कम वजन होना सामान्य है। लेकिन अधिकारियों की लापरवाही के कारण इस समस्या के निदान के लिए डीएमएफ के फंड का इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है। सूत्रों के अनुसार, डीएमएफ का क्रियान्वयन आम सरकारी योजना की तरह किया जा रहा है, जहां शीर्ष स्तर पर बैठे उच्च अधिकारी निवेश को नियंत्रित कर रहे हैं। डीएमएफ प्रशासन को ऊपर से नीचे की तरफ नियंत्रित किया जा रहा है, जबकि नियंत्रण का स्तर नीचे से ऊपर की तरफ होना चाहिए था। मध्य प्रदेश ने राज्य खनिज निधि (स्टेट मिनरल फंड-एसएमएफ) की स्थापना की है। स्टेट मिनरल फंड में जिले अपने डीएमएफ संग्रह का एक निश्चित अनुपात में योगदान देंगे। फिर, राज्य सरकार का वित्त विभाग उन कार्यों को तय करेगा, जहां इस फंड का उपयोग किया जाना है। सिंगरौली जैसा कोयला खनन जिला, एसएमएफ में अपने डीएमएफ शेयर का 50 प्रतिशत का योगदान दे रहा है। लेकिन देश में इस जिले के आदिवासी सबसे अधिक बेहाल हैं।

● **विकास दुबे**

क्या सबकुछ ठीक चल रहा है?

कानूनी उद्देश्य के अनुसार, डीएमएफ फंड का उचित उपयोग करने के लिए कुछ बुनियादी चीजों को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। चूंकि यह फंड विशिष्ट लाभार्थियों (जो खनन प्रभावित लोग हैं) के लिए लक्षित है, इसलिए सबसे पहले उनकी पहचान की जानी चाहिए। साथ ही साथ खनन से सबसे अधिक प्रभावित इलाके जिन्हें कानून ने प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित माना है, उनकी पहचान होनी चाहिए। सही तरीके से काम करने के लिए डीएमएफ के लिए उचित प्रशासनिक सेट-अप की आवश्यकता है। इसका मतलब है कि हर जिले में डीएमएफ का एक कार्यालय होना जरूरी है जिसमें कर्मचारी और विशेषज्ञों द्वारा योजना बनाने, खातों और अभिलेखों का रखरखाव, रिपोर्ट तैयार करने, सूचना साझा करने आदि किया जा सके। कानून के अनुसार, प्रत्येक जिले में डीएमएफ को खनन प्रभावित लोगों (ग्राम सभा के माध्यम से) के साथ जुड़ना चाहिए, ताकि उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप निवेश हो सके। देश के टॉप 12 खनन राज्यों के डीएमएफ प्रबंधन का विश्लेषण करने और पांच राज्यों के टॉप 13 खनन जिलों में डीएमएफ के फंड के उपयोग का आंकलन करने के बाद यह पाया गया कि न केवल ग्रामसभा से परामर्श बल्कि खनन प्रभावित लोगों को डीएमएफ और उसकी भूमिका के बारे में जागरूक करने के लिए भी कुछ नहीं किया गया है। लोगों को डीएमएफ की जानकारी न के बराबर है। यहां तक कि पीआरआई (पंचायती राज संस्थाओं) के सदस्यों, जो जिलों में डीएमएफ निकाय का हिस्सा हैं, ने सीएसई को बताया कि उन्हें फंड और अपनी शक्तियों से अवगत नहीं कराया गया है।

कीटनाशक कंपनियों की जमकर चांदी

मप्र कृषि प्रधान प्रदेश है। पिछले 6 सालों से प्रदेश को लगातार कृषि कर्मण अवार्ड मिल रहा है। जो इस बात का संकेत है कि प्रदेश में खेती सबसे बड़ा व्यवसाय है। लेकिन इस व्यवसाय में कई कठिनाईयां भी हैं। इन कठिनाईयों को देखते हुए कंपनियां इनके समाधान के लिए नए-नए तरीके बाजार में ला रही है, जिससे उनकी जमकर चांदी कट रही है। इनमें से एक है कीटनाशक। फसलों को कीटों और प्राकृतिक कोप से बचाने के लिए प्रदेश में बड़ी मात्रा में कीटनाशकों का उपयोग होता है। जिसके कारण मप्र कीटनाशक बनाने और बेचने वाली कंपनियों के लिए स्वर्ग बना हुआ है।

वैसे मप्र ही नहीं, बल्कि देश-विदेश में कीटनाशक की मांग लगातार बढ़ रही है। इस कारण दुनिया की पांच सबसे बड़ी कीटनाशक बनने वाली कंपनियां अपनी आय का करीब एक तिहाई हिस्सा हानिकारक कीटनाशकों को बेचकर कमाती हैं। यह केमिकल पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा हैं। चौंका देने वाला सच दो प्रमुख गैर लाभकारी संस्था 'अनअर्थड' एंड 'पब्लिक आई' द्वारा की गई संयुक्त जांच में सामने आया है। अध्ययन के अनुसार यह कंपनियां अपने अत्यधिक हानिकारक कीटनाशकों (एचएचपी) को अधिकतर विकासशील देशों में बेच रही हैं। विश्लेषण के अनुसार जहां भारत में इन कंपनियों द्वारा बेचे गए कुल कीटनाशकों में एचएचपी का हिस्सा करीब 59 फीसदी था जबकि उन्होंने ब्रिटेन में सिर्फ 11 फीसदी एचएचपी की बिक्री की थी।

यह शोध 2018 के टॉप-सेलिंग क्रॉप प्रोटेक्शन प्रोडक्ट्स के विशाल डेटाबेस के विश्लेषण पर आधारित है। जिसमें उन्होने इन कंपनियों द्वारा 43 प्रमुख देशों में बेचे जाने वाले कीटनाशकों का विश्लेषण किया है। जिससे पता चला है कि दुनिया की प्रमुख एग्रोकेमिकल कंपनियों ने अपनी बिक्री का 36 फीसदी हिस्सा अत्याधिक हानिकारक कीटनाशकों को बेचकर कमाया है। इनके अनुसार इन कंपनियों ने वर्ष 2018 में करीब 34,000 करोड़ रुपए के हानिकारक कीटनाशकों की बिक्री की है। यह हानिकारक कीटनाशक इंसानों के लिए तो नुकसानदेह हैं ही, साथ ही यह जानवरों और इकोसिस्टम पर भी बुरा असर डालते हैं। यह केमिकल इंसानों में कैंसर और उनकी प्रजनन क्षमता को नुकसान पहुंचा सकते हैं। इन एग्रोकेमिकल दिग्गजों में बीएएसएफ, बेयर, कोर्टेवा, एफएमसी और सिन्जेंटा शामिल हैं। यह सभी केमिकल इंडस्ट्री के प्रभावशाली समूह क्रॉपलाइफ इंटरनेशनल का हिस्सा हैं।

अध्ययन के अनुसार इनके द्वारा बेचे जाने वाले कुछ कीटनाशक यूरोपीय बाजारों में प्रतिबंधित हैं क्योंकि वो इंसानों और मधुमक्खियों पर बुरा असर डालते हैं, लेकिन विकासशील देशों में लचर कानूनों के चलते यह कंपनियां आराम से अपने केमिकल्स को बेच रही हैं। यही वजह है कि भारत और ब्राजील जैसे देशों में इनको भारी मात्रा में बेच दिया जाता है। अनुमान है कि भारत में इनके द्वारा बेचे जाने वाले कुल कीटनाशकों में 59 फीसदी कीटनाशक अत्यधिक हानिकारक की श्रेणी में आते है जबकि ब्राजील में 49 फीसदी, चीन में 31 फीसदी, थाईलैंड में 49, अर्जेंटीना में 47 और वियतनाम में 44 फीसदी अत्यधिक हानिकारक श्रेणी के कीटनाशक बेचे जाते हैं। जबकि विकसित और विकासशील देशों के बीच तुलनात्मक रूप से देखें तो इन कंपनियों द्वारा विकासशील देशों में करीब 45 फीसदी अत्यधिक हानिकारक कीटनाशकों की बिक्री की गई थी। जबकि विकसित देशों में करीब 27 फीसदी एचएचपी की बिक्री की गई थी।

इस विश्लेषण के अनुसार इन पांच कंपनियों द्वारा बेचे जाने वाले करीब 25 फीसदी कीटनाशक मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। 10 फीसदी मधुमक्खियों को नुकसान पहुंचा सकते हैं जबकि इनमें से 4 फीसदी इंसानों के लिए अत्यंत जहरीले होते हैं। गौरतलब है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और एफएओ द्वारा एचएचपी को अत्यधिक हानिकारक कीटनाशकों के रूप में परिभाषित किया गया है जो मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए अत्यंत हानिकारक होते हैं। जिसमें पर्यावरणीय खतरों में जल स्त्रोतों के प्रदूषण, परागण में आने वाली दिक्कतों और पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ने वाले असर जैसी समस्याओं को शामिल किया है। इस खतरे से निपटने के लिए डब्ल्यूएचओ और एफएओ ने न केवल कठोर नियमों की आवश्यकता पर बल दिया है बल्कि उसके क्रियान्वयन पर भी जोर दिया है।

● **श्याम सिंह सिकरवार**

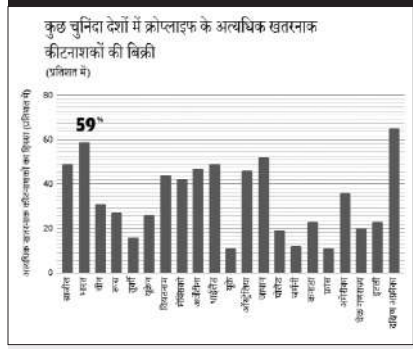

भारत का कीटनाशक बाजार 20 हजार करोड़ रुपए का

भारत में भी हानिकारक कीटनाशक एक बड़ी समस्या हैं। 2018 में भारत का कीटनाशक बाजार 19,700 करोड़ रुपए आंका गया है जिसके 2024 तक बढ़कर 31,600 करोड़ रुपए का हो जाने का अनुमान लगाया जा रहा है। ऐसे में इन हानिकारक कीटनाशकों की बिक्री एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। जिससे जल्द निपटने की जरूरत है। इसलिए आगामी कीटनाशक प्रबंधन विधेयक 2020 अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत में कृषि काफी हद तक इन कीटनाशकों पर ही निर्भर है, जिसमें बड़ी मात्रा में ऐसे कीटनाशक शामिल हैं जिनका अत्यधिक उपयोग और दुरुपयोग मनुष्यों, जानवरों, जैव-विविधता और पर्यावरण के स्वास्थ्य पर भारी असर डाल रहा है। ऐसे में इन हानिकारक कीटनाशकों के उपयोग पर लगाम कसना जरूरी है। इसके साथ ही जैविक खेती को बढ़ावा देना एक अच्छा विकल्प हो सकता है।

मिलेट मिशन

आदिवासी किसान के लिए 50 फीसदी फसल का लक्ष्य

मुख्यमंत्री ने कहा कि निजी क्षेत्र के सहयोग से कोदो-कुटकी के बुवाई क्षेत्र में डेढ़ गुना विस्तार करने के साथ ही आदिवासी किसान 50 प्रतिशत तक इन फसलों की बुवाई करें। इसके लिए कृषि और ग्रामीण विकास विभाग निजी क्षेत्रों के सहयोग से सुनियोजित रणनीति तैयार की जा रही है। सरकार का अनुमान है कि इस योजना से किसानों की आय में 20 से 25 प्रतिशत का इजाफा कर सकेंगे। इस मिशन में ग्रामीण विकास विभाग के आजीविका मिशन, निजी क्षेत्र के एनजीओ, समितियों और फार्मर प्रोड्यूस कंपनियों का सहयोग लिया जाएगा। मिलेट मिशन के अंतर्गत आने वाली फसलों के प्रमाणित बीजों के अनुसंधान पर भी काम किया जा रहा है।

मध्यप्रदेश में पोषण और स्वाद से भरपूर मोटे अनाज के दिन फिरने वाले हैं। किसान खराब बाजार, बीजों की अनुपलब्धता और जागरूकता के अभाव में मिलेट्स श्रेणी के अनाज से दूर होते जा रहे हैं। सरकार ने इस बात को ध्यान में रखकर इस वर्ष मिलेट अनाजों के लिए एक नीति बनाने की घोषणा की। इसके तहत छोटे दानों का खाद्यान्न उत्पादन और उपयोग बढ़ाने के लिए मिलेट मिशन कार्पोरेशन बनाया जाएगा। कमलनाथ ने अधिकारियों को मिलेट मिशन को गति देने के लिए निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने संबंधित विभागों के जिला अधिकारियों की बैठक में कहा कि प्रोजेक्ट में कोदो, कुटकी, ज्वार, बाजरा, रागी, समा इत्यादि फसलों को शामिल किया जाए। प्रोजेक्ट में ऑर्गेनिक खेती की जैविक प्रमाणीकरण की प्रक्रिया को शामिल करते हुए प्रोसेसिंग एवं मार्केटिंग की सुविधा भी उपलब्ध कराने की बात शामिल है।

मुख्यमंत्री कमलनाथ ने फरवरी में हुई मिलेट मिशन की समीक्षा बैठक के दौरान कोदो-कुटकी के उत्पादन को दोगुना करने और इसके उपार्जन के साथ ही उत्पादों की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ब्रांडिंग करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। मुख्यमंत्री ने पर्यटन विभाग के होटलों में कोदो-कुटकी से बने व्यंजनों को मेन्यू में शामिल करने तथा उनके बिक्री केंद्र भी अनिवार्य रूप से स्थापित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि कोदो-कुटकी, ज्वार-बाजरा एवं मक्का ऐसी फसलें हैं, जो ज्यादातर आदिवासी इलाकों में होती हैं और जिसका जरूरत के मुताबिक आदिवासी उत्पादन करते हैं। वह मानते हैं कि यह एक ऐसी प्रीमियम फसल है, जो स्वास्थ्यवर्धक है। इस कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी मांग है।

गौरतलब है कि गत वर्ष प्रदेश में 43 लाख 99 हजार हेक्टेयर में मोटे अनाज बोने का लक्ष्य रखा गया था। इन अनाजों में धान, ज्वार, मक्का, बाजरा, कोदो आदि शामिल था। इस आंकड़े में अकेले धान और मक्का का रकबा अधिक था। मोटे अनाज न केवल स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होते हैं बल्कि इन्हें उपजाने में पानी की कम मात्रा लगती है। कम-कम पानी और बंजर भूमि तथा विपरीत मौसम में भी ये अनाज उगाए जा सकते हैं। सल्हार, कांग, ज्वार, मक्का, मडिया, कुटकी, सांवा, कोदो आदि में अगर प्रोटीन, वसा, खनिज तत्व, फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, ऊर्जा कैलोरी, कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन, कैरोटीन, फोलिक ऐसिड, जिंक तथा एमिनो एसिड की मात्रा गेंहू और चावल जैसे अनाज की तुलना में काफी अधिक होती है। बाजरा में विटामिन बी और आयरन, जिंक, पोटैशियम, फॉसफोरस, मैग्नीशियम, कॉपर और मैंगनीज जैसे आहारीय खनिजों की उच्च मात्रा होती है। इसी तरह ज्वार भी पौष्टिक गुणों से भरा होता है।

केंद्र सरकार ने वर्ष 2018-19 के लिए खरीफ फसलों में एमएसपी यानि न्यूनतम समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी की है। हाईब्रिड ज्वार को 1700 से बढ़कर 2430 रुपए प्रति क्विंटल कर दिया गया है, वहीं मालदांडी ज्वार का समर्थन मूल्य 1725 से बढ़ाकर 2450 कर दिया गया है। बाजरा के मूल्य में भी 525 रुपए की बढ़ोतरी की गई है। यह अब 1950 रुपए प्रति क्विंटल बिकेगा। रागी का समर्थन मूल्य 1900 से बढ़कर 2897 रुपए प्रति क्विंटल कर दिया गया है। किसानों का मानना है कि इसका असर धीरे-धीरे दिखेगा। होशंगाबाद जिले के किसान प्रतीक शर्मा बताते हैं कि मक्का का समर्थन मूल्य बढ़ने के बाद किसानों का रुझान उस तरफ बढ़ा है। हालांकि, किसान इस बात से भी सशंकित रहते हैं कि कहीं केंद्र सरकार ने मूंग की फसल की तरह ही खरीफ खरीदने में आनाकानी की तो बाजार में उस फसल की कीमत नहीं मिल पाएगी।

जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के एग्रेनॉमी के प्रोफेसर डॉ. एमएल केवट बताते हैं कि मोटे अनाज से दूरी की बड़ी वजह इसका बाजार खराब होना है। मक्का पशु के चारे के लिए बिक जाता है लेकिन बाजरा, ज्वार और कोदो को आसानी से बाजार नहीं मिल पाता। हालांकि, कोदो, बाजरा को जब आम आदमी बाजार में खरीदने जाता है तो उसे काफी अच्छी कीमत चुकानी होती है, लेकिन किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं मिल पाता। इसकी दूसरी वजह तिलहन फसल विशेषकर सोयाबीन का बढ़ता बाजार है। यहां सोयाबीन की मांग इतनी अधिक है कि ये काफी आसानी से बिक जाता है।

● **कुमार राजेन्द्र**

विकास में भी राजनीति

मप्र में मुख्यमंत्री कमलनाथ और उनकी सरकार विकास के लिए कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रही है, लेकिन केंद्र सरकार के साथ ही भाजपा के सांसद और विधायक प्रदेश के विकास में भी राजनीति कर रहे हैं। इस कारण प्रदेश में सरकार की मंशानुसार विकास नहीं हो पा रहा है। स्थिति यह है कि सांसदों-विधायकों के पास करोड़ों रुपए का फंड पड़ा है, लेकिन वे विकास कार्यों की अनुशंसा नहीं कर रहे हैं।

गौरतलब है कि वर्तमान समय में मप्र पर करीब 2,26,000 करोड़ का कर्ज है। वहीं केंद्र सरकार के उपेक्षापूर्ण रवैए, केंद्रीय करों में कटौती और केंद्र से मिलने वाले फंड को रोके जाने से कई योजनाएं अधर में लटकी हुई हैं। लेकिन इस विकट स्थिति में भी मप्र के भाजपा सांसद और **विधायक अपनी निधि विकास** कार्यों के लिए जारी नहीं कर रहे हैं। जबकि वित्तीय वर्ष 2019-2020 समाप्त होने में 60 दिन शेष है, लेकिन भाजपा के अधिकांश सांसद और विधायक अपनी निधि खर्च नहीं कर पाए हैं। इस कारण सांसद निधि के 69.58 करोड़ और विधायक निधि के 223 करोड़ रुपए बचे हुए हैं।

जानकारी के अनुसार, प्रदेश के 29 लोकसभा सांसदों को अभी तक 82.50 करोड़ रुपए की निधि मिली है। जिसमें से वे मात्र 12.92 करोड़ रुपए ही खर्च कर पाए हैं। वहीं 230 विधायकों को विकास कार्यों के लिए चालू वित्त वर्ष में 425 करोड़ रुपए की निधि मिली है। जिसमें से अभी तक सिर्फ 202 करोड़ रुपए ही विकास कार्यों के लिए मंजूर किए गए हैं। प्रदेश के 29 लोकसभा सांसदों में से भाजपा के 19 सांसदों ने सांसद निधि से कोई भी राशि खर्च नहीं की है। आंकड़ों पर नजर डालें तो 29 लोकसभा सांसदों में से 28 भाजपा के और एक सांसद कांग्रेस का है। भाजपा के 28 में से 18 सांसदों ने अब तक अपनी सांसद निधि का कोई भी इस्तेमाल नहीं किया है। जबकि पूर्व में जब प्रदेश में भाजपा की सरकार थी तो भाजपा सांसदों में निधि खर्च करने की होड़ मची रहती थी।

सांसदों को 31 मार्च तक मिले हुए फंड का 80 फीसदी हिस्सा यानी दो करोड़ रुपए खर्च करने होंगे तभी उनको 2.5 करोड़ की अगली किश्त मिलेगी। सांसदों को एक साल में सांसद निधि के रूप में 5 करोड़ रुपए मिलते हैं। विशेषज्ञ कहते हैं कि इस निधि को खर्च करने में सांसदों को एक बड़ी दिक्कत पेश आती है। वो सिर्फ काम कराने की सिफारिश करते हैं उस काम के क्रियान्वयन की पूरी जिम्मेदारी जिला प्रशासन की होती है, इसलिए काम सरकारी सिस्टम के हिसाब से ही होता है।

भाजपा के बचे 10 सांसदों ने बहुत थोड़ी राशि का इस्तेमाल किया है। भाजपा के जिन सांसदों ने अभी तक अपनी सांसद निधि का इस्तेमाल किया है उनमें दमोह सांसद प्रहलाद पटेल ने 81 लाख, भोपाल सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर ने 1.99 करोड़, रीवा सांसद जनार्दन मिश्रा 1.95 करोड़, बालाघाट सांसद ढाल सिंह बिसेन ने 6 लाख, छतर सिंह दरबार ने 1.53 करोड़, गुना सांसद केपी सिंह यादव ने 1.78 करोड़, बैतूल सांसद दुर्गादास उइके ने 12 लाख, सतना सांसद गणेश सिंह ने 81 हजार, देवास सांसद महेंद्र सिंह सोलंकी ने 5 लाख और उज्जैन सांसद अनिल फिरोजिया ने 1.61 करोड़ रुपए खर्च किया है। वहीं प्रदेश के 29 सांसदों में से कांग्रेस के एकमात्र सांसद नकुलनाथ अपनी निधि खर्च करने में सबसे आगे रहे हैं। उन्होंने अपनी 5 करोड़ की सांसद निधि में से 2.42 करोड़ रुपयों का इस्तेमाल विकास कार्यों के लिए किया है।

सूबे की **सियासत में इन दिनों** भाजपा और कांग्रेस एक-दूसरे को घेरने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे हैं। भाजपाईयों के लगातार कांग्रेस सरकार पर हो रहे हमलों के बाद अब कांग्रेस ने भाजपा के चुने हुए सांसदों को घेरने की तैयारी कर ली है। कांग्रेस अब प्रदेश के विकास में भाजपा के चुने हुए 28 सांसदों के सहयोग नहीं करने को बड़ा मुद्दा बनाने की तैयारी में है। कांग्रेस का आरोप है कि भाजपा के सांसदों ने न तो आपदा के लिए केंद्र से राशि दिलाने में कोई सहयोग किया और न ही सांसद निधि का इस्तेमाल विकास के लिए कर रहे हैं। कांग्रेस का आरोप है कि भाजपा सांसद सिर्फ बयानों के जरिए चर्चा में है। और सांसद निधि खर्च नहीं कर विकास में रोड़ा बन रहे हैं और कांग्रेस अब ये बात जनता को बताना चाहती है। कांग्रेस विधायक कुणाल चौधरी ने कहा है कि भाजपा सांसद डिक्टेरशिप से बाहर आकर जनसेवक नहीं बन पा रहे हैं। जनता अब अहसास कर रही है कि उनसे भूल हुई है।

● **कुमार विनोद**

सांसदों की राह पर विधायक भी

प्रदेश के भाजपा सांसदों की तरह भाजपा विधायकों ने भी अपनी निधि रोक कर रखी है। जानकारी के अनुसार प्रदेश के 230 विधायकों को विकास कार्यों के लिए अब तक 425 करोड़ रुपए की राशि मिली है, लेकिन उसमें से सिर्फ 202 करोड़ रुपए ही विकास कार्यों के लिए मंजूर किए गए हैं। सूत्र बताते हैं कि वर्तमान में भाजपा के 107 विधायकों में से आधे ने अपनी निधि से विकास कार्य मंजूर नहीं कर पाए हैं। प्रदेश में एक विधायक को हर साल विधायक निधि में एक करोड़ 85 लाख रुपए विधायक निधि के रूप में खर्च करने के लिए मिलते हैं। इसके अलावा 15 लाख रुपए स्वेच्छानुदान के रूप में दिए जाते हैं जिसे विधायक अपने परिचितों, गरीबों की मदद या अन्य कार्यों में बांटते हैं। वित्त वर्ष 2019-20 समाप्ति की ओर है, लेकिन विधायकों ने निधि की राशि विकास कार्यों के लिए मंजूर करने में रूचि नहीं दिखाई है। इन विधायकों को अपने क्षेत्र में सड़क, बिजली, पानी की मूलभूत सुविधाओं के साथ ग्रामों, कस्बों में सामुदायिक भवन, स्कूल भवन, कॉलेज, मंगल भवन समेत अन्य सार्वजनिक प्रयोजन के विकास कार्यों के लिए विधायक निधि से राशि स्वीकृत करने का अधिकार है।

नए अभयारण्य

मध्य प्रदेश में पर्यटन और रोजगार को बढ़ावा देने के साथ टाइगर स्टेट की पहचान दुनियाभर में पहुंचाने की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए सरकार मांडू सहित प्रदेश में 11 नए वन अभयारण्य बनाएगी। अभयारण्यों के लिए टाइगर कॉरिडोर को चिन्हित किया गया है। फिलहाल प्रदेश में 25 वाइल्ड लाइफ सेंचुरी और 11 नेशनल पार्क हैं। इस योजना के बाद इनकी संख्या में खासी बढ़ोत्तरी होगी। अभयारण्य से एक भी गांव इसकी जद में ना आए और किसी का भी वनाधिकार प्रभावित ना हो इसे ध्यान में रखा गया है। वन विभाग के सूत्रों के अनुसार वन अभयारण्य बनाने के लिए प्रदेश के जिन 11 स्थानों को चुना गया है उनमें मांडू (धार), श्योपुर, सागर, सीहोर, नरसिंहपुर, हरदा, इंदौर, बुरहानपुर, बड़वाह, ओंकारेश्वर और मंडला शामिल हैं। इन स्थानों में सीमावर्ती अभयारण्यों से प्रदेश के अभयारण्य को जोड़ा जाएगा। जैसे महाराष्ट्र के मेलघाट से बुरहानपुर और हरदा के अभयारण्य को जोड़ा जाएगा। राजस्थान के रणथंभौर से श्योपुर के अभयारण्य को जोड़ा जाएगा।

फिलहाल राज्य में 24 अभयारण्य और 11 राष्ट्रीय उद्यान हैं, जो प्रदेश के 11,393 वर्ग किमी वनक्षेत्र में हैं। करीब 2,143 वर्ग किमी के प्रस्तावित नए संरक्षित क्षेत्र पिछले तीन दशकों में किसी भी राज्य में संरक्षित क्षेत्रों में की गई शायद सबसे बड़ी वृद्धि होगी। 1970 और 80 के दशक में कुछ शुरुआती प्रयासों के बाद, नए संरक्षित क्षेत्रों के निर्माण की योजना सरकार की प्राथमिकताओं में पीछे चली गई। इसकी बड़ी वजह स्थानीय समुदायों का प्रतिरोध था, जिन्हें लगता था कि इससे उनके अधिकार सीमित हो जाएंगे। दूसरी वजह सरकारों की यह चिंता थी कि इससे विकास कार्य प्रभावित होते हैं क्योंकि संरक्षित क्षेत्रों में कई तरह की मंजूरियों की आवश्यकता पड़ती है।

हालांकि, अपने बाघ संरक्षण कार्यक्रम की सफलता से उत्साहित होकर राज्य सरकार ने नए संरक्षित क्षेत्रों के निर्माण का फैसला किया है। 2018 में बाघों की गिनती में मध्यप्रदेश में 526 बाघ पाए गए थे जो देश में सर्वाधिक रहा और राज्य को 'बाघ प्रदेश' का तमगा मिला था। इन नए क्षेत्रों को 'डिजाइनर अभयारण्य' कहा जा रहा है, क्योंकि इन अभ्यारण्यों की पहचान वन क्षेत्रों के बीच मानव आबादी और लघु वन उपज (एमएफपी) संग्रह अधिकारों जैसे संभावित विवादास्पद पहलुओं को ध्यान में रखकर की गई है। कैबिनेट में रखे जाने को तैयार राज्य के वन विभाग के प्रस्ताव में 10 नए अभयारण्यों और एक नए राष्ट्रीय उद्यान का निर्माण शामिल है। रातापानी अभयारण्य को 'टाइगर रिजर्व' का दर्जा दिया जाना है, जबकि दो क्षेत्रों मंडला और सतना को भी अंतिम सूची में शामिल किया जा सकता है और ये दोनों सुरक्षित क्षेत्र खासतौर से रॉक पायथन के संरक्षण के लिए होंगे।

राज्य के मौजूदा 11,393 वर्ग किमी क्षेत्र में फैले अभयारण्यों और राष्ट्रीय उद्यानों के अलावा, छह बाघ अभयारण्यों के आसपास के तकरीबन 5,400 वर्ग किमी वनक्षेत्र को बफर जोन के रूप में अधिसूचित किया गया है और इससे राज्य के लगभग 94,000 वर्ग किमी वनक्षेत्र में से 16,800 वर्ग किमी संरक्षित क्षेत्र हो जाता हैं। राज्य के अधिकांश प्रसिद्ध बाघ अभयारण्यों (सतपुड़ा, पेंच, पन्ना और बांधवगढ़) को 1980 के दशक की शुरुआत में अधिसूचित किया गया था पर पिछले 30 वर्षों में कोई नया संरक्षित क्षेत्र नहीं घोषित हुआ था। धार जिले में एक पशु जीवाश्म राष्ट्रीय उद्यान के निर्माण के साथ 1990 के दशक के मध्य में दो अभयारण्यों (रानी दुर्गावती और ओरछा) का निर्माण और पालपुर-कूनो अभयारण्य को राष्ट्रीय उद्यान में बदलने जैसे फैसले कुछ अपवाद रहे। नए संरक्षित क्षेत्रों के निर्माण की राह में सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि संरक्षित क्षेत्र घोषित करने के साथ ही उस क्षेत्र की स्थानीय आबादी के बहुत से अधिकार समाप्त हो जाते हैं। मसलन, किसी क्षेत्र को अभयारण्य या राष्ट्रीय उद्यान बनाया जाता है, तो उस क्षेत्र में भूमि को बेचने का अधिकार उसके भूस्वामियों के पास नहीं रह जाता। मवेशी चराई और जलावन की लकड़ी के साथ महुआ या तेंदुपत्तों वगैरह के संग्रह पर भी प्रतिबंध लग जाता है। इन वर्षों में ऐसे संरक्षित क्षेत्रों के आसपास रहने वालों के लिए नए नियम भी बनाए गए थे। इसका नतीजा यह हुआ कि शुरुआत में जो संरक्षित क्षेत्र घोषित हुए उनको लेकर स्थानीय समुदायों ने विरोध करना शुरू कर दिया था। सरकारें भी संरक्षित क्षेत्रों को विकास में बाधा के रूप में देखती हैं। इस बात को समझते हुए मध्य प्रदेश सरकार ने सूचना प्रौद्योगिकी की मदद से ऐसे क्षेत्रों की पहचान की जिनमें कोई निजी भूमि न हो और न ही लोग निवास करते हों। इसके अलावा, राज्य सरकार को वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत अनिवार्य 'अधिकारों के निपटान' की प्रक्रिया को पूरा करने की आवश्यकता नहीं है। इससे सरकार को सार्वजनिक परामर्श की विवादास्पद प्रक्रिया से बचने का रास्ता मिल गया।

राज्य के वन अधिकारियों के अनुसार अभयारण्य का निर्माण, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम की धारा 18 से 26 में सूचीबद्ध प्रक्रियाओं का पालन करते हुए ही हो सकता है। जिन क्षेत्रों को इन संरक्षित क्षेत्रों में शामिल करने के लिए चुना गया है उनमें से अधिकांश को, पहले से ही आरक्षित वन क्षेत्रों के रूप में नामित किया जा चुका है। इसलिए यहां जिला मजिस्ट्रेट धारा-19 के तहत सार्वजनिक परामर्श प्रक्रिया के तहत भू-अधिकारों के निपटान की प्रक्रिया में जाने की आवश्यकता ही नहीं हैं।

● **धर्मेन्द्र सिंह कथूरिया**

अवैध गतिविधियों पर लगेगा अंकुश

संयुक्त राष्ट्र के जैव विविधता सूचकांक और प्राकृतिक आवास गलियारों पर एक अध्ययन का उपयोग करते हुए, राज्य के वन विभाग मुख्यालय ने आरक्षित वन पथों की पहचान की है और संबंधित वन प्रभागों को आंकड़ों की पुष्टि करने के लिए कहा है। आम वन भूमि के संरक्षित क्षेत्रों में बदलने के साथ ही लकड़ी की कटाई, बांस की कटाई और इन क्षेत्रों में होने वाला खनन कार्य बंद हो जाएगा और राज्य सरकार इससे संभावित राजस्व क्षति का आंकलन करने के लिए भी एक अध्ययन कर रही है। राज्य के वन मंत्री उमंग सिंघार के मुताबिक, बस्तियों के आसपास के लगभग 5 वर्ग किलोमीटर के जंगलों को प्रस्तावित अभयारण्यों से बाहर रखा गया है ताकि लोग जलावन की लकड़ी और वनोपज संग्रह जैसी जरूरतों के लिए जंगलों का उपयोग जारी रख सकें।

दाल का कटोरा

भारत में किसानों का दलहन उत्पादन के प्रति मोह जिस तरह कम हो रहा है, वह खतरे की घंटी है। इस खतरे को भांपते हुए बुंदेलखंड के कालिंजर किले में अरहर सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बुंदेलखंड को दाल का कटोरा बनाने के प्रयासों पर चर्चा की गई। गौरतलब है कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने 10 नवंबर, 2015 को इटली में आधिकारिक रूप से वर्ष 2016 को अंतर्राष्ट्रीय दलहन वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की थी। कालिंजर सम्मेलन में अतिथि कृषि वैज्ञानिकों का स्वागत परंपरागत फूलों की जगह चना, अरहर, सरसों और मटर आदि के फूल और पत्तियों से बने पुष्पगुच्छों से किया गया। सवाल उठता है कि दलहन उत्पादन को लेकर सम्मेलन एक ही जिले में क्यों, देशभर में क्यों नहीं होना चाहिए? देखा यह जाता है कि दिवस विशेष पर तो विशेष आयोजन होते हैं लेकिन बाद में सबकुछ भुला दिया जाता है। अगर किसानों के जीवन में बदलाव लाना है तो इस तरह के सम्मेलनों की निरंतरता बनाए रखनी चाहिए।

भारत में पिछले कुछ वर्षों में दलहनी फसलों के उत्पादन में जिस तरह कमी आई है और उनकी कीमतें आसमान छू रही हैं, उसे देखते हुए इस तरह के आयोजन विशेष अहमियत रखते हैं। इस सम्मेलन में न केवल बुंदेलखंड के किसानों की घटती आय पर चिंता व्यक्त की गई, बल्कि खेती-किसानी को व्यावसायिक स्वरूप देने पर भी मंथन हुआ। अरहर और अन्य दलहनी फसलों को ब्रांड बनाने पर जोर दिया गया। धान और देसी गेहूं की कई किस्मों के प्रोत्साहन और औषधीय पौधों के संरक्षण पर चर्चा हुई।

सम्मेलन इसलिए भी अहम है कि इसमें कृषि क्षेत्र के पांच पद्मश्री भी मौजूद रहे। सभी ने इस पर गहन विचार किया कि दलहनी फसलों के क्षेत्र में बुंदेलखंड अपना खोया गौरव कैसे वापस पा सकता है। पद्मश्री बाबूलाल दाहिया ने अरहर और चने की फसल के लिए बुंदेलखंड की माटी को बेहद मुफीद बताया। वह यह कहने से भी नहीं चूके कि इस क्षेत्र में खाद डालने की जरूरत नहीं है। मुजफ्फरपुर की किसान चाची पद्मश्री राजकुमारी देवी ने किसानों को दलहन उत्पाद प्रोडक्ट के रूप में बेचने की सलाह दी। उनकी इस बात में दम है कि दाल सेहत दुरुस्त रखती है। परहेज में डाक्टर तमाम चीजें खाने से रोकते हैं पर दाल को मना नहीं करते। उन्होंने महिला किसानों को स्वयं सहायता समूह बनाने, साइकिल पर भ्रमण करने और अरहर की फसल की ब्रांडिंग करने की सलाह दी।

बाराबंकी से कालिंजर पहुंचे पद्मश्री रामशरण वर्मा और कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली के प्रो. मान सिंह भारती ने भी माना कि अगर व्यावसायिक ढंग से दलहन उगाई जाए तो किसाानों के दिन बहुरते देर नहीं लगेगी। बांदा के जिलाधिकारी हीरालाल मानते हैं कि जिले में 47 फीसदी बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। इनकी खुराक में दाल बढ़ाकर सेहत सुधारी जा सकती है। अरहर सम्मेलन के साथ ही नरैनी में स्वयं सहायता समूह की ग्रामीण उद्यमिता परियोजना के तहत दाल प्रसंस्करण इकाई की शुरुआत भी हो गई है। बांदा जिले में 17,753 हेक्टेयर भूमि में अरहर, 91,110 हेक्टेयर में चना और 24,624 हेक्टेयर में मसूर की खेती की जाती है। जिले में सरसों की खेती भी 2706 हेक्टेयर भूमि में होती है। इस सम्मेलन का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि इसमें चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, निदेशालय रेपसीड-मस्टर्ड रिसर्च, भरतपुर (राजस्थान), इंटरनेशनल क्राप्स रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर द सेमी-एरिड ट्रॉपिक्स, हैदराबाद और बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बांदा की भी समान सहभागिता रही।

सम्मेलन में 40 खेती-किसानी बागवानी और बैंकों के स्टॉल लगाए गए। बुंदेलखंडी व्यंजन का स्टॉल भी लगा। लगभग 65 किसानों और कृषि वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया। एक समय कोदों, सांभा फसलें बुंदेलखंड क्षेत्र में बहुत होती थीं, इन फसलों का उत्पादन बढ़ाए जाने पर जोर दिया गया।

भारत की बड़ी जनसंख्या को देखते हुए हर साल उसे विदेशों से दाल आयात करनी पड़ती है। वित्त वर्ष 2017-18 में दलहनों के रिकॉर्ड उत्पादन हुआ था फिर भी देश को 56.5 लाख टन दलहन का आयात करना पड़ा था। भारत में लगभग 220-230 लाख हेक्टयर क्षेत्रफल में दलहन की खेती होती है। इससे हर साल 130-145 लाख टन दलहन की पैदावार होती है। भारत में सर्वाधिक 77 प्रतिशत दाल पैदा होती है। इसमें मध्यप्रदेश का 24, उत्तरप्रदेश का 16, महाराष्ट्र का 14, राजस्थान का 6, आंध्र प्रदेश का 10 और कर्नाटक का 7 प्रतिशत योगदान होता है।

● **सिद्धार्थ पांडे**

उपलब्धियों के एक्सप्रेस-वे

बदहाल बुंदेलखंड को खुशहाल बनाने के लिए मप्र और उप्र सरकार के साथ ही केंद्र सरकार भी कमर कस चुकी है। इस सूखे अंचल के 13 जिलों में विकास के लिए कई प्रोजेक्ट मंजूर हो चुके हैं, जिस पर अगले माह काम शुरू होने जा रहा है। उत्तर प्रदेश में सरकार बनने के कुछ समय बाद ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे की घोषणा कर दी थी। चित्रकूट में गत दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसका शिलान्यास भी कर दिया। बुंदेलखंड के विकास को गति और यात्रा को सुगम बनाने के लिए इसकी आवश्यकता समझी गई। केवल यात्रा के समय को घटाने के लिए एक्सप्रेस-वे का निर्माण उचित नहीं कहा जा सकता, इसके साथ औद्योगिक बेल्ट का निर्माण होना चाहिए। सुरक्षा के समुचित तकनीकी प्रबंध भी अपरिहार्य होते हैं। बताया गया कि यह कार्ययोजना बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे निर्माण में भी जारी रहेगी। इसके निर्माण से इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन आएगा। यह अनुमान है कि बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे से यहां के किसानों की आय दोगुनी करने में सहायता मिलेगी। यहां की अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय परिवर्तन आएगा। इसके निर्माण से डिफेंस कॉरिडोर को भी गति मिलेगी।

कमल नाथ
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

किसानों के हित में कमल नाथ सरकार का अभूतपूर्व फैसला

''जय किसान फसल ऋण माफी योजना''

जो वचन दिया, पूरा किया

प्रथम चरण - पूर्ण

20.22 लाख किसानों के
ऋण माफ किये गये।
इनमें 10.30 लाख एन.पी.ए. (बकाया खातों)
वाले किसानों का 2 लाख रुपये तक का
एवं 9.92 लाख पी.ए. (चालू खातों)
वाले किसानों का
50 हजार रुपये तक का
फसल ऋण माफ किया गया।

द्वितीय चरण - प्रगति पर

50 हजार से 1 लाख रुपये तक के पी.ए. (चालू खातों)
वाले लगभग 7 लाख किसानों की
ऋण माफी की स्वीकृति दी जा रही है।
इसमें से 1 लाख 87 हजार से
अधिक किसानों के ऋण माफी की
स्वीकृति दी जा चुकी है।

तृतीय चरण - 1 जून 2020 से प्रारंभ

एक लाख से 2 लाख रुपये तक के
पी.ए. (चालू खातों) एवं पूर्व के चरणों के
विवादित खातों को शामिल करते हुए
लगभग 6 लाख किसानों के
ऋण माफी की
स्वीकृति दी जायेगी।

उम्मीदें रंग लाईं तरक्की मुस्कुराई

बाजीगर कौन?

हार कर जीतने वाले को बाजीगर कहते हैं! शाहरुख खान की फिल्म बाजीगर का ये डायलॉग यूं ही मशहूर नहीं हो गया। इस डायलॉग में जीवन का सार छुपा है। जब हम हार से हारते नहीं, लगातार जीतने की कोशिश करते रहते हैं, तो हमारी जीत निश्चित होती है। हम तब तक नहीं हारते, जब तक हम हार नहीं मान लेते। कुछ ऐसी ही स्थिति इन दिनों मप्र की राजनीति में भी देखने को मिल रही है। यहां असली बाजीगर कौन है, यह जल्द ही सामने आ जाएगा।

● राजेंद्र आगाल

वक्त है बदलाव का... के नारे के साथ सत्ता में आई कमलनाथ सरकार का वक्त इतना जल्दी खराब हो जाएगा, यह किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। दरअसल, अल्पमत वाली यह सरकार शुरू से ही बैसाखी के सहारे चल रही है। उस पर कांग्रेस भी तीन धड़ों में बंटी रही। इसी का परिणाम है कि कमलनाथ सरकार 14 महीने में ही भीषण संकट में पड़ गई है और इसका बचना मुश्किल लगता है। हालांकि मुख्यमंत्री कमलनाथ ने अभी हार नहीं मानी है, लेकिन लगभग 22 विधायकों के समर्थन वाले ज्योतिरादित्य सिंधिया के भाजपा में शामिल हो जाने के बाद अब कांग्रेस को किसी चमत्कार का ही सहारा रह गया है। बहरहाल, कमलनाथ सरकार रहे या जाए, पर कांग्रेस नेतृत्व को उन सवालों का सामना करना चाहिए, जो इस संदर्भ में लगातार उठते रहे हैं। अभी उसका कहना है कि भाजपा विधानसभा चुनावों में मिली हार के बाद से ही इस सरकार को गिराने में जुटी थी। कुछ प्रेक्षकों ने इस आरोप से सहमति भी जताई है। उनका कहना है कि

सत्तारूढ़ दल के विधायकों से इस्तीफे दिलवाकर सरकार को अल्पमत में ला देने और फिर उपचुनावों के जरिये उनको दोबारा निर्वाचित करा लेने का जो फॉर्मूला कर्नाटक में कामयाब रहा, उसे अब मध्यप्रदेश में भी दोहराया जा रहा है। इस व्याख्या में सच्चाई के अंश हो सकते हैं, लेकिन पूरे घटनाक्रम पर नजर डालें तो लगता यही है कि मध्यप्रदेश में जो कुछ हो रहा है, उसका सीधा संबंध कांग्रेस के शीर्ष पर दिख रहे शून्य से है। देश की सबसे पुरानी पार्टी पिछले लोकसभा चुनावों में मिली हार के बाद से ही एक ऐसे संकट से गुजर रही है जिसकी बराबरी देश के आधुनिक राजनीतिक इतिहास में शायद ही खोजी जा सके।

सत्ता संग्राम रोचक मोड़ पर

मप्र में सत्ता का संग्राम अब रोचक मोड़ पर पहुंच गया है। ज्योतिरादित्य सिंधिया और 22 विधायकों की बगावत के बाद भाजपा और कांग्रेस में सत्ता के लिए आर-पार की तैयारी शुरू कर दी है। फिलहाल मुकाबला बराबरी का है और दोनों पार्टियां फ्लोर टेस्ट की तैयारी कर रही हैं। संभावना जताई जा रही है कि 16 मार्च से शुरू हो रहे बजट सत्र के पहले या दूसरे फ्लोर टेस्ट कराया जा सकता है। इस टेस्ट में पास होने के लिए दोनों पार्टियों में रणनीतिक तैयारी चरम पर है। इस बीच मध्यप्रदेश में सियासी उथल-पुथल के बीच मुख्यमंत्री कमलनाथ की चिट्ठी के बाद राज्यपाल लालजी टंडन ने बेंगलुरु से इस्तीफा भेजने वाले 6 मंत्रियों इमरती देवी, तुलसी सिलावट, गोविंद सिंह राजपूत, महेंद्र सिंह सिसोदिया, प्रद्युम्न सिंह तोमर, डॉ. प्रभुराम चौधरी को कैबिनेट से बर्खास्त कर दिया है। उधर, विधानसभा अध्यक्ष एनपी प्रजापति ने दो दिन बाद इनकी सदस्यता निरस्त कर दी।

इस दौरान भाजपा दिल्ली में तो कांग्रेस भोपाल में रणनीति बनाने में जुटी हुई है। 15 मार्च का दिन मप्र की राजनीति में सबसे व्यस्त दिनों में से एक रहा। दिल्ली में भाजपा के नेता कभी केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, तो कभी केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के बंगले पर मंथन करके रणनीति बनाते रहे। इस दौरान नरेंद्र सिंह तोमर, शिवराज सिंह चौहान, अनिल जैन, धर्मेन्द्र प्रधान और सिंधिया उपस्थित रहे। वहीं कांग्रेस के नेता भाजपा में सक्रिय रहे। भोपाल में सीएम हाउस राजनीति का केंद्र रहा। उधर, दोनों पार्टियों के नेता राज्यपाल से मुलाकात करके अपना-अपना पक्ष रखते रहे।

जो भी होगा फ्लोर टेस्ट में होगा

मौजूदा घटनाक्रम को देखते हुए सभी की निगाहें स्पीकर स्पीकर नर्मदाप्रसाद प्रजापति पर टिकी हुई हैं। भाजपा ने बजट सत्र के पहले दिन 16 मार्च को अविश्वास प्रस्ताव की मांग की है। स्पीकर ने कहा कि अब जो भी फैसला होगा। विधानसभा के नियमानुसार होगा। फ्लोर टेस्ट कराया जाएगा और जो बहुमत हासिल करेगा वह सत्ता में रहेगा। सूत्र बताते हैं कि बहुमत सिद्ध नहीं करने की स्थिति में मुख्यमंत्री कमलनाथ इस्तीफा देकर विधानसभा भंग करने की सिफारिश भी कर सकते हैं। हालांकि स्पीकर नियमानुसार पहले फ्लोर टेस्ट कराएंगे। बहुमत हासिल नहीं करने पर भाजपा को मौका दिया जाएगा। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह का कहना है कि आने वाले फ्लोर टेस्ट में हम सबको चौंका देंगे।

लोकसभा हारते ही शुरु हुई सिंधिया की उपेक्षा

मप्र में ज्योतिरादित्य सिंधिया की उपेक्षा उनके लोकसभा चुनाव हारते ही शुरू हो गई थी। इसको भांपते हुए सिंधिया भी अपने आपको कांग्रेस से दूर करने की कवायद में जुट गए। सूत्र बताते हैं कि इस दौरान उनकी सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी से भी ठन गई। यही कारण है कि जब सिंधिया ने अपना इस्तीफा सोनिया गांधी को भेजा तो वह 5 मिनट में ही मंजूर कर लिया गया। अगर राहुल गांधी या प्रियंका गांधी सिंधिया को मनाने उनके घर जातीं तो वे मान जाते। लेकिन किसी ने ऐसा करने की कोशिश नहीं की। वैसे देखा जाए तो प्रदेश में सरकार गठन से लेकर अब तक सिंधिया को लगातार टोलरेंस और प्रताड़ित किया गया। सिंधिया समर्थक जिन नेताओं को मंत्री बनाया गया, उनके ऊपर अधिकारियों को बैठा दिया गया। अधिकारी मंत्रियों की एक बात नहीं सुनते थे। इसकी शिकायत कई बार मंत्रियों ने कैबिनेट से लेकर सार्वजनिक मंच तक की है। यही नहीं सरकार बनते ही सिंधिया के प्रभाव वाले जिलों गुना, ग्वालियर, शिवपुरी में उनसे पूछे बिना एसपी तैनात कर दिए गए। सिंधिया सबकुछ बर्दाश्त करते रहे। अगर कभी उनके नाखुश होने की बात सामने आती तो पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह यह दर्शाने की कोशिश करते रहे कि ऐसी कोई बात नहीं है। हद तो तब देखने को मिली जब सिंधिया ने एक सभा के दौरान किसानों से कहा कि वचन पत्र हमारे लिए ग्रंथ है और उसमें किए वादे पूरे नहीं हुए तो मैं भी आपके साथ सड़क पर उतरूंगा। जब इस संदर्भ में दिल्ली यात्रा के दौरान मुख्यमंत्री से पूछा गया तो उन्होंने बिना सोचे, समझे तपाक से कह दिया- तो उतर जाएं। यही वह शब्द हैं जिसके कारण कांग्रेस से सिंधिया का लगाव कम हो गया।

मप्र विधानसभा में वर्तमान में विधायकों की संख्या 222 है। इनमें कांग्रेस के 108, भाजपा के 107, निर्दलीय 4, बसपा 2 और सपा 1 विधायक हैं। भाजपा ने 106 विधायकों को दिल्ली शिफ्ट कर दिया है। कांग्रेस के 22 विधायकों के इस्तीफे के बाद इनकी संख्या 92 रह गई है। चार निर्दलीय, एक बसपा (रामबाई) मिलाकर कांग्रेस के साथ 97 विधायक खुलकर हैं। भाजपा के 2 विधायक नारायण त्रिपाठी और शरद कौल लंबे समय से कमलनाथ के साथ दिखाई देते हैं। कांग्रेस को पूरा भरोसा है कि जिन 22 विधायकों के इस्तीफे हुए हैं उनमें से आधे से ज्यादा वापस लौटेंगे। यदि ऐसा होता है तो फ्लोर टेस्ट में कांग्रेस सरकार बचा भी सकती है। उधर महासचिव और प्रदेश प्रभारी, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी दीपक बाबरिया

कहते हैं कि सरकार को कोई खतरा नहीं है।

नहीं आए बागी विधायक

मध्य प्रदेश के सिंधिया समर्थक 22 विधायकों ने इस्तीफा दे दिया है। अब गेंद विधानसभा अध्यक्ष एनपी प्रजापति के पाले में है जो कांग्रेस के नेता हैं। मप्र विधानसभा के पूर्व प्रमुख सचिव भगवानदेव इसरानी कहते हैं कि नियमों के मुताबिक अगर किसी सदस्य ने इस्तीफा दिया है तो उससे विधानसभा अध्यक्ष का संतुष्ट होना जरूरी है। यदि वह संतुष्ट हैं तो इस्तीफा स्वीकार कर सकते हैं। यदि स्पीकर को लगता है कि दबाव डालकर विधायकों से इस्तीफा दिलवाया गया है तो वह सदस्य से बात कर सकते हैं। साथ ही उस सदस्य को अपने समक्ष उपस्थित होने को कह सकते हैं। इसी नियम के तहत एनपी प्रजापति ने बागी 22 विधायकों को 13, 14 और 15 मार्च को विधानसभा में उनके सामने आकर स्थिति स्पष्ट करने को कहा था। लेकिन एक भी विधायक उनके समक्ष नहीं आ सके।

जानकारों का कहना है कि मध्यप्रदेश के वर्तमान हालात में राज्यपाल की कोई सीधी भूमिका नहीं है। हालांकि 16 मार्च से मध्यप्रदेश में बजट सत्र शुरू हो रहा है। बजट सत्र इस सरकार का भविष्य तय कर सकता है। इसमें कमलनाथ सरकार के बहुमत का परीक्षण हो सकता है। अगर सरकार बजट पारित कराने में असफल रहती है तो उसका गिरना तय हो जाएगा। राज्यपाल लालजी टंडन का कहना है कि वह इस पूरे मामले में अपनी नजर गड़ाए हुए हैं। यदि मध्यप्रदेश विधानसभा की कुल सदस्य संख्या 230 में से आधे से अधिक सदस्यों ने इस्तीफा दे दिया तब गेंद राज्यपाल के पाले में जाएगी। यह राज्यपाल के विवेक पर निर्भर करेगा कि वह सदन को भंग कर मध्यावधि चुनाव की सिफारिश करें या खाली सीटों पर उपचुनाव की। माना जा रहा है कि भाजपा उपचुनाव पर बल देगी जबकि कांग्रेस का जोर मध्यावधि चुनाव पर रहेगा।

विधायकों को छिपाने का खेल

मप्र में ज्योतिरादित्य सिंधिया के इस्तीफे के बाद अब भाजपा और कांग्रेस में शह-मात का खेल शुरू हो गया है। कांग्रेसी नेताओं ने दावा किया है कि बागी विधायक सीएम कमलनाथ के संपर्क में हैं और वापस लौटने को तैयार हैं। उधर, भाजपा ने भी बागी विधायकों को अपने साथ बनाए रखने और अपने विधायकों को तोड़ने से रोकने के लिए पूरी ताकत लगा दी है। इसी को देखते हुए अब विधायकों को छिपाने का खेल शुरू हो गया है। इस बीच भाजपा ने अपने विधायकों को किसी टूट-फूट से बचाने के लिए हरियाणा के मानेसर में शिफ्ट कर दिया था। उधर, कांग्रेस पार्टी ने भी अपने विधायकों को जयपुर भेजा था। भाजपा के खेमे में 105 विधायकों को 8-8 के ग्रुप में बांट दिया। हर ग्रुप पर नजर रखने के लिए एक ग्रुप लीडर बनाया गया है। दिल्ली पहुंचने पर विधायकों को अलग-अलग बसों से दिल्ली, मानेसर या गुरुग्राम में रखा जाएगा। वहीं कांग्रेस के 88 और 4 निर्दलीय विधायकों को विशेष विमान से जयपुर भेजा था, जहां वे एक रिसोर्ट में रखे गए थे। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने यहां विधायकों को रखने का पूरा इंतजाम किया था। वहीं कांग्रेस के 22 बागी विधायकों को बेंगलुरु में रखा गया है। बजट सत्र में शामिल होने के लिए जयपुर में ठहरे कांग्रेस के विधायक 15 मार्च को भोपाल आ गए। वहीं भाजपा के विधायक आधी रात के करीब भोपाल आए।

कमजोर कड़ी तलाशने में जुटी कमलनाथ सरकार

ज्योतिरादित्य सिंधिया के कांग्रेस छोड़ने के बाद उनके समर्थक मंत्री-विधायकों के सरकार के खिलाफ बागी हो जाने से जो संकट के बादल छाए हैं, उससे उबरने के लिए कमलनाथ सरकार भाजपा और बागी विधायकों की कमजोर कड़ी तलाशने में जुटी हुई है। मुख्यमंत्री कमलनाथ अपने कोर ग्रुप के साथ लगातार बैठकें कर रहे हैं। कभी बागी मंत्रियों को विधानसभा की सदस्यता से अयोग्य घोषित कराने की रणनीति बन रही है तो कभी बागी विधायकों को तोड़ने के लिए उनसे कई स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। भाजपा की कुछ कमजोर कड़ियों को तलाशने की भी कोशिशें हो रही है, जिनमें कुछ विधायकों को चिन्हित भी किया गया है।

कांग्रेस सूत्रों का कहना है कि 14 महीने की कमलनाथ सरकार पर कांग्रेस के मजबूत स्तंभ ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ छोड़ देने से जो संकट आया है, उससे उबरने के लिए मुख्यमंत्री कमलनाथ अपने कोर ग्रुप के साथ बैठक कर रणनीति तैयार कर रहे हैं। कोर ग्रुप में राज्यसभा सदस्य और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह और विवेक तन्खा प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। बेंगलुरु गए सिंधिया समर्थक कांग्रेस विधायकों में से कुछ को आकर्षक वादों के भरोसे वापस बुलाने के लिए कुछ लोगों को जिम्मेदारी दी गई। इनमें विधायकों के परिजनों या रिश्तेदारों, मित्रों के नजदीकियों का पता लगाने के लिए भी कुछ नेताओं को जिम्मेदारी सौंपी गई है।

संकट को भांप नहीं पाई कांग्रेस

कांग्रेस सूत्रों का कहना है कि सिंधिया ने राहुल गांधी और सोनिया गांधी से मुलाकात कर अपना पक्ष रखने की कोशिश की लेकिन कहा जाता है कि उन्हें समय नहीं दिया गया। यही नहीं सोनिया गांधी मध्यप्रदेश में सिंधिया की ताकत का अंदाजा लगाने में बुरी तरफ विफल रहीं। सीएम कमलनाथ और दिग्विजय सिंह को यह उम्मीद नहीं थी कि सिंधिया का खेमा इतना मजबूत है कि सरकार पर खतरा बन सकता है। प्रदेश कांग्रेस को विश्वास था कि सिंधिया ग्वालियर और गुना बेल्ट के 5 से अधिक विधायकों का समर्थन हासिल नहीं कर पाएंगे। इसी भरोसे के तहत कमलनाथ और दिग्विजय ने सिंधिया को वह कदम उठाने पर मजबूर किया, जो वह सामान्य परिस्थितियों में नहीं करते। दिग्विजय और कमलनाथ की जोड़ी ने गणित यह लगाया गया था कि यदि सिंधिया पार्टी छोड़ भी देते हैं तो वह सरकार नहीं गिरा पाएंगे। उनके साथ यदि कुछ विधायक जाएंगे भी तो इसकी भरपाई भाजपा के ऐसे कुछ विधायकों को तोड़कर पूरी कर ली जाएगी, जो कमलनाथ के संपर्क में हैं। हालांकि वास्तविकता में हुआ इसका उल्टा। सिंधिया के साथ 22 विधायकों ने इस्तीफा दे दिया है। इससे अब कांग्रेस की राज्य इकाई सदमे में है। कांग्रेस नेतृत्व को इस बात का भी विश्वास था कि सिंधिया बागी रुख के साथ कुछ समस्याएं पैदा कर सकते हैं, लेकिन पार्टी छोड़कर भाजपा में नहीं जाएंगे। लेकिन सिंधिया ने ऐसा सोचने

सीएम की कुर्सी पर रस्साकशी!

मप्र में शह और मात के खेल में बाजी किसके हाथ लगेगी, यह अभी साफ नहीं है। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने हाथ का साथ छोड़कर कमल का फूल खिलाने का जिम्मा अपने हाथों में लिया है। अब सवाल उठ रहे हैं कि मप्र में अगर भाजपा सरकार बनती है तो मुख्यमंत्री की कुर्सी किसे मिलेगी? सूत्रों के मुताबिक मुख्यमंत्री की कुर्सी के लिए केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर और पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का नाम सबसे आगे है। लेकिन पार्टी के वरिष्ठ नेता नरोत्तम मिश्रा से उन्हें चुनौती मिल रही है। हालांकि मप्र की राजनीति के जानकारों का कहना है कि सिंधिया कैंप के विधायकों की बगावत के बाद अगर कमलनाथ सरकार गिरती है तो चौथी बार शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री बन सकते हैं। वजह भी साफ है। मप्र में शिवराज के कद का नेता भाजपा में दूर-दूर तक नजर नहीं आता है। उनके पास सरकार चलाने का लंबा अनुभव है। लगातार तीन कार्यकाल उन्होंने सफलतापूर्वक पूरे किए हैं। उन्होंने ऐसे वक्त में मप्र की कमान संभाली थी जब उमा भारती जैसी कद्दावर नेता की बगावत के बाद भाजपा संकट से जूझ रही थी। ऐसे में उनकी राह में मोटे तौर पर कोई बड़ी बाधा नहीं दिखती है।

सरकार गिराने-बचाने के लिए वोटिंग का खेल

मध्यप्रदेश में सियासी घमासान चरम पर है। अब सबकी निगाहें आगामी विधानसभा सत्र के फ्लोर टेस्ट पर हैं। उधर, सिंधिया खेमे के जो 22 विधायक बेंगलुरु में हैं, यदि वे अधिक समय तक विधानसभा अध्यक्ष को इस्तीफे नहीं सौंपते या सत्र में शामिल नहीं होते, तो भाजपा के लिए मुश्किल होगा और इसका फायदा कांग्रेस को मिल सकता है। कमलनाथ सरकार को बचाने या फिर गिराने में फ्लोर टेस्ट में व्हिप का अहम रोल रहेगा। सिंधिया खेमे के 6 मंत्रियों सहित जिन 22 विधायकों ने इस्तीफे दिए हैं, उन्हें लेकर कांग्रेस पार्टी फ्लोर टेस्ट के पहले व्हिप जारी कर सकती है। राजनीतिक पार्टियां सदन में अक्सर किसी महत्वपूर्ण मुद्दे को बहस के बाद पास करवाने या उसे मंजूर करवाने के लिए अपने सदस्यों को व्हिप जारी करते हैं। व्हिप का उल्लंघन करने पर उन सदस्यों पर कार्रवाई होगी। दल-बदल विरोधी कानून लागू करने इन्हें अपात्र किया जा सकता है। ऐसे में सरकार रहे या जाए लेकिन इन 22 विधायकों को नुकसान हो सकता है। हालांकि गत दिनों 22 बागी विधायकों में से एक भी विधायक स्पीकर के सामने नहीं आए।

तीन तरह की स्थिति बन सकती है...

पहला - यदि बागी 22 विधायक विधानसभा अध्यक्ष के सामने नहीं आते हैं और न ही विधानसभा सत्र में आते हैं, तो कांग्रेस व्हिप उल्लंघन के आधार पर कार्रवाई कर सकती है।

दूसरा - यदि 22 बागी विधायक विधानसभा सत्र में आते हैं और कांग्रेस पार्टी के खिलाफ वोटिंग करते हैं, तब भी कांग्रेस व्हिप उल्लंघन का आधार बनाकर कार्रवाई करवा सकती है।

तीसरा - यदि सरकार बदलती है, तब इन 22 विधायकों के आने या क्रॉस वोटिंग दोनों सूरत में नए अध्यक्ष को फैसला लेना होगा।

ये है विधायक को अयोग्य घोषित किए जाने के आधार

दल-बदल विरोधी कानून के तहत किसी जनप्रतिनिधि को अयोग्य घोषित किया जा सकता है तब, जब निर्वाचित सदस्य स्वेच्छा से किसी राजनीतिक दल की सदस्यता को छोड़ देता है। यदि कोई निर्दलीय निर्वाचित सदस्य किसी राजनीतिक दल में शामिल हो जाता है। यदि किसी सदस्य द्वारा सदन में पार्टी के पक्ष के विपरीत वोट किया जाता है। यदि कोई सदस्य स्वयं को वोटिंग से अलग रखता है और छह महीने की समाप्ति के बाद यदि कोई मनोनीत सदस्य किसी राजनीतिक दल में शामिल हो जाता है। तो ऐसी स्थिति में विधायक को अयोग्य घोषित किया जा सकता है।

वालों को गलत साबित किया और पार्टी को होली के दिन असहज स्थिति का सामना करना पड़ा।

सिंधिया को ऐसे साधा

पिछले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के ग्वालियर चंबल संभाग में शानदार प्रदर्शन की वजह ज्योतिरादित्य सिंधिया थे। इसी वजह से भाजपा विधानसभा चुनाव में बहुमत से दूर रह गई। तभी से भाजपा आलाकमान, खासकर अमित शाह की सिंधिया पर नजर थी। लोकसभा चुनाव में एक समय तो 'मणिकर्णिका' फिल्म की हीरोइन रहीं कंगना रनौत को सिंधिया के सामने उतारने की रणनीति बनाई गई, लेकिन कंगना पीछे हट गईं। भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने बताया कि तभी से अमित शाह सिंधिया को लेकर रणनीति बनाने में जुट गए थे। हालांकि शाह ने चुनाव में सिंधिया को उनके ही निजी सचिव रहे केपी यादव से पटकनी दिला दी। लगभग 6 महीने पहले ही अमित शाह को शिवराज सिंह चौहान और नरेंद्र सिंह तोमर ने बताया कि सिंधिया कांग्रेस में अपमानित महसूस कर रहे हैं और बार-बार कह रहे हैं कि कमलनाथ-दिग्विजय की जोड़ी मेरी राजनीति खत्म कर रही है।

अमित शाह ने तुरंत भाजपा के इन दोनों नेताओं को सिंधिया को संदेश भेजने को कहा। तब से सिंधिया को इशारों में संदेश दिया जाने लगा। जब कांग्रेस ने सिंधिया को राज्यसभा सीट भी नहीं देने का मन बनाया तो शाह ने सोचा कि हथौड़ा गरम है, सही चोट किया जाए। चोट किया गया और हथौड़ा सही जगह लग गया। सबसे पहले शिवराज और सिंधिया की मुलाकात हुई। उस मुलाकात में शिवराज ने भरोसा दिलाया कि आपके सम्मान की रक्षा होगी। इसी बैठक में ज्योतिरादित्य सिंधिया की अमित शाह से बात कराई गई। बताया जाता है कि अमित शाह ने भी सिंधिया को भरोसा दिया। सिंधिया को बोला गया कि अपने गुट के भरोसेमंद विधायक अपने साथ जोड़ें। अमित शाह ने इस ऑपरेशन के लिए 4 नेताओं को कमान सौंपी। मध्य प्रदेश प्रभारी विनय सहस्त्रबुद्धे, शिवराज सिंह चौहान, धर्मेंद्र प्रधान और नरेंद्र सिंह तोमर। हालांकि नरेंद्र सिंह तोमर की राजनीति सिंधिया परिवार के विरोध की रही है, लेकिन शाह ने उन्हें समझाया कि मध्यप्रदेश के लक्ष्य के लिए सिंधिया को साथ लेना होगा, वरना एक-दो विधायकों के सहारे सरकार बनाना मुश्किल होगा। इसके बाद तोमर भी इस काम मे जुट गए। ज्योतिरादित्य से इन नेताओं की मुलाकात गुपचुप तरीके से होती रही। शिवराज एक सप्ताह से दिल्ली में डेरा डाले थे। गोपनीयता का ध्यान रखते हुए मध्यप्रदेश सरकार के गेस्ट हाउस में रुकने के बजाय वह हरियाणा सरकार के गेस्ट हाउस में रुके। वहीं पर ज्योतिरादित्य और शिवराज की मुलाकात हुई। नेताओं की बैठकें बिना सुरक्षा गार्ड के गोपनीय स्थानों पर होती रहीं। ज्यादातर जगह सिंधिया खुद ड्राइव कर जाते रहे। यह भी तय किया गया कि सारा ऑपरेशन खुद सिंधिया करें। पहला प्रयास गुरुग्राम में किया गया, लेकिन यहां विधायकों को लाने की भनक कांग्रेस नेताओं को लग गई। इसके बाद भाजपा नेताओं ने सबकुछ बारीकी से तय करना शुरू किया। असल में गुरुग्राम होटल मामले को सिर्फ सिंधिया देख रहे थे। उन विधायकों के पहुंचने के अगले दिन शेष विधायक आने थे, लेकिन बात लीक हो गई और सक्रिय दिग्विजय ने खेल खराब कर दिया। इसके चलते एक सप्ताह का और वक्त लगा और गोपनीयता पर फोकस किया गया। एक-एक विधायक को विश्वास में लिया गया।

कांग्रेस की लगातार चूक

अगर एक पखवाड़े के घटनाक्रम को देखें तो यह तथ्य सामने आता है कि मुख्यमंत्री कमलनाथ और उनकी सरकार लगातार चूक करती रही है। जब 22 विधायक पार्टी से असंतुष्ट होकर गायब हुए तभी सरकार को उनके परिजनों से मिलकर एफआईआर करानी चाहिए थी। साथ ही सरकार उन विधायकों को मनाने के लिए उनके परिजनों का सहारा ले सकती थी, लेकिन ऐसा नहीं किया गया। यही नहीं अगर सरकार निगम मंडलों में नियुक्तियां कर देती तो विधायक उसमें व्यस्त रहते। सरकार ने नगरीय निकाय और पंचायत चुनावों को टालकर भी खतरा

मोल ले लिया। अगर नगरीय निकाय और पंचायत चुनाव होते तो विधायक उसमें व्यस्त रहते और कम से कम एक वर्ष का समय इसी में गुजर जाता।

मत चूके चौहान

2018 में विधानसभा चुनाव हारकर शिवराज सिंह चौहान प्रदेश में लगातार चौथी बार भाजपा की सरकार बनाने का मौका चूक गए, लेकिन अब भाजपा के सामने फिर से सरकार बनाने का मौका है। गौरतलब है कि विधानसभा चुनाव हारने के बाद आलाकमान ने प्रदेश की अल्पमत कांग्रेस सरकार को अस्थिर करने की जिम्मेदारी केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, नरोत्तम मिश्रा आदि को सौंप दी। इन नेताओं ने अपनी टीम बनाकर कांग्रेस की कमजोर कड़ी की पड़ताल की और ज्योतिरादित्य सिंधिया की घेराबंदी करना शुरू कर दी। आज भाजपा नेताओं के सामूहिक प्रयास से ज्योतिरादित्य सिंधिया भाजपाई हो गए हैं। वहीं ज्योतिरादित्य सिंधिया समर्थक 22 विधायक भी कांग्रेस से बगावत कर चुके हैं। ऐसे में भाजपा के सामने प्रदेश में फिर से सरकार बनाने का मौका आ गया है। हालांकि कांग्रेस की सरकार को सत्ता से हटाने के लिए भाजपा के रणनीतिकार दिल्ली से लेकर भोपाल तक चौसर बिछा रहे हैं।

वहीं भाजपा की रणनीति का जवाब देने के लिए कांग्रेस भी जोर-आजमाइश कर रही है। लेकिन कांग्रेस ने अपने 14 माह के शासनकाल के दौरान जो गलतियां की हैं, वह उसकी राह में बाधा बन गई है। यह सभी जानते हैं कि कांग्रेस की सरकार शुरू से अल्पमत रही है। इसके बावजूद मुख्यमंत्री कमलनाथ सभी नेताओं को साधने में चूक करते रहे। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह अपने पुत्र को मंत्री बनाकर उसके लिए आगे की राजनीति का रास्ता मजबूत करने में जुटे रहे। भले ही इसके लिए उन्हें ज्योतिरादित्य सिंधिया को तिरस्कृत करना पड़ा हो। यह सभी जानते हैं कि सिंधिया शुरू से सरकार से नाराज रहे हैं। क्योंकि न तो उन्हें मुख्यमंत्री का पद मिला और न ही प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया। ऐसे में अगर मुख्यमंत्री कमलनाथ उनसे निरंतर संपर्क बनाए रखते और बैठकों में उन्हें शामिल करते तो यह स्थिति नहीं बनती। यही नहीं पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सुरेश पचौरी को भी साइडलाइन कर दिया गया है। इससे कांग्रेस में असंतोष लगातार बढ़ता चला गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि सिंधिया ने भाजपा का दामन थाम लिया।

कैसे पचा पाएंगे शिवराज?

माफ करो महाराज...हमारा नेता शिवराज! मध्यप्रदेश में भाजपा ने पिछला विधानसभा चुनाव इसी नारे के साथ लड़ा था। कांग्रेस के पाप गिनाते हुए शिवराज की उपलब्धियों का खूब बखान किया गया था। प्रदेश में भले ही कांग्रेस ने सरकार बना ली पर ज्योतिरादित्य बनाम शिवराज के तौर पर राजनीतिक रस्साकशी जारी रही। हालांकि आज हालात पूरी तरह बदल गए और उन्हीं महाराज ने हाथों में कमल थाम लिया है। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या पार्टी में महाराज की एंट्री को शिवराज आसानी से पचा पाएंगे। वैसे सियासत में कुछ भी स्थायी नहीं होता है। शायद यही वजह है कि सिंधिया के कांग्रेस छोड़ने पर जब उन्हें माफिया और गद्दार कहा जाने लगा तो शिवराज सिंह चौहान ने आगे आकर उनका बचाव किया। उन्होंने कहा, जब तक वहां थे तब तक महाराजा थे और आज माफिया हो गए?

भाजपा के कई नेताओं का घटेगा कद

पूर्व केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के कांग्रेस छोड़ने के बाद अब कांग्रेस और भाजपा के सारे समीकरण उलट-पुलट हो गए हैं। सिंधिया के भाजपा में जाने से सबसे ज्यादा असर भाजपा के ग्वालियर-चंबल के नेताओं पर पड़ेगा। उसके अलावा सिंधिया के साथ आने वाले हजारों कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को हुजूम भी भाजपा-कांग्रेस की जड़ें हिला देगा। यही नहीं सिंधिया के भाजपा में आने से पार्टी के कद्दावर नेताओं के कद पर भी असर पड़ेगा। जिन नेताओं के कद पर असर पड़ने की संभावना है उनमें शिवराज सिंह चौहान, नरेंद्र सिंह तोमर, नरोत्तम मिश्रा, प्रभात झा, यशोधरा राजे सिंधिया और जयभान सिंह पवैया प्रमुख हैं।

दिग्गी बनाम सिंधिया टसल, इतिहास से अब तक...

मध्यप्रदेश में जो सियासी घमासान मचा और कमलनाथ सरकार संकट में आ गई उसमें दो किरदारों ज्योतिरादित्य सिंधिया और दिग्विजय सिंह की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका हैं। अगर इतिहास उठाकर देखा जाए तो ग्वालियर और राघौगढ़ की यह टसल 240 साल पुरानी है। उस दौरान अंग्रेजों ने समझौता भी कराया था, लेकिन कांग्रेस आलाकमान इस मामले में भी असफल साबित हुआ। 1677 में राघौगढ़ को दिग्गी के पुरखे लालसिंह खिंची ने बसाया था और 1705 में राघौगढ़ का किला बना। उधर औरंगजेब की मौत के बाद मुगलों को खदेड़ते हुए मराठा जब आगे बढ़े तो इंदौर में होलकर घराने और ग्वालियर में सिंधिया घराने ने अपनी रियासत कायम करते हुए आसपास के छोटे और बड़े राजाओं को भी उसका हिस्सा बनाया, लेकिन राघौगढ़ से सिंधियाओं की ठनी और महादजी सिंधिया ने 1780 में दिग्विजय सिंह के पूर्वज राजा बलवंतसिंह और उनके बेटे जयसिंह को बंदी बना लिया। नतीजतन 38 सालों तक दोनों राज घरानों में टसल चलती रही और 1818 में ठाकुर शेर सिंह ने राघौगढ़ को बर्बाद किया, ताकि सिंधियाओं के लिए उसकी कोई कीमत न बचे, जब राजा जयसिंह की मौत हुई, तब अंग्रेजों की मध्यस्थता से ग्वालियर और राघौगढ़ के बीच एक समझौता भी हुआ, जिसमें राघौगढ़ वालों को एक किला और आसपास की जमीनें मिलीं और तब 1.4 लाख रुपए सालाना का लगान तय किया गया और राघौगढ़ से कहा गया कि सालाना अगर 55 हजार रुपए से ज्यादा लगान की वसूली होती है तो यह राशि ग्वालियर दरबार में जमा करनी होगी और यदि 55 हजार से कम लगान मिला तो ग्वालियर रियासत राघौगढ़ की मदद करेगा, लेकिन राघौगढ़ वाले कम लगान वसूलते रहे, जिसके चलते ग्वालियर दरबार ने दी जाने वाली मदद रोक दी और सारी संपत्ति भी जब्त कर ली। 1843 में अंग्रेजों ने फिर समझौता करवाया, जिसमें राघौगढ़ को ग्वालियर रियासत के अधीन लगान वसूलने की छूट दी गई। 1780 में शुरू हुई यह जंग आज 2020 तक बदस्तूर जारी है यानी 240 साल का इतिहास गवाह है, जो ग्वालियर और राघौगढ़ की अदावत को जाहिर करता है। यही कारण है कि कभी भी सिंधिया परिवार से दिग्गी परिवार की पटरी नहीं बैठी। मजे की बात यह है कि अंग्रेजों ने तो इन दोनों घरानों में दो बार समझौता करवाया, लेकिन कांग्रेस आलाकमान कभी भी समझौता कराने में सफल नहीं हो पाया।

बदहाली के लिए कौन जिम्मेदार?

आजादी मिलने के बाद एक समय 50 करोड़ लोगों के लिए खाद्यान्न की कमी के घनघोर संकट से जूझ रहा देश आज ऐसी स्थिति में है कि वह 1 अरब 33 करोड़ लोगों का पेट भरने में सक्षम होने के साथ ही कुछ निर्यात भी कर रहा है। देश के किसानों ने अपनी कड़ी मेहनत और लगन से खाद्यान्न उत्पादन को 1960-61 के 83 मिलियन टन से बढ़ाकर 2017-18 में लगभग 275.68 मिलियन टन कर दिया है। लेकिन देश को ऐसे संकट से निकालकर वर्तमान स्थिति में ले आने वाले किसान बदहाल ही रह गए हैं। देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में **किसानों की सफलता** के बावजूद वे अपनी उपज के लिए सही कीमत पाने में सफल नहीं हो पा रहे हैं। किसानों के लिए सरकारी एजेंसियां जैसे-भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) और राज्य सरकार की एजेंसियां धान और गेहूं की बिक्री के लिए उपलब्ध मुख्य प्लेटफार्मों में से एक हैं। हालांकि सरकार 2002-03 से 2017-18 के बीच 1340.02 मिलियन टन गेहूं उत्पादन के मुकाबले केवल 358.82 मिलियन टन (26.77 प्रतिशत) और 1557.75 मिलियन टन चावल के उत्पादन के मुकाबले 487.60 मिलियन टन चावल (31.30 प्रतिशत) की खरीद करने में सक्षम रही है।

अधिकांश राज्य सरकारों ने केंद्र सरकार के निर्देश पर 1954 से 1956 के बीच कृषि उपज विपणन समिति (एपीएमसी) कानून लागू किए थे। इस कानून की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि व्यापारी माल की कीमत का कभी खुलासा नहीं करते थे। इसके लिए **एक कूट भाषा** का इस्तेमाल करते थे। इन कानूनों में सामानों की खुली बोली लगाने और मूल्य का तत्काल भुगतान किसानों को करने का नियम था। एपीएमसी कानून का उद्देश्य आपूर्ति और मांग के बीच उचित समन्वय बनाना था। जिससे कृषि उपजों का सही मूल्य निर्धारण हो। लेन-देन में पारदर्शिता से भ्रष्टाचार और व्यापारियों और बिचौलियों के एकाधिकार पर प्रतिबंध लगे। इनका उद्देश्य जमाखोरी और मुनाफाखोरी पर लगाम लगाना था। लेकिन ऐसा अभी तक नहीं हो सका है।

पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री डॉ. सोमपाल शास्त्री ने इस पूरे तंत्र के ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि मंडियों का तंत्र मुगल काल के पहले से चला आ रहा था। ब्रिटिश सरकार ने इस तंत्र को अपने फायदे के लिए कठोर नियमों के दायरे के भीतर ले लिया। शहरों में लोगों को सस्ती कीमत पर अनाज उपलब्ध कराने के लिए अनाज की अनिवार्य वसूली का नियम लागू किया गया। हर साल ब्रिटिश सरकार फसलों का एक अधिकतम मूल्य घोषित कर देती थी। उसी कीमत के नीचे किसानों को फसल बेचने के लिए बाध्य किया जाता था। जमींदार, पटवारी और व्यापारियों का गिरोह किसानों के घरों से उसी कीमत पर अनाज की जबरिया वसूली करता था। इस काम में कभी-कभी पुलिस की भी मदद ली जाती थी। अनाज छुपाने वाले लोगों के लिए दंड का भी प्रावधान था। यह पूरी व्यवस्था कमोवेश 1965 तक चलती रही।

डॉ. सोमपाल शास्त्री का कहना है कि 1990 के दशक में अंत तक दिल्ली में स्थित आजादपुर मंडी में भी व्यापारी सामानों की खुली बोली नहीं लगाते थे। इसका सबसे बड़ा कारण है कि व्यापारियों को लाइसेंस लेने के लिए रिश्वत देनी पड़ती है। इसके बाद वे बेलगाम होकर किसानों को लूटते हैं। देशभर में एपीएमसी बाजार कई कारणों से किसानों के हित में काम नहीं कर रहे हैं। एपीएमसी बाजारों में व्यापारियों की सीमित संख्या के कारण प्रतिस्पर्धा कम है, व्यापारियों का कार्टेलाइजेशन, बाजार शुल्क के नाम पर अनुचित कटौती, कमीशन शुल्क की वसूली आदि कारणों से एपीएमसी अधिनियमों के प्रावधानों को उनके सही अर्थों में लागू नहीं किया गया है। बाजार शुल्क और कमीशन शुल्क कानूनी रूप से व्यापारियों पर लगाया जाता है, जबकि इसे किसानों की रकम में से घटाकर किसानों से वसूल किया जाता है।

● **ऋतेन्द्र माथुर**

देश में कृषि बाजारों की स्थिति खराब

देश के 23 राज्यों और 5 केंद्र शासित प्रदेशों में 6630 एपीएमसी बाजार हैं। जबकि बिहार, केरल, मणिपुर, मिजोरम और सिक्किम राज्यों में कोई एपीएमसी मार्केट नहीं है। इसके अलावा, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, दमन और दीव में कोई एपीएमसी बाजार नहीं है। देश के विभिन्न हिस्सों में विनियमित बाजारों के घनत्व में पंजाब में 116 वर्ग किमी से मेघालय में 11215 वर्ग किमी तक की भिन्नता है। देश में विनियमित कृषि बाजार का अखिल भारतीय औसत क्षेत्र 496 वर्ग किमी है। राष्ट्रीय किसान आयोग (2006) की सिफारिश के अनुसार एक विनियमित बाजार 5 किलोमीटर के दायरे में किसानों के लिए उपलब्ध होना चाहिए। राष्ट्रीय किसान आयोग द्वारा सुझाए गए मानदंडों को पूरा करने के लिए देश में 41,000 बाजारों की आवश्यकता होगी। एपीएमसी बाजारों में बुनियादी ढांचे और अन्य नागरिक सुविधाओं की स्थिति पूरे देश में खराब है और केवल 65 प्रतिशत बाजारों में ही शौचालय की सुविधा है। केवल 38 प्रतिशत बाजारों में किसानों के लिए रेस्ट हाउस है। केवल 15 प्रतिशत एपीएमसी मार्केट में कोल्ड स्टोरेज की सुविधा है, जबकि वजन सुविधा केवल 49 प्रतिशत बाजारों में उपलब्ध है। इन एपीएमसी बाजारों में बैंकिंग, इंटरनेट कनेक्टिविटी की सुविधा भी खराब है।

उपजों की बिक्री के लिए सुविधाजनक मंच की जरूरत

कृषि उपजों की बिक्री के लिए एक सुविधाजनक मंच बनाने की जरूरत है ताकि अंतिम उपभोक्ताओं तक किसानों की पहुंच बढ़ाई जा सके। इससे कृषि उपज के लिए सही मूल्य निर्धारण सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी और किसानों की आय बढ़ेगी। ऐसे वैकल्पिक बिक्री प्लेटफार्मों के निर्माण की आवश्यकता है, जो देश के अधिकांश किसानों के लिए आसानी से सुलभ हो सके। बड़ी संख्या में नए विनियमित थोक बाजारों का विकास न तो संभव और न ही आर्थिक रूप से व्यावहारिक हो सकता है। इसलिए मौजूदा ग्रामीण हाट-बाजारों को पूरी तरह से विकसित करने की जरूरत है।

कहावत है, रहा भी न जाए और सहा भी न जाए। कांग्रेसियों का नेहरू-गांधी परिवार के साथ रिश्ता कुछ ऐसा ही हो गया है, पर पिछले कुछ दिनों से बदलाव के संकेत नजर आने लगे हैं। जिस कांग्रेस में परिवार के खिलाफ बोलना कुफ्र समझा जाता था उसमें परिवार की नेतृत्व क्षमता पर सवाल उठ रहे हैं, दबी जुबान से ही सही।

संघर्षों में उलझी कांग्रेस

देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस इन दिनों दो संघर्षों में उलझी हुई है। दोनों समानांतर स्तर पर चल रहे हैं। पहला संघर्ष कांग्रेस के सामने अस्तित्व बचाने का है। दूसरा, कांग्रेस के प्रथम परिवार यानी नेहरू-गांधी परिवार का रुतबा कायम रखने या कहिए कि वीटो बनाए रखने का है। दोनों के केंद्र में सोनिया गांधी हैं। बहुत से कांग्रेसी 2004 और 2009 के लोकसभा चुनाव में जीत को सोनिया गांधी का चमत्कार मानते हैं। उन्हें उम्मीद है फिर चमत्कार होगा, पर सोनिया गांधी का **एक ही लक्ष्य है,** राहुल को रिलॉन्च करना। समस्या यह है कि रिलॉन्च के लिए न तो नया कलेवर है और न ही तेवर।

पार्टी का एक वर्ग परिवार के म्यूजिकल चेयर के खेल से तंग आ चुका है। संदेश साफ है कि राहुल गांधी को अध्यक्ष पद की फिर से जिम्मेदारी संभालना है तो संभालें और ठीक से काम करें, नहीं तो दूसरों के लिए रास्ता खाली करें। संदीप दीक्षित, अभिषेक मनु सिंघवी मिलिंद देवड़ा, शशि थरूर, मनीष तिवारी, सलमान सोज और संजय झा जैसे कई नेता अलग-अलग ढंग से नेतृत्व, विचारधारा, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रवाद, आर्थिक नीति जैसे मुद्दों पर स्पष्टता, संगठन में फैसले के तरीके, विकेंद्रीकरण और कार्य संस्कृति का मुद्दा उठा रहे हैं। इनमें से कई नेताओं ने यह भी संकेत दिया है कि पार्टी में पुराने नेता बदलाव नहीं होने दे रहे हैं। जो बदलाव की बात कर रहे हैं उनके सामने भी कोई स्पष्ट मार्ग नहीं है। वे बस चाहते हैं कि यथास्थिति बदले। जैसे चल रहा है वैसे नहीं चल सकता। इन नेताओं को भी अब यह लगने लगा है कि कांग्रेस का अस्तित्व खतरे में है, लेकिन पहले परिवार में सत्ता के बंटवारे की गुत्थी तो सुलझे।

राहुल गांधी ने करीब आठ महीने पहले यह कहकर अध्यक्ष पद छोड़ दिया था कि परिवार से बाहर का कोई व्यक्ति अध्यक्ष बने। परिवार को पहला झटका यही लगा कि कांग्रेसजनों ने इस फैसले को इस तरह **स्वीकार** किया जैसे इसी का इंतजार कर रहे हों। लंबी कसरत के बाद सोनिया गांधी को अंतरिम अध्यक्ष बना दिया गया और वे सहर्ष बन भी गईं। पार्टी की बागडोर परिवार के हाथ में ही रह गई। अब राहुल गांधी दोबारा अध्यक्ष बनने को तैयार भी हैं और नहीं भी। सोनिया गांधी राहुल के अलावा किसी और को अध्यक्ष के रूप में देखना नहीं चाहतीं। राहुल ने सबको भला बुरा कहकर अध्यक्ष पद तो छोड़ दिया, लेकिन सवाल यह है कि क्या बोलकर लौटें? पुरानी रवायत तो यह है कि कांग्रेसी रोएं, गिड़गिड़ाएं कि आइए हुजूर बचाइए, पर यहां तो कोई बुला ही नहीं रहा। 'राहुल लाओ, कांग्रेस बचाओ' का नारा भी नहीं लग रहा। कल्पना की दुनिया से निकलकर वास्तविकता की दुनिया से परिवार का पहली बार वास्ता पड़ा है।

प्रियंका गांधी का खेमा अलग जोर लगाए हुए है कि **भाई नहीं तो बहन।** अंदरखाने की खबरें यह भी हैं कि प्रियंका राज्यसभा में जाना चाहती हैं, पर सोनिया भेजना नहीं चाहतीं। जो भी हो, कांग्रेसी जानना चाहते हैं कि सोनिया गांधी ने राहुल के बारे में क्या तय किया और फिर राहुल

कांग्रेस के वोट बैंक पर नजर

आम आदमी पार्टी खुद भी इस बात को समझती है कि कांग्रेस से निराश लोगों ने उसकी जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह फॉर्मूला देश के अन्य राज्यों में आजमाया जा सकता है। राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस नेतृत्व के संकट से गुजर रही है। सोनिया गांधी फिलहाल पार्टी की अंतरिम राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं, लेकिन उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता इसलिए वह चाहती हैं कि फिर से राहुल गांधी ही पार्टी की बागडोर संभाल लें। राहुल इनकार कर चुके हैं और सोनिया गांधी परिवार के बाहर किसी व्यक्ति पर भरोसा नहीं करना चाहती हैं। राज्यों में भी जहां-जहां कांग्रेस की सरकार है वहां-वहां गुटबाजी चरम पर है।

ने उनके तय किए पर क्या तय किया? प्रियंका तय नहीं कर पा रहीं या अभी इतनी ताकतवर नहीं हुई हैं कि अपने बारे में तय कर सकें। सवाल यह भी है कि उनके बारे में कौन तय करेगा-मां या भाई? इस पूरे प्रसंग में कहीं कांग्रेस कार्यसमिति या अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का कोई जिक्र नहीं आता। यह हाल है देश की सबसे पुरानी पार्टी का जो सुबह-शाम जनतंत्र बचाने की गुहार लगाती है। मनीष तिवारी कह रहे हैं कि पचमढ़ी जैसे मंथन शिविर होने चाहिए, जिसमें विचार हो कि भाजपा से अलग कांग्रेस राष्ट्रवाद को कैसे परिभाषित करे? अभी तो यहां परिवार के सदस्यों की भूमिका पर घर में ही मंथन का दौर पूरा नहीं हो रहा।

कांग्रेस की हालत 2004 से 2013 के बीच की भाजपा जैसी हो गई है। दो लोकसभा चुनाव हारने के बाद भी भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व जगह खाली करने को तैयार नहीं था, क्योंकि यथास्थिति टूटने से कई लोग असुरक्षित महसूस करते। यह जानते हुए कि देश में मोदी लहर चल रही है, उन्हें स्वीकार करने को नेतृत्व तैयार न था। इस पर जनता ने कैडर पर दबाव डाला और कैडर ने नेताओं पर। इसके बावजूद आखिरी पल तक मोदी को रोकने की कोशिश हुई। कांग्रेस के मामले में तो जनता मुंह घुमाकर खड़ी है और कैडर परिवार से ऊब चुका है। जो बात देश को काफी समय से दिख रही थी और अब कांग्रेस कार्यकर्ताओं को भी दिखने लगी है वह परिवार के लोगों को नहीं दिख रही। इस पर दुष्यंत कुमार की गजल का एक शेर है- तुम्हारे पांव के नीचे कोई जमीन नहीं, कमाल ये है कि फिर भी तुम्हें यकीन नहीं।

पिछले छह साल में गांधी परिवार के लोगों के कामकाज के तरीके या सोच में कोई बदलाव नहीं आया है। सोनिया गांधी से जिनको बहुत उम्मीद है वे भी अच्छी तरह जानते हैं कि उनका स्वास्थ्य पहले जैसा नहीं रहा। आखिरी बार उन्होंने किस चुनाव में खुलकर प्रचार किया था, यह याद करना कठिन है। राहुल गांधी की हालत नौ दिन चले अढ़ाई कोस वाली है। कभी-कभी तो उनके मामले में अढ़ाई कोस भी ज्यादा लगता है। प्रियंका गांधी को राजनीति एक शगल की तरह नजर आती है। कभी मोटर साइकिल पर, कभी स्टीमर पर चलकर कहीं पहुंच जाना उन्हें क्रांति की तरह लगता है। राजनीति उनके बस की बात नहीं लगती। परिवार के नाम पर मिलने वाला डिविडेंड अब बंद हो गया है। यह बात उत्तर प्रदेश विधानसभा और लोकसभा चुनाव के नतीजे के बाद भी उन्हें समझ में नहीं आई। कांग्रेस का क्या होगा, इस सवाल का जवाब खोजने के लिए कांग्रेस के लोगों को पहले तय करना पड़ेगा कि इस परिवार का क्या होगा?

कांग्रेस पर मंडराता संकट

वर्ष 2022 में दिल्ली में होने वाले नगर निगम चुनाव को 'आप' जोर-शोर से लड़ेगी। इसके अलावा मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान जैसे राज्यों में भी पार्टी निकाय चुनावों में उतर सकती है। जाहिर सी बात है कि इन राज्यों में जैसे-जैसे आप मजबूत होती जाएगी, वैसे-वैसे कांग्रेस कमजोर होती जाएगी। उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में 'आप' की मजबूती का नुकसान सपा और राजद को भी उठाना पड़ेगा, लेकिन फिलहाल चुनौती कांग्रेस के समक्ष ज्यादा है। कांग्रेस के दिग्गज और अनुभवी नेता इस खतरे को महसूस कर रहे हैं, लेकिन पार्टी आलाकमान के सामने सच बोलने की हिम्मत भला किसमें है। विडंबना देखिए कि कई कांग्रेसी दिग्गज पार्टी की हार की समीक्षा करने की बजाय आप की जीत पर खुश होकर बयान दे रहे हैं। राजनीतिक हालात भी आज आप के अनुकूल हैं। दिल्ली में मिली प्रचंड जीत से कार्यकर्ता भी उत्साहित हैं। देशभर में केजरीवाल मॉडल की चर्चा हो रही है। सॉफ्ट हिंदुत्व वाला केजरीवाल स्टाइल ऑफ पॉलिटिक्स कामयाब होता भी नजर आ रहा है तो भला 'आप' देशभर में छाने की कोशिश क्यों ना करे।

परिवार पार्टी को चला भी नहीं रहा और हटने को भी तैयार नहीं है। लाख टके का सवाल है कि बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे? यही तो पूछा था, संदीप दीक्षित ने। यह प्रश्न अभी भी अनुत्तरित है।

दिल्ली विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी को मिली जीत के बाद अन्य राज्यों में आप के विस्तार से कांग्रेस की चिंता बढ़ गई है। जो हालत दिल्ली में आज कांग्रेस की है, उसी तरह की हालत देश के कई राज्यों में पैदा होने का खतरा उसके लिए बढ़ता जा रहा है। देशभर में कांग्रेस इसीलिए कमजोर होती चली गई, क्योंकि उसका वोट बैंक दूसरे दलों की तरफ खिसकता चला गया। उत्तर प्रदेश में एक जमाने की मजबूत पार्टी कांग्रेस ने सरकार बनाने के लिए मुलायम सिंह यादव को समर्थन दिया तो मुसलमान हमेशा के लिए सपा के साथ चले गए। बसपा के साथ मिलकर विधानसभा चुनाव लड़ा तो बचा-कुचा दलित मतदाता भी बसपा के पाले में चला गया है। बिहार में लालू प्रसाद की सरकार बचाने के लिए समर्थन दिया तो आज नतीजा यह है कि अपनी पार्टी के अस्तित्व को बचाए रखने के लिए उसी राजद से सीटों की मिन्नत करनी पड़ती है। महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश से लेकर तमिलनाडु तक, उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक कांग्रेस की यही कहानी रही है। ज्यादातर राज्यों में नए राजनीतिक दलों ने पहले कांग्रेस का साथ लेकर अपनी जमीन को मजबूत किया और फिर कांग्रेस के वोट बैंक को साधकर ही सरकार बनाई और बेहाल कांग्रेस अपनी हालत से दुखी होने के बजाय भाजपा की हार का जश्न मनाने में लगी है।

दिल्ली की प्रचंड जीत से उत्साहित आम आदमी पार्टी राष्ट्रीय विस्तार तो करना चाहती है, लेकिन इस बार तरीका 2014 से अलग होगा। पार्टी 2014 की गलती नहीं दोहराना चाहती है। रामलीला मैदान में शपथ ग्रहण के बाद अरविंद केजरीवाल का वहां मौजूद लोगों से यह कहना कि 'अपने गांव फोन करके बता देना कि आपका बेटा चुनाव जीत गया है, अब चिंता की कोई बात नहीं है' अपने आप में यह बताने के लिए काफी है कि अरविंद केजरीवाल अपनी पार्टी का विस्तार राज्य से बाहर भी करना चाहते हैं। यह कांग्रेस के लिए किसी खतरे से कम नहीं है। क्योंकि कांग्रेस के वोटर आप की तरफ आकर्षित हो रहे हैं।

● **दिल्ली से रेणु आगाल**

ब्रांड अमित शाह!

पिछले 60 महीनों से देश की राजनीति दो नेताओं नरेंद्र मोदी और अमित शाह के इर्द-गिर्द घूम रही है। अमित शाह इस समय राजनीति में एक ब्रांड बन गए हैं। जिस तरह उन्होंने देश में भाजपा के विस्तार की राजनीति की है, आज उसका अनुसरण कई नेता करना चाह रहे हैं। लेकिन वे उसके पास भी नहीं पहुंच पा रहे हैं। दरअसल शाह जो कुछ भी करते हैं उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

भारतीय राजनीति का यह दौर युवा नेताओं का है। लगभग हर पार्टी में युवा नेतृत्व आगे बढ़ रहा है। केवल भाजपा ही ऐसी पार्टी है जिसमें फिलहाल कोई युवा अन्य पार्टी के युवाओं की तरह नेतृत्व नहीं संभाले हुए है। लेकिन भाजपाई इस बात को सिरे से नकारते हैं। उनका कहना है कि अमित शाह भी तो अभी युवा ही हैं। दरअसल, इसके पीछे वजह यह है कि देश में वर्तमान समय में जो युवा नेता अपनी पार्टी में चर्चित हैं उनकी उम्र 40 से 50 के आसपास है। वहीं अमित शाह इनसे 5 साल बड़े यानी 55 साल के हैं। भाजपा के एक वरिष्ठ नेता कहते हैं कि भारतीय राजनीति में सियासी परिवारों की **विरासत** देखकर लगता है कि यहां इन परिवारों से संबंध रखने वाले नेता ही युवा कहला सकते हैं, फिर वो चाहे 40 साल के हों या फिर 50 के।

जैसे ही ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कांग्रेस छोड़कर भाजपा ज्वॉइन की, लोगों ने कांग्रेस पार्टी की अपने युवा नेताओं को जोड़कर न रख पाने के लिए आलोचना करनी शुरू कर दी। पुराने लोग पार्टी में नए लोगों के लिए जगह नहीं छोड़ रहे हैं, कइयों ने कहा। लोगों ने सचिन पायलट के ट्वीट के बाद कयास लगाने शुरू कर दिए कि एक और युवा नेता भी कांग्रेस का साथ छोड़ेगा। उधर हरियाणा के युवा नेता दीपेंद्र सिंह हुड्डा के मिजाज भी राज्यसभा सीट को लेकर अलग नजर आ रहे थे।

चारों ओर युवा नेताओं का डंका बज रहा है लेकिन भारत देश में युवा नेता होने का मतलब क्या होता है? और क्या हम देश के गृहमंत्री अमित शाह को युवा नेता कह सकते हैं? क्योंकि वो सिंधिया और राहुल गांधी से महज **छह साल** ही तो बड़े हैं। भारतीय राजनीतिक डिस्कोर्स में सियासी परिवारों की विरासत देखकर लगता है कि यहां इन परिवारों से संबंध रखने वाले नेता ही युवा कहला सकते हैं, फिर वो चाहे 40 साल के हों या फिर 50 के। जैसे ज्योतिरादित्य सिंधिया, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, सचिन पायलट, अखिलेश यादव और उमर अब्दुल्ला। या फिर हो सकता है जिनके चेहरे जवां दिखते हों, शरीर से फिट लगते हों, इंग्लिश बोलने की अद्भुत क्षमता रखते हों, खाने-पीने के मामले में विशेषज्ञ हों और आज के जमाने में 'वोक पर्सनैलिटी' हो तो वही युवा नेता की कैटेगिरी में आ सकता है। लेकिन अमित शाह इस पॉप्युलर छवि के ढांचे में फिट नहीं बैठते हैं। चाहे उनके वजन की बात हो या उनके सिर से उड़ गए बालों की लेकिन फिर वो 55 की उम्र में भी देश के सबसे युवा और सबसे सक्सेसफुल लीडर कहे जा रहे हैं।

भाजपा के कार्यकर्ता शाह की बातें सम्मानपूर्वक सुनते हैं। शाह को इलेक्शन मशीन के तौर पर जाना जाता है। कहा जा रहा है कि अमित शाह की बॉयोग्राफी 'अमित शाह एंड द मार्च ऑफ द बीजेपी' कार्यकर्ताओं और नेताओं द्वारा जमकर खरीदी गई है। कई नेताओं ने किताब का हिंदी संस्करण अपनी बीवियों के लिए भी खरीदा है। भाजपा के कई लोगों से बात करने पर पता चलता है कि वो शाह की इस किताब को भारतीय राजनीति की बाइबिल के तौर पर देखते हैं। शाह किसी भी दूसरे 'युवा' नेता की तरह अहंकारी हैं, अति आत्मविश्वासी (वोटिंग होने से पहले ही जीत की घोषणा कर देना) हैं और ज्यादातर चीजों को नकारते नजर आते हैं। गत दिनों संसद में दिल्ली के दंगों पर दिए गए उनके जवाब। अगस्त 2019 में जम्मू कश्मीर राज्य से आर्टिकल-370 खत्म करने के दिन संसद में उन्होंने सीना चौड़ा करते हुए कहा था, 'कश्मीर के लिए हम जान दे देंगे, क्या बात करते हैं।' 370 पर विपक्ष संसद में दलीलें भी पेश नहीं कर पाया। विपक्ष को अब जान जाना चाहिए को वो एक युवा नेता का ही सामना कर रहा है।

राजनीति का सबसे ताकतवर चेहरा

इस बात से भी नहीं नकारा जा सकता है कि ब्रांड अमित शाह हमारे समाज में छा गए हैं। कोई भी थोड़े प्रपंच करके या चालाकी से कुछ हासिल कर लेता है तो वह खुद को अमित शाह समझने लगता है। अमित शाह पूरी सरकार, एनडीए और भाजपा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बाद सबसे ताकतवर और अहम चेहरा हैं। यह बात तब और पुख्ता हुई, जब उन्हें पहली बार मंत्रिमंडल में गृहमंत्री के तौर पर शामिल किया गया। ऐसे में वह सरकार के साथ ही देश में भी पीएम के बाद सबसे शक्तिशाली सियासी नाम माने जा रहे हैं।

अमित शाह खुद को यूथ आइकन के तौर पर स्थापित करने में कामयाब रहे हैं जो पुराने खयालात और मॉडर्निटी एक साथ लेकर चल रहे हैं। संक्षेप में कहें तो एक आदर्श बालक की तरह। कपड़ों और अपने शब्दों के चयन और अपनी पसंद द्वारा वो खुद को किसी वैदिक छात्र की तरह पेश करते हैं। जो भारत के सुनहरे अतीत (हिंदू अतीत) को बार-बार दोहराता रहता है। अपने परिवार के जरिए, वो किसी आधुनिक फैमिली मैन की छवि बनाने में भी नहीं चूकते। पत्रकार राजदीप सरदेसाई अपनी किताब '2019: हाऊ मोदी वन इंडिया' में बताते हैं कि अमित शाह ने उन्हें बताया कि वो परिवार के साथ बिताया वक्त मिस करते हैं। राजनीति में व्यस्तता के चलते वो परिवार के साथ छुट्टियां मनाने नहीं जा पाते। भारत में राजनेताओं से अपेक्षा की जाती है कि वो राजनीति के अलावा कोई अलग जीवन न बिताएं।

सांस्कृतिक तौर पर भी वो भारत के रूढ़िवादी युवाओं को किसी खतरे की तरह नजर नहीं आते, बल्कि वो लिबरल और वोक जनरेशन के लोगों के लिए एक थ्रेट की तरह दिखाई देते हैं। लेकिन जैसा कि कोई फिल्मी अंदाज में कह सकता है- आप अमित शाह को पसंद करें या नापसंद, आप उन्हें इग्नोर नहीं कर सकते। वो हर जगह हैं- सोशल मीडिया से लेकर देश की पार्लियामेंट तक। साफतौर पर वो देश के युवाओं के एक वर्ग का नेतृत्व कर रहे हैं।

आज राजनीति के चाणक्य बन चुके अमित शाह का किसी जमाने में राजनीति से दूर-दूर तक का नाता नहीं था। उनका जन्म प्रसिद्ध व्यापारी अनिलचंद्र शाह के घर हुआ था। हालांकि, वह बचपन में ही राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ से जुड़ गए थे। स्कूली दिनों में वो अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के नेता बन गए। जबकि ग्रेजुएशन के समय शाह संघ के आधिकारिक कार्यकर्ता थे। उन्हें पहला बड़ा राजनीतिक मौका 1991 में मिला, जब लालकृष्ण आडवाणी को गांधीनगर संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ना था। उनके चुनाव प्रचार की जिम्मेदारी अमित शाह पर थी। इसके बाद 1996 में अटल बिहारी वाजपेयी के चुनाव प्रचार का जिम्मा भी उन्होंने ही संभाला था। मोटा भाई ने सबसे पहले 1997 में गुजरात की सरखेज विधानसभा सीट से उप चुनाव जीता। इस तरह उनके सक्रिय राजनीतिक जीवन की शुरुआत हुई। करीब छह साल बाद वो गुजरात सरकार में गृहमंत्री बन गए और नरेंद्र मोदी के राज्य की राजनीति से केंद्र की राजनीति में कदम रखने के बाद वह भाजपा के सर्वेसर्वा बन गए हैं।

सियासी गलियारे में भले ही शाह को चाणक्य कहा जाता है लेकिन कई बार ऐसा भी हुआ है जब उनका प्लान फेल रहा। ताजा उदाहरण दिल्ली, महाराष्ट्र और झारखंड का है। महाराष्ट्र में तो उन्होंने मुख्यमंत्री भी बनवा दिया, लेकिन दांव

क्या बिस्वा भाजपा के अगले शाह साबित हो पाएंगे

भाजपा को जल्द ही एक ऐसा नेता खोजना पड़ेगा जो अमित शाह की जगह ले सके, जो कि कुशल चुनावी रणनीतिकार हो और पूरे देश में चुनाव के लिए रणनीति का प्रबंधन कर सके। यह स्पष्ट हो रहा है कि जेपी नड्डा वो नाम नहीं है जो ये कर सके। वो सिर्फ अमित शाह की जगह लेने वाले हो सकते हैं। अगर भाजपा की मातृत्व विचारधारा वाला संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और खुद पार्टी अगर चाहे तो असम के हिमंत बिस्वा सरमा ऐसे व्यक्ति हो सकते हैं। हिमंत बिस्वा सरमा बिल्कुल अमित शाह की तरह ही हैं- राजनीति में जोड़-तोड़ करने वाले, कठोर, चतुर, मेहनती और सत्ता पाने के लिए ललक वाले। सरमा कुछ मोदी की तरह भी हैं- जो अपने क्षेत्र में लोकप्रिय भी हैं।

काम नहीं आया। महाराष्ट्र में जो कुछ भी हुआ वह करीब डेढ़ साल पहले यानी मई, 2018 में कर्नाटक में भी हो चुका था। दरअसल 222 सीटों वाली कर्नाटक विधानसभा के चुनाव में भाजपा को 104 सीटें मिली थीं जो बहुमत के लिए जरूरी 112 के आंकड़े से 8 कम थीं। भाजपा इस उम्मीद में थी कि कांग्रेस और जद (एस) के कुछ विधायकों को अपने पाले में लाकर उनसे इस्तीफा दिलवाकर वह सरकार बनाने में कामयाब हो जाएगी। सबसे बड़ी पार्टी होने के नाते राज्यपाल वजुभाई वाला ने भाजपा को सरकार बनाने का न्यौता दे दिया। 17 मई, 2018 को येदियुरप्पा ने सीएम पद की शपथ ली। इसके खिलाफ कांग्रेस और अन्य दल सुप्रीम कोर्ट पहुंच गए। कोर्ट ने येदियुरप्पा को उसी दिन बहुमत साबित करने का निर्देश दिया। सबकी नजरें विधानसभा पर थीं लेकिन फ्लोर टेस्ट से पहले ही येदियुरप्पा ने विधानसभा में अपने भाषण के दौरान इस्तीफे का ऐलान कर दिया। यही नहीं गुजरात में भी उनकी रणनीति फेल हुई थी। राज्यसभा चुनाव 2017 में गुजरात की 3 सीटों में से 2 पर भाजपा के अध्यक्ष अमित शाह और केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी जीते लेकिन तीसरी सीट पर कांग्रेस के अहमद पटेल विजयी हुए। भाजपा कुछ कांग्रेस विधायकों को अपने पाले में खींचने में कामयाब हो गई और आखिर तक सस्पेंस बना रहा कि अहमद पटेल और भाजपा के बलवंत राजपूत में से कौन जीतेगा। भाजपा अपने प्लान में तकरीबन कामयाब हो चुकी थी लेकिन एक तकनीकी पेंच ने उसका बना-बनाया खेल बिगाड़ दिया। दरअसल कांग्रेस के 2 बागी विधायकों के वोट को लेकर विवाद खड़ा हो गया। दोनों ने अपना वोट डालने के बाद भाजपा के एक नेता को बैलेट दिखा दिया था कि उन्होंने किसको वोट दिया। इस पर कांग्रेस ने हंगामा कर दिया। कांग्रेस ने कहा कि दोनों ने वोट की गोपनीयता का उल्लंघन किया है। कांग्रेस चुनाव आयोग पहुंच गई। वोटों की गिनती रुक गई। आधी रात दोनों दलों के नेता चुनाव आयोग पहुंच गए। आखिर में चुनाव आयोग ने दोनों विधायकों के वोट को खारिज कर दिया और अहमद पटेल चुनाव जीत गए।

उत्तराखंड में भी 2016 में भाजपा को मात खानी पड़ी थी। दरअसल राज्य में हरीश रावत के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार थी। कांग्रेस के कुल 35 विधायकों में से 9 विधायकों ने रावत के खिलाफ बगावत का झंडा बुलंद कर दिया। इसी बीच राज्यपाल ने केंद्र को रिपोर्ट भेज दी कि राज्य में संवैधानिक तंत्र नाकाम हो गया है, लिहाजा राष्ट्रपति शासन लगाया जाए। इसके बाद नरेंद्र मोदी कैबिनेट ने राष्ट्रपति शासन लगाने संबंधी सिफारिश तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के पास भेज दी। राष्ट्रपति मुखर्जी ने सिफारिश मान ली और वहां राष्ट्रपति शासन लग गया। मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा तो कोर्ट ने हरीश रावत सरकार को विधानसभा में बहुमत साबित करने का आदेश दिया जो रावत सरकार ने साबित कर दिया। इस तरह उत्तराखंड में रावत सरकार बहाल हो गई और राष्ट्रपति शासन हट गया।

● इन्द्र कुमार

इश्क से हारी हिंसा

छत्तीसगढ़ के नक्सली प्रभावित जिले दंतेवाड़ा में पुलिस ने नक्सलियों के खिलाफ इश्क को हथियार बना लिया है। नतीजा यह निकल रहा है कि इश्क के आगे हिंसा हार रही है। प्रेमी-प्रेमिकाओं के लव लेटर पढ़कर नक्सली सरेंडर कर रहे हैं और समाज की मुख्य धारा से जुड़ रहे हैं। ताजा मामले में एक लाख की ईनामी महिला नक्सली जयमती ने पुलिस के सामने सरेंडर किया है। जयमती को अपने प्रेमी लक्ष्मण का खत मिलने के बाद उसने सरेंडर का फैसला लिया। दंतेवाड़ा पुलिस की अनूठी पहल के जरिए चार अन्य नक्सलियों को भी सरेंडर करवाया जा चुका है।

दंतेवाड़ा एसपी अभिषेक पल्लव बताते हैं कि जयमती खतरनाक नक्सलियों में से एक है। इस पर एक लाख रुपए का ईनाम तक रखा हुआ था। इसके पास नक्सलियों के लिए प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी थी। यह युवक-युवतियों को नक्सली बनाने का काम कर रही थी। 20 फरवरी 2020 को जयमती को गुप्त सूत्रों के जरिए उसके प्रेमी लक्ष्मण का लव लेटर भिजवाया गया। पहले लक्ष्मण भी नक्सली था, मगर लक्ष्मण नक्सलवाद का रास्ता छोड़कर पुलिस में शामिल हो गया था। प्रेमी लक्ष्मण ने प्रेमिका जयमती को खत में लिखा कि वह सरेंडर करने के बाद अच्छी जिंदगी जी रहा है। उसकी तमन्ना है कि जयमती भी उसके साथ खुशहाल जिंदगी बिताए। प्रेमी के खत का जयमती पर असर हुआ और उसने नक्सलवादियों के नियमों के खिलाफ जाकर शादी और बच्चों वाली जिंदगी चुनना बेहतर समझा। नक्सली शादी और बच्चों वाली जिंदगी के खिलाफ होते हैं।

एसपी अभिषेक पल्लव के मुताबिक प्रेमी लक्ष्मण का लव लेटर मिलने के बाद नक्सली जयमती ने जवाबी खत भेजा और सरेंडर करने की इच्छा जताई। साथ ही उसने आशंका जताई कि नक्सली उस पर विशेष नजर रख रहे हैं। सरेंडर करने के प्रयास में उसकी जान को खतरा हो सकता है। जयमती ने सरेंडर के लिए अपने खत में 7 मार्च 2020 का दिन और जगह का उल्लेख किया, जिस पर पुलिस ने सुरक्षा के पुख्ता बंदोस्त करके उसका सरेंडर करवाया और अपने साथ लेकर आई। दंतेवाड़ा एसपी अभिषेक पल्लव कहते हैं कि एक नक्सली ने पूर्व में सरेंडर किया था। वह एक नक्सली महिला से प्यार करता था, जो एनकाउंटर में मारी गई। इसके बाद से वह दुखी रहने लगा। ऐसे में पुलिस को लगा कि नक्सलियों की हिंसा पर इश्क भारी पड़ सकता है। वैलेंटाइन 2020 पर दंतेवाड़ा पुलिस ने पता लगाया कि कौन-कौन से नक्सली महिला-पुरुष अब सामान्य जिंदगी जी रहे हैं। ऐसे चार जोड़े मिले। उनसे खत लिखवाए गए और खत में हिंसा छोड़कर खुशहाल जिंदगी की अपील की गई, जिसका सकरात्मक परिणाम सामने आए हैं।

यही नहीं करीब आधा दर्जन मुठभेड़ व कई निर्दोष ग्रामीणों की हत्या में शामिल सुकमा जिले के गादीरास थानाक्षेत्र के मानकापाल की रहने वाली देवे सोढ़ी ने सीमावर्ती प्रदेश के मलकानगिरी पुलिस अधीक्षक के समक्ष आत्मसमर्पण किया है। कई सालों से नक्सल संगठन में सक्रिय रही देवे सोढ़ी पर 4 लाख रुपए का ईनाम घोषित था। देवे सोढ़ी मुख्य रूप से दंतेवाड़ा जिले के कटेकल्याण के मारजूम में हुई फायरिंग व मथली, चिकपाल, करकम में हुई मुठभेड़ में शामिल थी। इसके अलावा दो निर्दोष ग्रामीणों को मौत के घाट भी उतारने में मुख्य भूमिका थी। पुलिस का दावा है कि नक्सल संगठन में महिलाओं से हो रहे अत्याचार से तंग आकर व शासन की योजना से प्रभावित होकर उसने पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया है।

आत्मसमर्पण करने वाली महिला नक्सली **देवे सोढ़ी** कई घटनाओं में शामिल थी, जिसमें प्रमुख रूप से जुलाई 2017 में दंतेवाड़ा जिले के कटेकल्याण थानाक्षेत्र के मारजूम में हुई मुठभेड़ में यह शामिल थी। 2018 में दंतेवाड़ा के चुरनार के मुठभेड़ में भी यह शामिल थी। इसके अलावा मथली, मोपद के कई घटनाओं में शामिल रही। दो निर्दोष ग्रामीणों की हत्या में भी इस महिला नक्सली की भूमिका रही। आत्समर्पण करने वाली महिला देवे सोढ़ी ने बताया कि नक्सल संगठन में महिलाओं पर कई अत्याचार होते है। रोज-रोज **अत्याचार से तंग आकर** मैंने सरेंडर करने का निर्णय लिया। साथ ही शासन की अच्छी योजना का भी लाभ लेने के लिए यह निर्णय लेने में मदद मिली और संगठन छोड़ पुलिस के समक्ष सरेंडर किया है। मुख्यधारा से जुड़कर देश का विकास करने में मदद करने की बात की।

● **रायपुर से टीपी सिंह**

ड्रग्स के कारोबार में नक्सली कदम

दिल्ली दंगों के आरोपी शाहरुख को पनाह देने के मामले में प्रकाश में आए बरेली के ड्रग्स कारोबारियों की जांच में जुटी उप्र एसटीएफ को यह जानकारी मिलने पर तमाम एजेंसियों के कान खड़े हो गए हैं। पता चला है कि वे न सिर्फ बांग्लादेश व म्यांमार के बॉर्डर से ड्रग्स की खेप देश के भीतर तस्करी करवा रहे हैं, बल्कि इसे उप्र समेत देश के विभिन्न हिस्सों में कैरियर के जरिए सप्लाई कर रहे हैं। ड्रग्स तस्करों और नक्सलियों के इस नए 'गठबंधन' से निपटने के लिए एसटीएफ नई रणनीति पर विचार कर रही है। सूत्रों के मुताबिक, जांच में पता चला है कि झारखंड, छत्तीसगढ़, बिहार व उड़ीसा के कुछ हिस्सों में एक्टिव नक्सलवादियों की आमदनी पर केंद्रीय खुफिया एजेंसियों व सुरक्षा एजेंसियों ने करीब-करीब पूरी तरह से रोक लगा दी है। अब नक्सलवादी न तो अपने प्रभाव वाले क्षेत्रों में व्यापारियों या ठेकेदारों से लेवी वसूल पा रहे और न ही पाकिस्तानी खुफिया एजेंसियों से ही उन्हें कोई मदद नहीं मिल पा रही है। लिहाजा, सुरक्षा एजेंसियों से उन्हें दोहरी मार का सामना करना पड़ रहा है। यहां तक कि नक्सलियों को हथियार व गोला बारूद जुटाने में भी लाले पड़ गए थे। लिहाजा, रकम जुटाने के लिए नक्सलियों ने ड्रग्स तस्करी के धंधे में कदम रख दिया है।

जमीन में समाधि

राजस्थान में किसानों ने भूमि अधिग्रहण को लेकर सरकार के खिलाफ आंदोलन तेज कर दिया है। सूबे की राजधानी जयपुर के नींदड़ में 51 किसानों ने आंदोलन करने के लिए जमीन समाधि का रास्ता अपनाया है। किसानों ने जमीन में गड्ढा खोदकर गर्दन तक समाधि लेकर आंदोलन करने का तरीका तीसरी बार अपनाया है। इससे पहले जनवरी में किसानों ने जमीन समाधि आंदोलन शुरू किया था, लेकिन वार्ता के बाद आंदोलन को स्थगित कर दिया था। किसानों का आरोप था कि सरकार अपने वादे को पूरा नहीं कर रही थी, जिसकी वजह से फिर से आंदोलन शुरू करना पड़ा है। किसानों की मांग है कि सरकार संशोधित भूमि अधिग्रहण कानून के तहत जमीन का अधिग्रहण करें, न कि पुराने भूमि अधिग्रहण कानून के तहत।

किसानों का आरोप है कि जब कांग्रेस राजस्थान की सत्ता से बाहर थी, तब मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और सचिन पायलट ने उनकी मांगों का समर्थन किया था। हालांकि सूबे में सरकार बनने के बाद गहलोत सरकार उनकी मांगों को नजरअंदाज कर रही है। नींदड़ बचाओ युवा किसान संघर्ष समिति के संयोजक डॉ. नागेंद्र सिंह शेखावत का कहना है कि हमारा यह आंदोलन पिछले 10 साल से चल रहा है और जहां तक जमीन समाधि सत्याग्रह की बात है, तो हमको मजबूरन होकर तीसरी बार जमीन समाधि सत्याग्रह पर बैठना पड़ा है। हमारी सरकार से यही अपील है कि हमारी जमीनों का अधिग्रहण साल 1874 के भूमि अधिग्रहण कानून के तहत नहीं, बल्कि नए संशोधित कानून के तहत किया जाए।

शेखावत का कहना है कि जब हमारी जमीनों का अधिग्रहण किया जा रहा था, तभी संशोधित कानून 2013 पास हो गया। हमारा सरकार से यही कहना है कि जब देश में संशोधित भूमि अधिग्रहण कानून बन गया है, तो ऐसी क्या मजबूरी है कि सरकार पुराने कानून के तहत ही इस जमीन का अधिग्रहण करना चाहती है। सरकार को किसानों के हितों को देखते हुए संशोधित कानून के तहत जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया शुरू करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर इसमें कोई कानूनी अड़चन भी आती है, तो उसका भी सरकार ही समाधान निकाले। यह सरकार की जिम्मेदारी है कि वो किसानों के हितों को सर्वोपरि रखे। जब साल 2017 में प्रदेश में वसुंधरा राजे के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार थी, तब भी किसानों ने जयपुर विकास प्राधिकरण के जमीन अधिग्रहण करने के प्रयास के खिलाफ आंदोलन करने के लिए जमीन समाधि आंदोलन किया था।

किसान कैलाश बोहरा ने कहा कि सरकार पुराने कानून के तहत हमारी जमीन का अधिग्रहण कर रही है, जिसके खिलाफ हम यहां विरोध पर बैठे हैं। हम पिछले 10 साल से लगातार लोकतांत्रिक तरीके से आंदोलन कर रहे हैं।

नींदड़ बचाव संघर्ष समिति के नेतृत्व में यह आंदोलन हो रहा है। इस समिति के अध्यक्ष नागेंद्र शेखावत बताते हैं, 'जयपुर डेवलपमेंट अथॉरिटी आवासीय योजना के लिए नींदड़ के किसानों की जमीन ले रही है। किसानों की यह मांग है कि अथॉरिटी इनकी जमीन पुराने भूमि अधिग्रहण कानून के तहत न लेकर 2013 में लागू हुए नए भूमि अधिग्रहण कानून के तहत ले।' साथ ही किसानों की मुआवजे को लेकर भी मांग है। अथॉरिटी आवासीय योजना के लिए किसानों से जमीन लेकर 25 प्रतिशत विकसित भूमि देने की बात कर रही है, लेकिन इस विकसित भूमि का पट्टा पाने के लिए किसानों को मोटी रकम देनी होगी। किसानों की मांग है कि एक रुपए टोकन मनी में उन्हें विकसित भूमि का पट्टा दिया जाए। नागेंद्र शेखावत बताते हैं, जयपुर डेवलपमेंट अथॉरिटी ने 2010 में जयपुर से 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित नींदड़ गांव में आवासीय योजना के लिए जमीन अधिग्रहित की थी। यह जमीन उस वक्त के जमीन अधिग्रहण कानून के तहत ली गई। इसके बाद 2013 में नया जमीन अधिग्रहण कानून लागू हुआ तो नींदड़ गांव के किसान आंदोलन करने लगे। इससे पहले भी नींदड़ गांव के किसान जमीन समाधि सत्याग्रह करते आए हैं और प्रशासनिक अधिकारियों के आश्वासन के बाद इसे खत्म भी किया है। किसानों के इस आंदोलन के बारे में जयपुर डेवलपमेंट अथॉरिटी के डिप्टी कमिश्नर मनीष कुमार बताते हैं- आवासीय योजना के लिए 58 प्रतिशत जमीन किसानों ने खुद ही समर्पित कर दी है। 2010 से लेकर 2013 के बीच यह जमीन किसानों ने दी है। आंदोलन करने वाले किसान हाईकोर्ट गए थे जहां कोर्ट ने अधिग्रहण को सही माना है। इसके बाद किसान हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती देने के लिए सुप्रीम कोर्ट भी गए। सुप्रीम कोर्ट में भी यह साबित हुआ कि अथॉरिटी द्वारा जमीन का अधिग्रहण सही है।

● **जयपुर से आर.के. बिन्नानी**

आवासीय योजना के लिए 327 हैक्टेयर जमीन की जरूरत

'जयपुर डेवलपमेंट अथॉरिटी का आवसीय योजना के लिए 327 हेक्टेयर जमीन लेने का प्रस्ताव था। इसमें से करीब 204 हेक्टेयर जमीन किसानों द्वारा सरेंडर की जा चुकी है और बाकी 123 हेक्टेयर जमीन अभी जेडीए द्वारा ली जानी है। ऐसे में यह तो साफ होता है कि ज्यादातर किसान अपनी जमीन जेडीए को सरेंडर कर चुके हैं। यही सवाल जब नागेंद्र शेखावत से पूछा गया तो उनका आरोप है कि जेडीए ने बहला फुसलाकर और दबाव बनाकर किसानों से जमीन सरेंडर कराई है। वो कहते हैं, 'सरेंडर करने वाले कई किसान भी हमारे साथ हैं। उन्हें अब महसूस हो रहा है कि उनके साथ धोखा हुआ है।' वहीं, डिप्टी कमिश्नर मनीष कुमार का कहना है कि 'जिन किसानों ने जमीन हमें दे दी है वो पूछते हैं कि आवासीय योजना कब शुरू होगी क्योंकि आवासीय योजना से किसानों को फायदा ही है। हम जो 25 प्रतिशत विकसित भूमि (5 प्रतिशत व्यावसायिक और 20 प्रतिशत आवासीय) दे रहे हैं उसका दाम दो करोड़ से ढाई करोड़ तक है। एक बीघे जमीन के लिए यह मुआवजा अच्छा है।'

दोराहे पर खड़ी बसपा

बात ज्यादा पुरानी नहीं है। मध्य जनवरी की गुनगुनी धूप और सर्द हवाओं की ठिठुरन के बावजूद समाजवादी पार्टी के लखनऊ मुख्यालय में जबरदस्त सियासी गरमी दिख रही थी। किसी रैली जैसे माहौल में उत्साही कार्यकर्ताओं की भीड़ के बीच मंच से समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष आंखलेश यादव ने बसपा के दिग्गज नेता और पूर्व मंत्री रामप्रसाद चौधरी के साथ कई पूर्व विधायकों और विधायकी का चुनाव लड़ चुके नेताओं को अपनी पार्टी में शामिल करने का ऐलान किया। इनमें से कुछ नाम निश्चित रूप से उल्लेखनीय हैं, जैसे पूर्व विधायक दूधनाथ, जितेंद्र कुमार, उमेश पांडे, अनिल कुमार और बसपा के प्रत्याशी रहे कबीर चौधरी। आमतौर पर ऐसे 'पालाबदल' कार्यक्रम चुनावों से पहले ही होते हैं। बसपा के पूर्व विधायकों से लेकर पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष, ब्लॉक प्रमुखों के आने से गदगद सपा कार्यकर्ताओं का जोश उफान पर दिखा।

बसपा में इस सेंध को सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव की एक रणनीतिक जीत और महागठबंधन से एकतरफा नाता तोड़ने के मायावती के फैसले के खिलाफ एक संदेश के तौर पर देखा गया। लेकिन बसपा में रहे नेताओं और कार्यकर्ताओं की बेचैनी को समझने के लिहाज से यह सियासी नतीजा निकालना बड़ी भूल होगी। दरअसल, इससे एक दिन पहले ही बसपा के कुछ नेताओं ने कांग्रेस की तरफ भी रुख किया था। बलिया जिले के बसपा मंडल प्रभारी मनोज कुमार की अगुवाई में सैकड़ों लोगों ने कांग्रेस की सदस्यता ले ली। मनोज बसपा के मध्य प्रदेश प्रभारी भी रहे हैं। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू का कहना है कि बसपा में दलित कार्यकर्ता उपेक्षित महसूस कर रहे हैं।

दोराहे पर खड़ी आज की बसपा के इस भटकाव को समझने के लिए अतीत में झांकने की जरूरत है। राजनीतिक विश्लेषक तथा वरिष्ठ पत्रकार डॉ. उत्कर्ष सिन्हा कहते हैं, 'उप्र की राजनीति करवट ले रही है। बसपा काडर आधारित पार्टी मानी जाती है लेकिन सवाल उठ रहे हैं कि क्या नेतृत्व अब काडर की आवाज सुन रहा है। फैसलों से पहले पार्टी के भीतर **'कोई समूह'** आंतरिक विमर्श को तवज्जो देता है। पार्टी में कितना लोकतंत्र है और उसके फैसले में कार्यकर्ताओं की कितनी सहमति है, इसका जवाब पार्टी से बाहर नहीं मिलता है।'

डॉ. उत्कर्ष कहते हैं, 'मायावती ने उत्तर प्रदेश की सियासत में नए सामाजिक समीकरण गढ़कर अपनी ताकत बढ़ाई लेकिन बदलते समाज और अपने कार्यकर्ताओं की नब्ज पर उनका हाथ नहीं टिक पाया। उन्होंने दलित पहचान को स्थापित किया। उस समाज के 'आइकन' को नई पहचान दी। दलित समाज के अज्ञात रहे महापुरुषों के नाम पर पार्क और स्मारक बनाकर उस समाज के साथ अपना खास तरह का रिश्ता कायम किया। उनके दिलों में जगह बनाई। लेकिन उसी समाज की नई पीढ़ी की महात्वाकांक्षा को पहचानने में वह चूक गईं।' मायावती की इस कमी को पूरा करने की ओर बढ़ रहे हैं चंद्रशेखर आजाद। वह दलित समाज की नई पीढ़ी के लिए शिक्षा और सम्मान की आवाज उठाने के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में दलित समाज के उत्पीड़न पर प्रतिक्रिया देते हैं। मायावती ने दलित समाज के राजनैतिक सशक्तिकरण की बात तो की लेकिन वह आमतौर पर दलित उत्पीड़न की घटनाओं पर उस तरह से प्रतिक्रिया देने की जरूरत नहीं समझतीं।

इसके अलावा उन्होंने दलित-ब्राह्मण-मुस्लिम कॉम्बिनेशन बनाते हुए इन समाजों की सत्ता में हिस्सेदारी को लेकर सही सामंजस्य नहीं बिठाया। कांशीराम के समय से बसपा के साथ रहे आरके चौधरी, सोनेलाल पटेल और दद्दू प्रसाद जैसे जमीनी नेताओं ने इसीलिए मायावती से किनारा कर लिया। कांशीराम का नारा हुआ करता था, 'जिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी।' मायावती ने कांशीराम का यह मंत्र छोड़ दिया। वे नए सामाजिक समीकरण की ओर बढ़ गईं और पार्टी में धन और बल को ज्यादा ही अहमियत मिलने लगी। इन्हीं सब वजहों से वह दलित समाज से दूर होती जा रही हैं।

दरअसल, देश और प्रदेश की सियासत और सियासी धारा बदल रही है। लोगों के मुद्दे बदल रहे हैं। सियासत के प्रतिमान से लेकर उसके तौर-तरीकों में भी बदलाव आ रहा है। लेकिन सवाल उठ रहे हैं कि मायावती इस बदलती सियासत को समझने में लगातार चूक कर रही हैं या सियासी मजबूरियों से घिर गई हैं? 2019 से पहले अपने पुराने जख्मों को भूलकर सपा की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाना उनकी सियासी मजबूरी थी या समझदारी, यह बात राजनैतिक पंडितों को समझ में आती, इससे पहले ही उन्होंने चुनाव के तत्काल बाद एक और फैसला ले लिया। बिना किसी ठोस वजह के सपा से नाता तोड़ लिया। अपने हर फैसले के पीछे तर्क गढ़ने वाली मायावती ने सपा के साथ नाता तोड़ते हुए जो वजह बताई, वह उनके कार्यकर्ताओं को भी नहीं पच रही। उनका कहना था कि सपा प्रत्याशियों को तो बसपा के वोट ट्रांसफर हुए लेकिन सपा अपने वोट बसपा प्रत्याशियों के पक्ष में ट्रांसफर नहीं करा पाई। इधर, उप्र में विधानसभा चुनाव अभी दूर हैं लेकिन सपा और कांग्रेस जिस आक्रामक राजनीति में कूदती दिख रही हैं, बसपा वहां नदारद है। यह गंभीर सवाल है।

● **लखनऊ से मधु आलोक निगम**

पुराने समीकरण पर नहीं कायम

सामाजिक समीकरण को साधकर मुख्यमंत्री की कुर्सी पर चार बार पहुंचीं मायावती सियासत में सोशल इंजीनियरिंग की मास्टर माइंड मानी जाती रहीं। उनसे पहले चौधरी चरण सिंह ने अहीर-जाट-गूजर-राजपूत (अजगर) वोटों का गठजोड़ बनाकर अपनी सियासत को नई धार दी थी। लेकिन मायावती ने कांशीराम के बहुजन समाज की धारा को बदल दिया। पुराने बसपाई और कांशीराम की सियासी धारा के समर्थक पूर्व मंत्री दद्दू प्रसाद कहते हैं, च्मायावती ने कांशीराम के नारे को उलट दिया। उन्होंने नारा दिया, च्जिसकी जितनी तैयारी.. उसकी उतनी हिस्सेदारी।ज्ञ इसका सियासी मतलब यह लगाया गया, जिसकी जितनी थैली भारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी।ज्ञ दद्दू कहते हैं, च्मुझे इस बात का मलाल है कि मैं इस बदली हुई बसपा में भी देर तक... बहुत देर तक इंतजार करता रहा कि कांशीराम ने जिस मकसद के साथ पार्टी खड़ी की है, उसकी ओर हम सब बढ़ेंगे। शोषण के खिलाफ शोषितों की आवाज बनेंगे।ज्ञ लेकिन डेमोक्रेसी अब पूरी तरह नोटक्रेसी में बदल चुकी है।

मनसे की राजनीति पर रोक लगे!

महाराष्ट्र में शिवसेना के कांग्रेस और एनसीपी के साथ जाने के बाद हिंदुत्व की राजनीति में खाली हुई जगह को भरने के लिए राज ठाकरे की पार्टी महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना, मनसे जो राजनीति कर रही है उस पर रोक लगनी चाहिए। अपने झंडे का रंग, निशान आदि बदलकर मनसे हिंदुत्व की जो राजनीति कर रही थी उसमें उसने एक नया अभियान जोड़ दिया है। मनसे ने कथित घुसपैठियों की पहचान करने का अभियान छेड़ा है। पार्टी ने लोगों से अपील की है कि वे घुसपैठियों के बारे में सूचना दें तो पार्टी उनको पांच हजार रुपए देगी।

एक घुसपैठिए के बारे में जानकारी देने पर मनसे पांच हजार रुपए देगी। सोचें, अगर लोगों ने इसे गंभीरता से लिया तो कैसा संकट खड़ा होगा। इस बात की क्या गारंटी होगी कि कथित घुसपैठियों की पहचान करने के बाद लोग उनके साथ मारपीट नहीं करेंगे या मॉब लिंचिंग नहीं की जाएगी? अगर ऐसा होता है तो कानून व्यवस्था बिगड़ने की जिम्मेदारी किसकी होगी? तभी सरकार को पहल करके इस पर तत्काल रोक लगानी चाहिए और मनसे के ऊपर कार्रवाई भी करनी चाहिए कि आखिर इस तरह के काम का अधिकार उसे किसने दिया? कोई भी पार्टी राज्य का काम अपने हाथ में कैसे ले सकती है?

महाराष्ट्र की राजनीति हिंदुत्व और राष्ट्रवाद के मुद्दे पर एक बार फिर करवट ले सकती है। गत 9 फरवरी को मुंबई के गिरगांव चौपाटी स्थित आजाद मैदान में आयोजित महारैली में महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना प्रमुख राज ठाकरे का अंदाज-ए-बयां इसकी तस्दीक करती है। मनसे कार्यकर्ताओं के हाथ में भगवा रंग के नए झंडे के बीच राष्ट्रवाद से ओत-प्रोत नजर आए राज ठाकरे ने मनसे को हिंदूवादी और राष्ट्रवादी पार्टी के विकल्प के रूप में पेश किया। मनसे चीफ राज ठाकरे ने रैली को संबोधित करते हुए देश में लागू हो चुके नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) और संभावित **राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर** (एनआरसी) का खुलकर समर्थन करते हुए अपने तेवर साफ कर दिए। शिवसेना संस्थापक बालासाहेब ठाकरे के अंदाज में राज ठाकरे ने रैली में बेलौस होकर देश में मौजूद अवैध घुसपैठियों को बाहर निकालने का समर्थन करते हुए केंद्र सरकार से मांग की, जिनमें पाकिस्तान और बांग्लादेश से आए घुसपैठिए शामिल हैं।

शिवसेना संस्थापक बालासाहेब ठाकरे के उत्तराधिकारी कहे जाने वाले राज ठाकरे ने रैली में बेहद गर्मजोशी दिखाई और शिवसेना संस्थापक के अंदाज में एकत्रित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि आज से ईंट का जवाब पत्थर से और तलवार का जवाब तलवार से दिया जाएगा। राज ठाकरे ने अपने तेवर से स्पष्ट कर दिया कि वह महाराष्ट्र में शिवसेना की अनुपस्थिति में हिंदूवादी और राष्ट्रवादी राजनीति की शून्य पड़ी उर्वर जमीन पर कब्जे के लिए कोई कोर-कसर नहीं छोड़ना चाहते हैं।

मनसे चीफ राज ठाकरे बहुत दिनों बाद अपने बेबाक और बेलौस अंदाज में रैली में दिखाई दिए। अपने भाषण में उन्होंने बिना लाग लपेट अपनी बातें रखीं। चाहे वह सीएए हो अथवा एनआरसी, जिसको लेकर महाराष्ट्र समेत पूरे देश में विरोध-प्रदर्शन पिछले कई महीनों से चल रहा है। रैली में पाकिस्तान, सीएए और एनआरसी का विरोध कर रहे मुंबई के बाहरी इलाके में रहने वाले नाईजीरियाई और मुस्लिम समुदाय को भी निशाने पर लेने से भी मनसे प्रमुख नहीं कतराए।

शायद यही वह कारण था कि शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे अपनी छटपटाछट छुपा नहीं पाए और राज ठाकरे के खिलाफ बयान करते हुए कहा कि शिवसेना को अपना हिंदुत्व साबित करने के लिए झंडा बदलने की जरूरत नहीं है। उद्धव ठाकरे अच्छी तरह जानते हैं कि महा विकास अघाड़ी मोर्चा में सेक्युलर पार्टियों के साथ गठबंधन के चलते उनकी सियासी जमीन खिसक सकती है इसलिए उद्धव की स्थिति महाराष्ट्र सरकार में सांप और छछूंदर जैसी हो गई है।

शिवसेना चीफ और महाराष्ट्र के सीएम उद्धव ठाकरे कितनी भी कोशिश क्यों न कर लें, लेकिन समान विचारधारा वाली भाजपा को छोड़कर परस्पर विरोधी दल कांग्रेस और एनसीपी के साथ पकड़ने से महाराष्ट्र में शिवसेना की सियासी जमीन कमजोर हुई है। चूंकि भाजपा और शिवसेना पिछले 30 वर्षों से साथ-साथ महाराष्ट्र में चुनाव लड़ रहीं थीं और दोनों के मुद्दे और एजेंडे भी कमोवेश एक थे, इसलिए महाराष्ट्र में दूसरी बार दोनों **पार्टियों को जनादेश** मिला था। इसके अलावा शिवसेना चीफ उद्धव ठाकरे पर जनादेश का अपमान करके स्वार्थ की राजनीति करने का आरोप लगता आ रहा है, जिससे पीछा छुड़ाने के लिए उद्धव ठाकरे भाजपा को निशाने पर लेते रहे हैं। हालांकि राष्ट्रवादी और हिंदूवादी दिखने की होड़ में शिवसेना चीफ नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ खड़े होने से गुरेज करती रही है। यही कारण था कि शिवसेना ने सीएबी बिल के पक्ष में लोकसभा में समर्थन किया और राज्यसभा में वॉक आउट हो गई। इतना ही नहीं, अन्य कांग्रेस शासित राज्यों से इतर चलते हुए महाराष्ट्र में सीएए के खिलाफ विधानसभा प्रस्ताव लाने से उद्धव ने गुरेज किया।

● **बिन्दु माथुर**

शिवसेना की जगह लेने में कामयाब होंगे राज ठाकरे

महाराष्ट्र की राजनीति में आया यह खालीपन संभवतः राज ठाकरे भरने को कोशिश कर रहे हैं। अगर राज ठाकरे अपने तेवर और तल्खी बरकरार रखने में कामयाब हो गए तो शिवसेना की छोड़ी हुई उर्वर राजनीति पर मनसे को फसल काटने में दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसमें भाजपा भी उनका साथ देने से नहीं हिचकेगी, क्योंकि महाराष्ट्र में चल रही नॉन एनडीए सरकार में सबसे अधिक पीड़ित कोई है, तो वह भाजपा है। हाल ही में देवेंद्र फडणवीस के 4 घंटे तक राज ठाकरे से मुलाकात इसके संकेत भी देते हैं। राज ठाकरे का यह तेवर शिवसेना संस्थापक बालासाहेब ठाकरे से मिलता-जुलता है। याद कीजिए, बालासाहेब ठाकरे के नेतृत्व में शिवसेना महाराष्ट्र में किंग मेकर की भूमिका में होती थी। महाराष्ट्र में सरकार किसी भी पार्टी की हो, लेकिन मजमा मातोश्री में ही लगता था।

भूमिहीन को लॉलीपप

अपने जल-जीवन-हरियाली अभियान के तहत पर्यावरण संरक्षण पर हालिया समीक्षा बैठक में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने तालाबों, नहरों और नदियों के आसपास रहने वाले भूमिहीन लोगों के लिए एक घोषणा की। उन्होंने कहा कि उन्हें या तो रहने के लिए जमीन मुहैया कराई जाएगी या जमीन खरीदने के लिए धन मुहैया कराया जाएगा ताकि वे अपने लिए घर बना सकें। उन्होंने अधिकारियों को राज्य भर में ऐसे लोगों की पहचान करने में तेजी लाने के आदेश जारी किए। पिछले महीने, राज्य सरकार ने इस योजना को प्रचारित और लोकप्रिय बनाने के लिए 'मानव श्रृंखला' बनाई थी। 2018 में, सीएम ने मुख्यमंत्री ग्राम आवास योजना के तहत बेघर लोगों की सहायता के लिए 60,000 रुपए की राशि की घोषणा की थी। भूमिहीन आबादी के लिए यह नवीनतम घोषणा भूमि सुधार के मामले में नीतीश कुमार की खोखली बातों की याद दिलाती है।

आजादी के बाद बिहार देश का पहला ऐसा राज्य था जिसने जमींदारी प्रथा को खत्म किया था, लेकिन जमींदारों से उनकी अतिरिक्त भूमि नहीं छीनी गई क्योंकि सत्तारूढ़ दल उच्च जाति के जमींदारों से भरा था, जिन्होंने कृषि सुधारों का एक उदारवादी, जमींदार-उन्मुख मार्ग चुना था। प्रभावी ढंग यह भूमि सुधार का एक खोखला प्रयास था। 1962 में, भूमि सीमा अधिनियम पारित हुआ था, लेकिन उसमें मौजूद खामियों का उपयोग करते हुए, जमींदारों ने अपने बटाइंदारों को बड़े पैमाने पर बेदखल कर दिया था। अंडर-रैयतों और बटाइंदारों को अधिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए 1970 में बिहार टेनेंसी एक्ट 1885 में संशोधन किया गया था। इसके अतिरिक्त मजदूरों और किसानों के हितों की रक्षा के लिए बिहार विशेषाधिकार प्राप्त होमस्टेड टेनेंसी एक्ट और बिहार मनी लेंडर एक्ट लागू किया गया। बिहार मुख्य रूप से ग्रामीण और कृषि प्रधान प्रदेश है, जहां राज्य की 90 प्रतिशत से अधिक आबादी गांवों में रहती है और बड़े पैमाने पर कृषि में लगी हुई है। चूंकि राज्य में एक मजबूत पहचान-आधारित समाज है, यह सामाजिक संरचना है जो संसाधनों तक पहुंच निर्धारित करती है। सभी संसाधनों के बीच, भूमि पर कब्जा उसका एक ऐसा पैरामीटर है जो किसी व्यक्ति या परिवारों को समाज में उनकी हैसियत से जोड़ता है। नीतीश कुमार के समय में भूमि सुधार एक बार राजनीतिक हलकों में एक बहुचर्चित मुद्दा बन गया था, जब बिहार भूमि सुधार आयोग (2006-08) द्वारा तैयार की गई एक रिपोर्ट, जिसकी अध्यक्षता देबब्रत बंदोपाध्याय ने की थी, और रपट को अप्रैल 2008 में प्रस्तुत किया गया था। मुख्यमंत्री ने इस रिपोर्ट के प्रति अपनी अस्वीकृति की घोषणा अक्टूबर 2009 में की थी। बंदोपाध्याय को पश्चिम बंगाल में वामपंथी सरकार के तहत भूमि सुधार के वास्तुकार के रूप में श्रेय दिया जाता है।

जुलाई 2010 में भूमि सुधारों पर बंदोपाध्याय ने भूमि की हदबंदी में सुधारों को लागू करने और भूमि रिकॉर्ड के कम्प्यूटरीकरण के अलावा बटाईंदारों की रक्षा के लिए नया अधिनियम लाने के लिए कुछ सुझाव दिए थे। आयोग की रिपोर्ट के तुरंत बाद, एक शक्तिशाली लॉबी जिसमें ज्यादातर उच्च जाति और कुछ पिछड़ी जाति के लोग शामिल थे, ने ऐसे कदम का विरोध किया जो बटाईंदारों को कानूनी अधिकार देता हो। अपनी पार्टी और सत्तारूढ़ गठबंधन यानि जद(यू)-भाजपा गठबंधन के भीतर इसे लेकर उठापठक ने नीतीश को आसानी से भूमि सुधारों के अपने-अपने चुनावी वादे से पीछे हटने को मजबूर कर दिया। उन्होंने जनता को भरोसा दिलाया कि बटाईंदारों की सुरक्षा के लिए कोई नया कानून नहीं आएगा।

गौरतलब है कि भूमि सुधार आयोग की तीन प्रमुख सिफारिशें थीं। पहली यह कि हर प्रकार की भूमि को 15 एकड़ से भिन्न हद वाली छह श्रेणियों में भूमि के वर्गीकरण की वर्तमान प्रणाली को खत्म करना। दूसरी 16.68 लाख घरों में से प्रत्येक को न्यूनतम कृषि योग्य श्रमिकों को 0.66 एकड़ और 1 एकड़ सीलिंग की अतिरिक्त भूमि आवंटित करना और 5.48 लाख गैर-कृषि ग्रामीण श्रमिकों में से प्रत्येक को कम से कम 10 डेसीमल भूमि (एक एकड़ का दशमलव=100 वां भाग) आवंटित करना। तीसरी बटाईंदार को उपज का 60 प्रतिशत हिस्सा मिले (यदि भू-स्वामी उत्पादन की लागत वहन करता है) नहीं तो उसे 70 से 75 प्रतिशत मिले (अगर बटाईंदार उत्पादन का खर्च वहन करता है), इसके लिए बटाईंदार एक्ट लागू किया जाए। आयोग ने निष्कर्ष निकाला कि भूमि के स्वामित्व के बहुत ही विचित्र पैटर्न के कारण बिहार की कृषि में एक संरचनात्मक अड़चन थी और इसका कारण समझना मुश्किल नहीं था। आयोग के अनुसार, भूमि सुधारों के अभाव में न केवल बिहार के भीतर निरंतर सामंती वर्चस्व कायम है, बल्कि राज्य में सस्ते श्रम की निरंतर आपूर्ति भी आसानी से उपलब्ध है।

● **विनोद बक्सरी**

एक अवास्तविक सामाजिक न्याय

2009 में भूमि सुधार के विचार को खारिज करने के बाद नीतीश कुमार ने 2013 में राज्य के महादलित परिवारों को तीन डेसीमल भूमि वितरित करने का एक कार्यक्रम शुरू किया। सरकार ने इस योजना के तहत 2.52 लाख लाभार्थियों की पहचान करने का दावा किया है। अगले वर्ष, उनके उत्तराधिकारी जीतनराम मांझी (मुसहर समुदाय से आने वाले पहले मुख्यमंत्री) ने इसे 5 दशमलव तक बढ़ा दिया था और दक्खन देहानी कार्यक्रम को भी लागू किया, जो दलितों और महादलितों को घर बनाने के लिए भूमि प्रदान करता था और उनका स्वामित्व भी देता था। हालांकि, यह केवल एक टोकन चाल थी। बेतिया में स्थित भूमि-अधिकार कार्यकर्ता पंकज से बात की, जो ऑपरेशन दक्खनी के सदस्य भी थे, (भूमिहीनों की मदद करने के लिए राज्य सरकार की पहल) ने कहा कि बिहार के राजस्व विभाग के अनुसार, राज्य में 1,65,400 परचाधारी या 'जिन लोगों को अधिनियम के तहत भूमि आवंटित की गई थी' है। वह कहते हैं कि पश्चिमी चंपारण से सरकार का डेटा भी गलत है। विभाग का दावा है कि पश्चिमी चंपारण में केवल 12,000 लोगों को ही कब्जा मिलना बाकी है, लेकिन यह संख्या 50,000 है।

कट्टरपंथ बनाम कट्टरपंथ

ईरान में हुए हालिया चुनावों में कट्टरपंथियों को बड़ी जीत मिली है। कुल 290 में से 230 सीटों पर कट्टरपंथियों की जीत हुई। सबसे बड़े सूबे तेहरान में तो सभी 30 सीटें कट्टरपंथियों ने कब्जा ली हैं, जबकि 2016 के नतीजे इसके उलट थे, यानी उस वक्त तेहरान की सभी 30 सीटें उदारवादियों ने जीती थीं। ईरान के चुनावों की खास बात ये थी कि इन चुनावों में कोई राजनीतिक दल नहीं था, लेकिन चुनाव लड़ने वाले दो भागों में बंटे हुए थे। एक तरफ कट्टरपंथी थे तो दूसरी तरफ उदारवादी।

राष्ट्रपति हसन रूहानी उदारवादियों की तरफ झुके मध्यमार्गी नेता हैं जो 2013 में उदारवादियों के समर्थन से ही चुनाव जीते थे। वर्ष 2017 में भी उन्हें भारी समर्थन मिला और वो लगातार दूसरी बार राष्ट्रपति चुने गए। लेकिन चूंकि राष्ट्रपति हसन रूहानी ने पिछले साल ही जुलाई में परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए थे और इसके बाद से ही उदारवादी और कट्टरपंथी दोनों कैंपों के बीच संघर्ष बढ़ गया था। कट्टरपंथी, राष्ट्रपति रूहानी की विदेश नीति और ईरान में राजनीतिक सुधारों का विरोध कर रहे थे और उन्हें ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्ला खामनेई का समर्थन मिल रहा था। फिर इसी साल अमेरिकी हवाई हमले में ईरान की कुर्द फोर्स के प्रमुख जनरल कासिम सुलेमानी की मौत ने भी देश में कट्टरपंथी ताकतों को मजबूत होने का मौका भी दे दिया और बहाना भी। इन सब हालात में हुए चुनावों में उदारवादियों का हश्र यह हुआ है कि वो महज 17 सीटों पर सिमटकर रह गए हैं, जबकि पिछली संसद में उनकी गिनती 120 की थी। तो अब ईरान की नई संसद का चेहरा पिछली संसद से पूरी तरह बदला-बदला होगा। निवर्तमान संसद के 20 प्रतिशत से भी कम सांसद नई संसद में दिखाई देंगे। जब कट्टरपंथियों को इतनी बड़ी जीत मिली है तो ईरान की राजनीति और उसकी कूटनीति में कट्टरपंथियों का दबदबा दिखाई देना स्वाभाविक है। यानी अब ईरान पूरी तरह कट्टरपंथियों के नियंत्रण में है। इससे राष्ट्रपति रूहानी की मुश्किलें बढ़नी भी तय हैं और भविष्य में ईरान में बड़े बदलाव भी देखने को मिलेंगे। आखिर ईरान की राजनीति में इतना बड़ा बदलाव क्यों हुआ? क्या ईरान के लोगों ने उदारवादियों को नकार दिया है? हालांकि चुनाव के नतीजे चौंकाने वाले बिल्कुल नहीं हैं, लेकिन फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि ईरान के लोगों ने उदारवादियों को ठुकरा दिया है।

दरअसल आयतुल्ला खामनेई को सीधे रिपोर्ट करने वाली 12 सदस्यों की गार्डियन काउंसिल ने जिस तरह उदारवादी खेमों के सात हजार से ज्यादा उम्मीदवारों की दावेदारी खारिज कर दी थी उसके बाद से ही माना जा रहा था कि चुनाव तो कट्टरपंथी ही जीतेंगे। कुल 15 हजार लोगों ने चुनाव लड़ने के लिए आवेदन दिया था। इनमें से 7,296 लोगों को अयोग्य करार दिया गया, तो गार्डियन काउंसिल के इस कदम से 31 प्रांतों की 290 सीटों के चुनाव में ज्यादातर सीटों पर कट्टरपंथी नेताओं के मुकाबले में कट्टरपंथी नेता ही थे। वैसे तो ईरान की कट्टरपंथी मजहबी संस्था गार्डियन काउंसिल हमेशा से ही नेताओं पर इसी तरह लगाम कसे रहती है और देश की **'मजहबी लाइन'** से अलग राय रखने वाले नेताओं को आगे नहीं बढ़ने दिया जाता है। लेकिन इस बार खास बात यह रही कि गार्डियन काउंसिल ने ऐसे लोगों को भी संसदीय चुनावों में उतरने नहीं दिया जो पिछले चुनावों में काउंसिल की **'लक्ष्मण रेखा'** लांघकर चुनाव लड़े भी थे और जीते भी थे। लगभग 80 सांसदों को चुनाव लड़ने ही नहीं दिया गया। इसके चलते उदारवादी धड़ों ने चुनावों में कोई दिलचस्पी ही नहीं ली। इतना ही नहीं, 31 में से 22 प्रांतों में उदारवादियों ने किसी भी उम्मीदवार का समर्थन तक नहीं किया।

उदारवादी नेताओं को चुनावों से दूर रखने के फैसले ने ईरान के निराशा में घिरे लोगों को और नाउम्मीद कर दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि ज्यादातर लोग चुनावों में वोट देने के लिए घरों से निकले ही नहीं। 41 साल के इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान के इतिहास में इस बार सबसे कम यानी 42.57 फीसदी मतदान हुआ। तेहरान में तो सबसे कम 26.2 फीसदी मतदान हुआ, जबकि ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्ला खामनेई ने लोगों से कहा था कि वोट देना उनका धार्मिक कर्तव्य है। लेकिन जब उनकी अपील पर भी लोग मतदान के लिए नहीं निकले तो उन्होंने कहा कि दुश्मनों के दुष्प्रचार और कोरोना वायरस के बढ़ते खतरे के कारण लोग वोटिंग के लिए नहीं निकले।

● **बिन्दु माथुर**

राष्ट्रपति चुनावों पर असर की आशंका

इन नतीजों का असर 2021 में होने वाले राष्ट्रपति चुनावों पर भी पड़ेगा। जानकारों का मानना है कि अब राष्ट्रपति रूहानी के लिए संसद से तालमेल बनाना मुश्किल हो जाएगा और राष्ट्रपति के अगले चुनाव में भी किसी कट्टरपंथी का जीतना तय है। आयतुल्ला खामनेई का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है, लेकिन चुनावों ने उन्हें इतना मजबूत बना दिया है कि वो सभी अहम पदों पर अपने खास लोगों को आराम से 'सेट' कर सकेंगे। जल्द ही उनके उत्तराधिकारी का चयन होगा और इस दौड़ में भी खामनेई के पसंदीदा कट्टरपंथी इब्राहिम रायसी आगे चल रहे हैं। यह भी आशंका है कि अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव से पहले ईरान परमाणु समझौता भी तोड़ दे और पश्चिम के साथ उसके संबंध और खराब हो सकते हैं। कुल मिलाकर ईरान में बदलाव का दौर है और ये बदलाव शुभ संकेत नहीं देते। वैसे भी ईरान में कोरोना वायरस फैलने की जो खबरें आ रही हैं वो भी चिंता बढ़ाने वाली हैं। शायद यही कारण रहा कि ईरान के चुनावों की चर्चा मीडिया में कम हुई और यह चर्चा ज्यादा हुई कि चीन के बाद वो कोरोना से प्रभावित दूसरा बड़ा देश बन गया है।

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन 2036 तक देश के राष्ट्रपति रह सकते हैं। रूस के निचले सदन ड्यूमा ने एक ऐसे प्रस्ताव पर मुहर लगाई है जिससे पुतिन का कार्यकाल दो और टर्म के लिए बढ़ सकता है। अभी इस प्रस्ताव को संसद के ऊपरी सदन से मंजूरी मिलनी बाकी है। पुतिन पिछले 20 साल से देश के राष्ट्रपति हैं। उनका चौथा कार्यकाल 2024 में खत्म हो रहा है।

पुतिन बने तानाशाह

तो क्या रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन पूर्व सोवियत तानाशाह जोसफ स्टालिन का रेकॉर्ड तोड़ने वाले हैं? दरअसल, गत दिनों रूस के निचले सदन ड्यूमा ने एक ऐसे प्रस्ताव पर मुहर लगा दी है, जिससे पुतिन का कार्यकाल दो और टर्म के लिए बढ़ सकता है। यानी वह 2036 तक देश के राष्ट्रपति बने रह सकते हैं। 383 सदस्यी ड्यूमा ने प्रस्ताव के समर्थन में 340 सांसदों ने वोट किया किया जबकि 43 गैरहाजिर रहे। प्रस्ताव के विरोध में एक भी वोट नहीं पड़ा।

इन संशोधनों को अब ऊपरी सदन फेडरेशन काउंसिल में पारित होना है और फिर 22 अप्रैल को लोग इस के लिए मतदान करेंगे। पुतिन ने जनवरी में इन सुधारों का प्रस्ताव रखा था। वहीं वह लगातार इस बात से इनकार कर रहे हैं कि इसका उनके सत्ता में बने रहने से कोई लेना-देना है। राष्ट्रपति के रूप में पुतिन के चौथे और अंतिम कार्यकाल का अंत 2024 में हो रहा है। वहीं गत दिनों एक और संशोधन पेश किया गया, जो कि राष्ट्रपति के कार्यकाल के समय में फेरबदल करता है। संवैधानिक अदालत के द्वारा इसकी अनुमति देने के बाद पुतिन एक बार फिर चुनाव लड़ पाएंगे।

रूसी खुफिया एजेंसी के पूर्व जासूस रहे 67 वर्षीय पुतिन पिछले 20 साल से सत्ता में हैं। नए प्रस्ताव के मंजूरी के बाद वह स्टालिन को भी पीछे छोड़ सकते हैं। पुतिन पहले दो बार चार साल राष्ट्रपति रहने के बाद संवैधानिक मजबूरी के कारण 2008 में प्रधानमंत्री बन गए थे। उस दौरान पुतिन के करीबी सहयोगी दिमेत्री मेदवदेव राष्ट्रपति रहे थे। मेदवदेव ने अपने कार्यकाल में राष्ट्रपति का कार्यकाल बढ़ाकर 4 की जगह 6 साल कर दिया था। 2012 में पुतिन फिर से रूस के राष्ट्रपति बने और 2018 में उन्हें दोबारा 6 साल के लिए इस पद के लिए चुना गया था। अगर पुतिन फिर से दो टर्म राष्ट्रपति बन जाते हैं तो वह 36 साल तक रूस पर शासन करने वाले नेता हो जाएंगे और स्टालिन को पीछे छोड़ देंगे।

स्टालिन ने 29 साल तक सोवियत रूस पर शासन किया था। स्टालिन के दौर में रूस में बड़े बदलाव हुए थे। रूस बड़ा औद्योगिक देश और सुपर पावर बना था। हालांकि स्टालिन पर लाखों रूसी लोगों को मारने का आरोप भी लगा। एक गरीब परिवार में पैदा हुए स्टालिन ने देश में कई बदलाव भी किए। पुतिन ने अपने कार्यकाल के दौरान कई अंतर्राष्ट्रीय प्रेशर को झेलकर रूस को पूरी दुनिया में मजबूती के साथ पेश किया। पुतिन ने विदेशी तनाव का इस्तेमाल खुद को रूस में मजबूत करने के लिए किया। माना जा रहा है कि मौजूदा प्रस्ताव का पारित होना महज औपचारिकता है।

नियमों के मुताबिक, एक इंसान लगातार बस दो ही बार राष्ट्रपति बन सकता था। पुतिन बैक-टू-बैक दो बार राष्ट्रपति बने। साल 2008 में जब उनका दूसरा कार्यकाल पूरा हो गया, तो नियमों का पेच फंसा। लगातार तीसरी बार राष्ट्रपति नहीं बन सकते थे। ऐसे में पुतिन ने राष्ट्रपति का पद छोड़ा और बन गए प्रधानमंत्री। राष्ट्रपति बनाए गए पुतिन के भरोसेमंद दिमित्री मेदवदेव। 2008 में ही मेदवेदेव एक नया कानून लाए। इसके मुताबिक, राष्ट्रपति का कार्यकाल चार साल से बढ़ाकर छह साल कर दिया गया। इस कानून के साथ दिलचस्प बात ये थी कि ये अगले राष्ट्रपति के कार्यकाल से लागू होना था। इसका मतलब यही लगाया गया कि ये इंतजाम पुतिन के लिए किया गया है।

पुतिन की उम्र है 67 साल। वो 20 सालों से रूस की सत्ता में हैं। 2036 तक राष्ट्रपति बने रहना, मतलब 16 साल और। कुल मिलाकर 36 साल। 2036 में पुतिन की उम्र होगी 83 साल। तब भी वो सत्ता छोड़ेंगे कि नहीं, मालूम नहीं। लोग कह रहे हैं, पुतिन आजीवन राष्ट्रपति रहेंगे। अभी जो ये संशोधन का प्रस्ताव आया है, उसका समर्थन किया है पुतिन ने। ये कहकर कि वो देश के भले के लिए ऐसा कर रहे हैं। दुनिया के सारे तानाशाह सत्ता हथियाए रखने के पीछे यही वजह गिनाते आए हैं। वैसे इन्हीं पुतिन ने कभी कहा था कि केजीबी में रहते हुए उन्होंने कभी बहुत ऊपर उठने की चाहत नहीं रखी। इसलिए कि वो नहीं चाहते थे कि सेंट पीटर्सबर्ग के रहने वाले उनके बूढ़े माता-पिता और दो छोटी बेटियों को मॉस्को आकर बसना पड़े।

● **अक्स ब्यूरो**

तो 0 हो जाएगा पुतिन का कार्यकाल!

अगर ड्यूमा के प्रस्ताव पर ऊपरी सदन और फिर रूस की जनता की मुहर लग जाती है तो पुतिन 83 साल की उम्र तक देश के राष्ट्रपति रह सकते हैं। 2024 में पुतिन का बतौर राष्ट्रपति चौथा कार्यकाल खत्म होगा। ऐसे में प्रस्ताव पर मुहर लगने के बाद पुतिन दो और कार्यकाल के लिए राष्ट्रपति का चुनाव लड़ सकते हैं। नए प्रस्ताव पर मुहर लगने के बाद पुतिन का कार्यकाल जीरो (0) माना जाएगा।

महिला उद्यमियों की चुनौतियां

महज 14 फीसदी प्रतिष्ठान महिलाओं के हवाले

महिला उद्यमी देश के मानव संसाधन का अहम हिस्सा हैं। बावजूद इसके कारोबारी परिवेश में आज भी महिला नेतृत्व वाले संस्थानों के प्रति लोगों में असहजता और अविश्वास का माहौल देखने को मिलता है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एनएसएसओ) का कहना है कि भारत के व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में से महज 14 फीसदी महिलाओं द्वारा संचालित हैं। इनमें से अधिकतर उद्यम छोटे स्तर के और स्व-वित्तपोषित हैं। इसकी एक वजह यह भी है कि महिलाओं को संसाधनों के वित्तपोषण और कारोबार की सहायता के लिए मौजूद योजनाओं की जानकारी भी कम ही होती है। ऐसे में अगर सरकार की नीतियां सहयोगी बनें, महिलाओं को नवाचार के लिए उचित आर्थिक मदद मिलने की राह खुले तो कारोबार के संसार में उनकी प्रभावी भागीदारी देखने को मिल सकती है।

भारतीय समाज में महिला उद्यमिता को प्रोत्साहन देने के लिए सामाजिक, पारिवारिक और आर्थिक मोर्चों पर बदलाव की दरकार है। परिवेश, परिवार और परंपरागत सोच से जुड़े ऐसे कई पक्ष हैं, जो उद्यमी बनने की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए बाधा बनते हैं। कारोबार की शुरुआत करने में ही नहीं, उसे विस्तार देने में भी महिलाएं पुरुषों की तुलना में ज्यादा समस्याओं का सामना करती हैं। आर्थिक सर्वेक्षण 2019-20 के मुताबिक इस वर्ष की शुरुआत तक देश में 27 हजार 84 अधिकृत नए छोटे कारोबारों (स्टार्टअप कंपनियों) में कम से कम एक महिला निदेशक वाली कंपनियों का हिस्सा मात्र 43 फीसदी ही था। 'इनोवेन कैपिटल' के मुताबिक 2018 में ऐसी वित्त पोषित स्टार्टअप कंपनियों का हिस्सा 17 फीसदी था, जिनमें कम से कम एक महिला सह-संस्थापक हो। पिछले साल ऐसी कंपनियों की संख्या घटकर सिर्फ 12 फीसदी रह गई। गौरतलब है कि बीते साल महिला उद्यमी सूचकांक में भी भारत कुल 57 देशों में 52वें स्थान पर रहा था। ये आंकड़े बताते हैं कि हमारे यहां आज भी महिला उद्यमियों के सामने अनगिनत चुनौतियां मौजूद हैं, जो कारोबारी दुनिया में उनका दखल बढ़ने में बड़ा व्यवधान बनती हैं। हालिया स्थिति और ज्यादा विचारणीय हो जाती है, क्योंकि सरकार की महत्वाकांक्षी 'स्टार्टअप इंडिया' योजना भी उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी में बहुत ज्यादा इजाफा नहीं कर पाई है।

दरअसल, महिला उद्यमियों को आगे लाने के लिए केवल आर्थिक मदद या सुविधाएं ही काफी नहीं होतीं। समग्र रूप से सामाजिक और पारिवारिक सोच में बदलाव आए बिना उनकी मुश्किलें कम नहीं की जा सकतीं। हालांकि बीते कुछ बरसों में श्रमशक्ति में स्त्रियों की हिस्सेदारी तेजी से बढ़ी है। लेकिन महिलाओं के कामकाजी बनने और उद्यमी होने में भी बड़ा अंतर होता है। नौकरी करते हुए **घर-दफ्तर** की जिम्मेदारियों के अलावा दूसरी उलझनें महिलाओं के हिस्से नहीं आतीं, जबकि कारोबार में उन्हें कई मोर्चों पर एक साथ जूझना पड़ता है। उनके द्वारा चलाए जा रहे उद्यमों में निवेश करने से लेकर उसके सफल होने तक, कितने ही पूर्वाग्रह और मूल्यांकन केवल महिला होने के नाते उनके हिस्से आते हैं। यही वजह है कि लगभग हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही आधी आबादी की कारोबार के क्षेत्र में भागीदारी आज भी सीमित ही है। इसका सीधा-सा अर्थ यह है कि हमारे देश में महिला उद्यमियों के लिए न तो कारोबार की राह आसान है और न सामाजिक-पारिवारिक माहौल उनका सहयोगी बन पाया है। यही कारण है कि कुछ अपवादों को छोड़ दें, तो हमारे यहां कारोबार की दुनिया में उनकी संख्या गिनती की ही है। उपलब्धियों और शिक्षा के बढ़ते आंकड़े भी इस स्थिति में खास बदलाव नहीं ला पाए हैं। आज भी कंपनियों के निदेशक मंडल में न केवल महिलाओं की संख्या कम है, बल्कि उनके फैसलों को भी प्रभावी ढंग से स्वीकार नहीं किया जाता। हालांकि पिछले कुछ सालों में कई कंपनियों ने अपने निदेशक मंडल में महिलाओं की संख्या बढ़ाई जरूर है, पर इसे उनकी कारोबारी भागीदारी से जोड़कर नहीं देखा जा सकता। गौरतलब है कि देश में बाजार नियामक संस्था सेबी के निर्देश हैं कि सभी सूचीबद्ध कंपनियों को अपने निदेशक मंडल में कम से कम एक महिला निदेशक नियुक्त करना जरूरी है।

महिला उद्यमिता को किसी भी देश की आर्थिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है। महिला उद्यमी न केवल खुद को आत्मनिर्भर बनाती हैं, बल्कि दूसरों के लिए भी रोजगार सृजन करती हैं। मौजूदा समय में भारत में महिलाओं द्वारा कई उद्यम चलाए भी जा रहे हैं और इनसे बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार मिल रहा है। ऐसे उद्यमों में अन्य महिलाओं को काम करने के लिए काफी सहज और सुरक्षित माहौल भी मिलता है और महिलाओं के लिए रोजगार पाने की राह आसान होती है। गौरतलब है कि भारत में श्रमशक्ति का एक तिहाई से कुछ अधिक हिस्सा महिलाओं का है, जो जीडीपी को बढ़ाने और रोजगार के अवसर पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। स्त्री श्रमशक्ति की यह भागीदारी भारतीय अर्थव्यवस्था को गति में अहम साबित हो सकती है। अब हमारे यहां सामाजिक परिवेश बदल रहा है। महिलाएं अपने फैसले खुद लेने लगी हैं। अपने कामकाज का क्षेत्र स्वयं चुन रही हैं। पारंपरिक संरचना का यह बदलाव लैंगिक भेदभाव को दूर करने का पहला कदम है।

● **ज्योत्सना अनूप यादव**

PRISM®
CEMENT

प्रिज़्म® चैम्पियन प्लस

ज़िम्मेदारी मज़बूत और टिकाऊ निर्माण की.

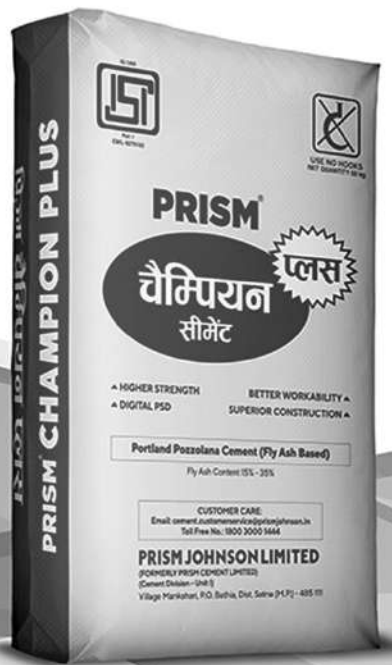

Toll free: 1800-3000-1444
Email: cement.customerservice@prismjohnson.in

दूर की सोच®

शाबाश बच्चो

आज मुदित के बैग में मम्मा नाश्ते का टिफिन रखना ही भूल गईं थीं और मुदित नें भी ध्यान नहीं दिया। जब लंच टाइम में उसने बैग खोला तो ये देखकर अवाक रह गया कि मम्मा बैग में टिफिन तो आज रखना ही भूल गईं थी। उसे भूख भी लग रही थी लेकिन अब क्या हो सकता था। जब छुट्टी में घर पहुंचा तब मम्मा को याद आया हाय राम बेटा आज तो मैं तुम्हारा नाश्ते का टिफिन ही रखना भूल गई। मेरा बेटा भूखा होगा उसने मुदित को प्यार से गोदी में उठाकर गले लगा लिया।

तब मुदित नें कहा-नहीं मम्मी मैं भूखा नहीं रहा, जब मेरे क्लास के फ्रेंड्स ने देखा कि आज मेरा टिफिन नहीं आया है तो सभी ने मुझे अपने लंच में शेयर किया आज तो कई तरह की चीजें खाने को मिलीं। स्वाति मैगी लेकर आई थी, आर्यन पास्ता लाया था, काव्या और सौम्या आलू के पराठे लाईं थीं, मिन्नी और मान्या पोहे लाई थीं और ऐरिका और सिम्मी कटलेट लेकर आईं थीं। मैंने उनको मना भी किया था तो वो सब नाराज होने लगे। कहने लगे तू भी तो रोज हम लोगों को कुछ ना कुछ खिलाता रहता है, खाएगा कैसे नहीं निहित, आदि, अनन्या, मोनालि, कुहू, निन्नू, ऋषि भी कुछ ना कुछ लाई थी। आज तो बहुत मजा आया।

बच्चों का यह प्रेम देखकर बहुत अच्छा लगा, मम्मी ने फिर एक बार मुदित को उठाकर गले लगा लिया।

- डॉ. रमेश कटारिया पारस

आधार मेरे सपनों का

संजीवनी सी ये पीड़ा।
आधार मेरे सपनों का।।
बांटें खुशियां दुगनी हों,
कहते ही दु:ख हो आधा।
पीड़ा हो जब अपनी सी,
फिर क्यों न चाहूं ज्यादा।
क्यों न इनको फिर मन में,
मैं बड़े जतन से पालूं।
क्यों कहूं विकलता अपनी,
और इनको कम कर डालूं।
ये भार नहीं हैं मन पर,
उपकार मेरे अपनों का।
संजीवनी सी ये पीड़ा।
आधार मेरे सपनों का।।
मन किया तूलिका मैंने,
हर आंसू किया स्याही।
अक्षर और व्याकरण की
भावों संग करी सगाई।
कभी कविता सी बिखरी ये,
कभी गजल बनी इतराई।
सब लोग सयाने कहते,
रचना पीड़ा की जाई।
हूं लिए खजाना बैठी,
फिर आज इन्हीं रत्नों का।
संजीवनी सी ये पीड़ा।
आधार मेरे सपनों का।।

- अनाम

डर के आगे जीत

दादी मां, माँ कहती हैं हम लोगों को बचपन में हमारी नानी मां या दादी मां कहानी सुनाया करती थीं। मैं तो आपके साथ रहता नहीं हूं तो आपसे कभी कहानी नहीं सुन पाया हूं, क्या आप मुझे कहानी सुना सकती हैं?

गोलू के प्यार भरे अनुरोध को धरा टाल नहीं सकी उसने गोलू को अपनी गोद में लिटाते हुए कथा प्रारंभ की-

बेटा गाय एवं बछड़ों का झुंड लेकर हमारा नौकर अक्सर जंगल की ओर उन्हें चराने जाया करता था। एक दिन एक दरवाजे पर शेर आया, शेर आया कि चर्चा हमारे दादाजी अपने पड़ोसियों के साथ कर रहे थे। उस दिन सभी गायें जंगल के रास्ते जाने के बदले दरवाजे पर ही बैठी रहीं। दादाजी को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे फिर मुझसे बातें करते हुए अपना अनुभव हमें सुनाने लगे।

दादाजी बोले, बिटिया भय का भूत जानती हो? हमने ना में सिर हिलाया, फिर उन्होंने कहा- जंगल में एक बार भैंसों के झुंड से एक भैंस का बच्चा बिछड़ गया, तभी सामने से शेर आते देखकर उस भैंस के बच्चे को अपनी मां की कही बात याद आई।

बेटा जिंदगी में कभी अगर मुसीबत आन पड़े तो खुद को अकेला कभी मत समझना। तेरे पीछे पूरे परिवार की ताकत खड़ी है, यह हमेशा याद रखना। बस फिर क्या था, भैंस के बच्चे ने अपने खूरों से जमीन को खुरचते हुए प्रहार की मुद्रा में शेर के आगे डटकर खड़ा हो गया एवं गुस्से में जोर से चिल्लाया। थोड़ी ही देर में भैंस के बच्चे को बचाने भैंसों का झुंड आ गया एवं शेर घबरा कर वापस जंगल में लौट गया।

तो जानते हो गोलू! यह कथा मेरे दादाजी हमें सुनाए और फिर आश्चर्य! सभी गायें फुर्ती से उठकर जंगल के रास्ते चारे की तलाश में चल दी।

अरे वाह दादी आपने तो कथा में भी कथा कह दी, सच में एकता की ताकत एवं खुद से बलवान से भी वक्त पड़ने पर लड़ने एवं डटे रहने की सीख दे डाली।

एक सीख तो तुम समझे ही नहीं।

क्या दादी मां?

बेटे इंसानों की भाषा एवं प्यार पेड़-पौधे एवं पशु-पक्षी भी समझते हैं।

- आरती राय

क्रिकेट की नई सनसनी शेफाली

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के इतिहास में पहली बार भारतीय महिला क्रिकेट टीम आईसीसी टी-ट्वेंटी विश्वकप के फाइनल में पहुंची। हालांकि भारतीय टीम विश्वकप नहीं जीत पाई। लेकिन टीम को यहां तक पहुंचाने का श्रेय 16 वर्षीय शेफाली वर्मा की बल्लेबाजी को जाता है। महज छह महीने पहले अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में आई शेफाली अपने शानदार प्रदर्शन के चलते दुनिया के उत्कृष्ट बल्लेबाजों की आईसीसी रैंकिंग में पहले स्थान पर पहुंच गई हैं।

बीते 28 जनवरी को ही शेफाली वर्मा 16 साल की हुई हैं। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की यह ओपनिंग बल्लेबाज इस छोटी-सी उम्र में ही विश्व क्रिकेट के बड़े-बड़े रिकॉर्ड ध्वस्त कर चुकी हैं। यहां विश्व क्रिकेट से आशय केवल महिला क्रिकेट से नहीं है, पुरुषों का क्रिकेट भी इसमें शामिल है। शेफाली की हालिया उपलब्धि यह है कि वे अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) की 20-20 क्रिकेट की महिला बल्लेबाजों की रैंकिंग में पहले पायदान पर पहुंच गई हैं। यानी कि वे वर्तमान में महिला टी-20 क्रिकेट में विश्व की नंबर एक बल्लेबाज हैं। और दिलचस्प पहलू यह है कि उन्हें अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट खेलते हुए छह माह भी नहीं हुए हैं। 24 सितंबर 2019 को उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया था। लेकिन अपनी आक्रामक बल्लेबाजी और प्रदर्शन में निरंतरता के दम पर उन्होंने इतने कम समय में ही केवल 18 मैच खेलकर यह उपलब्धि हासिल करते हुए विश्व की कई दिग्गज महिला बल्लेबाजों को पीछे छोड़ दिया है। केवल इतना ही नहीं, महिला एवं पुरुष दोनों ही प्रकार के क्रिकेट को देखें तो आईसीसी की बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचने वाली वह सबसे युवा भारतीय बल्लेबाज बन गई हैं। यह उपलब्धि उन्होंने महज 16 साल और 36 दिन की उम्र में पाई है। और ऐसा संभव हुआ विश्वकप में उनकी धमाकेदार बल्लेबाजी के प्रदर्शन के चलते।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ऑस्ट्रेलिया में खेले जा रहे सातवें टी-20 महिला क्रिकेट विश्वकप में हार गई। लेकिन क्रिकेट इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है और इसमें शेफाली का बहुत बड़ा योगदान रहा है। भारतीय बल्लेबाजी की ताकत स्मृति मंधाना और हरमनप्रीत कौर, जिनसे भारत को विश्वकप जिताने की उम्मीद थी, वे पूरे विश्वकप में एक-एक रन के लिए जूझती नजर आईं। इन विपरीत हालातों में टीम की सबसे कम उम्र की सदस्य शेफाली ने स्कोरकार्ड पर भारत के लिए रन टांगे और जिस तेज गति से टांगे, उसका मुकाबला इस पूरे विश्वकप में विश्व की अन्य कोई भी बल्लेबाज नहीं कर पाई। हरियाणा के रोहतक जिले की रहने वाली शेफाली के पिता पेशे से सुनार हैं। रोहतक महिलाओं के प्रति मानसिकता को लेकर अपेक्षाकृत अधिक रूढ़िवादी रहा है। कई मौकों पर शेफाली के पिता संजीव वर्मा बता चुके हैं कि शेफाली का क्रिकेट खेलना भी आसानी से स्वीकार नहीं किया गया था, लेकिन वे अपनी बेटी के साथ डटे रहे। तब किसे पता था कि एक दिन वे भारत के लिए विश्वकप खेलेंगी और महज 16 साल की ही उम्र में टीम की सबसे प्रमुख बल्लेबाज बनकर उभरेंगी। इस विश्वकप में शेफाली अब तक खेले 4 मैचों में 40.25 के औसत से 163 रन बना चुकी हैं और उनका स्ट्राइक रेट (प्रति 100 गेंदों पर बनाए कुल रन) 163 का है, जो टूर्नामेंट में सबसे अधिक है। उनकी आक्रामक बल्लेबाजी का ही कमाल है कि इस विश्वकप में भारत ने पावर-प्ले (किसी भी पारी के शुरुआती छह ओवर जिनमें कि फील्डिंग पाबंदियां लागू होती हैं) में सबसे अधिक तेजी से रन बनाए हैं। कुल चार मैचों के 24 ओवर में 8.25 के रन रेट के साथ भारत ने 198 रन बनाए हैं। जबकि दूसरे नंबर पर इंग्लैंड है जिसने इस दौरान 6.79 के रन रेट से 163 रन बनाए हैं। भारत से फाइनल में भिड़ने वाली ऑस्ट्रेलिया ने तो सिर्फ 5.96 का रन रेट निकाला है।

पावर-प्ले में शेफाली के धुआंधार खेल की बानगी उनकी खेली पारियों से समझ आती है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उन्होंने 15 गेंदों पर 29 रन, बांग्लादेश के खिलाफ 17 गेंदों पर 39 रन, न्यूजीलैंड के खिलाफ 34 गेंदों पर 46 रन और श्रीलंका के खिलाफ 34 गेंदों पर 47 रन की पारियां खेलीं। इस दौरान उन्होंने 9 छक्के भी मारे हैं जो इस विश्वकप में किसी भी बल्लेबाज द्वारा मारे छक्कों में सर्वाधिक हैं।

● आशीष नेमा

सहवाग से तुलना

शेफाली की इसी आक्रामक बल्लेबाजी की तुलना भारतीय पुरुष टीम के पूर्व विस्फोटक सलामी बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग से करते हुए भारतीय महिला क्रिकेट टीम की पूर्व कप्तान डायना एडुल्जी कहती हैं, 'शेफाली वो खिलाड़ी हैं जो दर्शकों को महिला क्रिकेट देखने के लिए विवश करेंगी। तुलना करना ठीक तो नहीं होगा लेकिन वे मुझे वीरेंद्र सहवाग की याद दिलाती हैं। उनकी हमलावर शैली महिला क्रिकेट में एक नयापन लेकर आई है।' उनका कहना सही भी है। जब से शेफाली ने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में कदम रखा है, वे हर मैच के साथ नए कीर्तिमान गढ़ रही हैं। अपने पांचवे ही अंतर्राष्ट्रीय मैच में उन्होंने क्रिकेट के सर्वकालिक महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर का तीन दशक पुराना रिकॉर्ड तोड़ दिया था।

श्रद्धा कपूर ने कहा...

फिल्म के लिए मैंने गालियां देना सीखा

श्रद्धा कपूर इन दिनों अपनी आगामी फिल्म बागी 3 को लेकर चर्चा में हैं। श्रद्धा की पिछली फिल्म स्ट्रीट डांसर और छिछोरे ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन किया था। एक हालिया इंटरव्यू में श्रद्धा ने अपनी फिल्म, सायना बायॉपिक और सोशल मीडिया जैसे मुद्दों पर बातचीत करती हैं।

बागी-3 को लेकर श्रद्धा कहती हैं कि फिल्म को लेकर प्रेशर है। क्योंकि लोगों की उम्मीदें काफी बढ़ जाती हैं। ट्रेलर को अच्छा रिस्पॉन्स मिला है, उम्मीद है कि फिल्म भी लोगों को पसंद आए। हमारी यह भी कोशिश है कि लोग इसे देखने के बाद इंडस्ट्री के ऐक्शन लेवल पर पसंद करें। हमने तो पूरा लाइव ऐक्शन किया है। लाइव ऐक्शन के दौरान सेट पर डरी हुई होने के सवाल पर श्रद्धा ने कहा... डरने के बजाय, मैं तो बहुत ही उत्साहित थी। ऐसा लाइव ऐक्शन कभी देखा नहीं, उपर से टाइगर को लाइव ऐक्शन करते हुए देखना मेरे लिए किसी ट्रीट से कम नहीं था। इतने बेहतरीन प्रफेशनल और ऐक्शन टीम थी कि डरने की कोई बात ही नहीं थी। टाइगर के बारे में पूछने पर श्रद्धा कहती हैं कि वह इस दुनिया के सबसे अच्छे इंसानों की कैटिगरी में आते हैं। अपने काम को लेकर बहुत डेडिकेटेड और डिसीप्लीन हैं। यह सेट पर भी सबको दिखता है। मैं टाइगर को बचपन से जानती हूं, हमारी यह बॉन्डिंग स्क्रीन पर बहुत मददगार साबित होती है। उनके साथ काम करना बहुत आसान है आपको बहुत कंफर्टेबल महसूस करवाते हैं।

मणिकर्णिका बनाकर कंगना ने पैसा बर्बाद कियाः अहमद खान

बागी-3 के निर्देशक अहमद खान ने कंगना रनौत और उनकी फिल्म धाकड़ को लेकर कॉमेंट किया है। अहमद की मानें तो कंगना ने महिला प्रधान फिल्म मणिकर्णिका को बहुत बड़े स्केल पर बनाया, लेकिन फिल्म बुरी तरह फ्लॉप हो गई और मेकर्स को बहुत घाटा हुआ। मणिकर्णिका की असफलता और घाटे की वजह से कंगना की अगली अनाउंस की गई फिल्म धाकड़ डिब्बा बंद हो गई। अहमद कहते हैं, कंगना रनौत ने भी मणिकर्णिका जैसी फिल्म बनाकर सफलता पाने की कोशिश की। फिल्म मणिकर्णिका को बहुत बड़े स्केल पर बनाया था, लेकिन उनका पैसा बर्बाद हो गया, मेकर्स को बहुत ज्यादा घाटा हुआ।

बधाई हो की सफलता ने बदल दी जिंदगीः गजराज राव

ऐक्टर गजराज राव को फिल्म इंडस्ट्री में 26 साल से ज्यादा हो गए हैं लेकिन उन्हें कुछ सालों पहले तक बहुत पहचान नहीं मिली थी। जब 2018 में फिल्म बधाई हो रिलीज हुई तो गजराज राव को घर-घर में पहचाना जाने लगा। यह फिल्म सुपरहिट थी और गजराज के किरदार को काफी पसंद किया गया था। गजराज राव का कहना है कि यह उनकी जिंदगी का सबसे अच्छा दौर है। गजराज ने कहा, बधाई हो के बाद मेरे पास बड़े और मुख्य किरदार मिलने लगे हैं। यहां तक कि जिन डायरेक्टर्स ने कभी मुझसे संपर्क नहीं किया था, वे भी मुझे कॉल करने लगे हैं। बधाई हो की सफलता के बाद मेरी जिंदगी काफी बदल गई है।

अजय देवगन की चाणक्य में नहीं होगा कोई चंद्रगुप्त मौर्यः नीरज पांडे

डायरेक्टर नीरज पांडे को बॉलिवुड के उन चंद डायरेक्टर्स में गिना जाता है जो हमेशा अलग तरह की फिल्में बनाते हैं। उन्होंने अ वेडनसडे, स्पेशल 26, बेबी, एमएस धोनीः द अनटोल्ड स्टोरी और अय्यारी जैसी फिल्मों का डायरेक्शन किया है। अब वह अजय देवगन के साथ चाणक्य के जीवन पर फिल्म बनाने जा रहे हैं।

नीरज ने बताया, अभी तो बस हम अजय देवगन के साथ फिल्म चाणक्य पर काम कर रहे हैं। चाणक्य की कहानी ने खुद अपने चेहरे की तलाश की और अजय देवगन को खोज लिया। चाणक्य की कहानी के लिए अजय देवगन की तरह ही एक बेहतरीन अभिनेता चाहिए था। हम निर्देशक किसी न किसी ऐक्टर को माध्यम बनाकर ही अपनी कहानी कहते हैं। आज के समय मे चाणक्य के किरदार के लिए हर लिहाज से अजय देवगन बेस्ट ऐक्टर हैं अब मैं उन्हें बेस्ट क्यों मानता हूं, यह आपको फिल्म देखने के बाद ही पता चलेगा कि मेरी बात कितनी सही है। हम फिल्म चाणक्य की शूटिंग इसी साल अक्टूबर में शुरू करेंगे। अजय खुद भी भारत के ऐतिहासिक किरदारों पर कहानी कहना चाहते हैं।

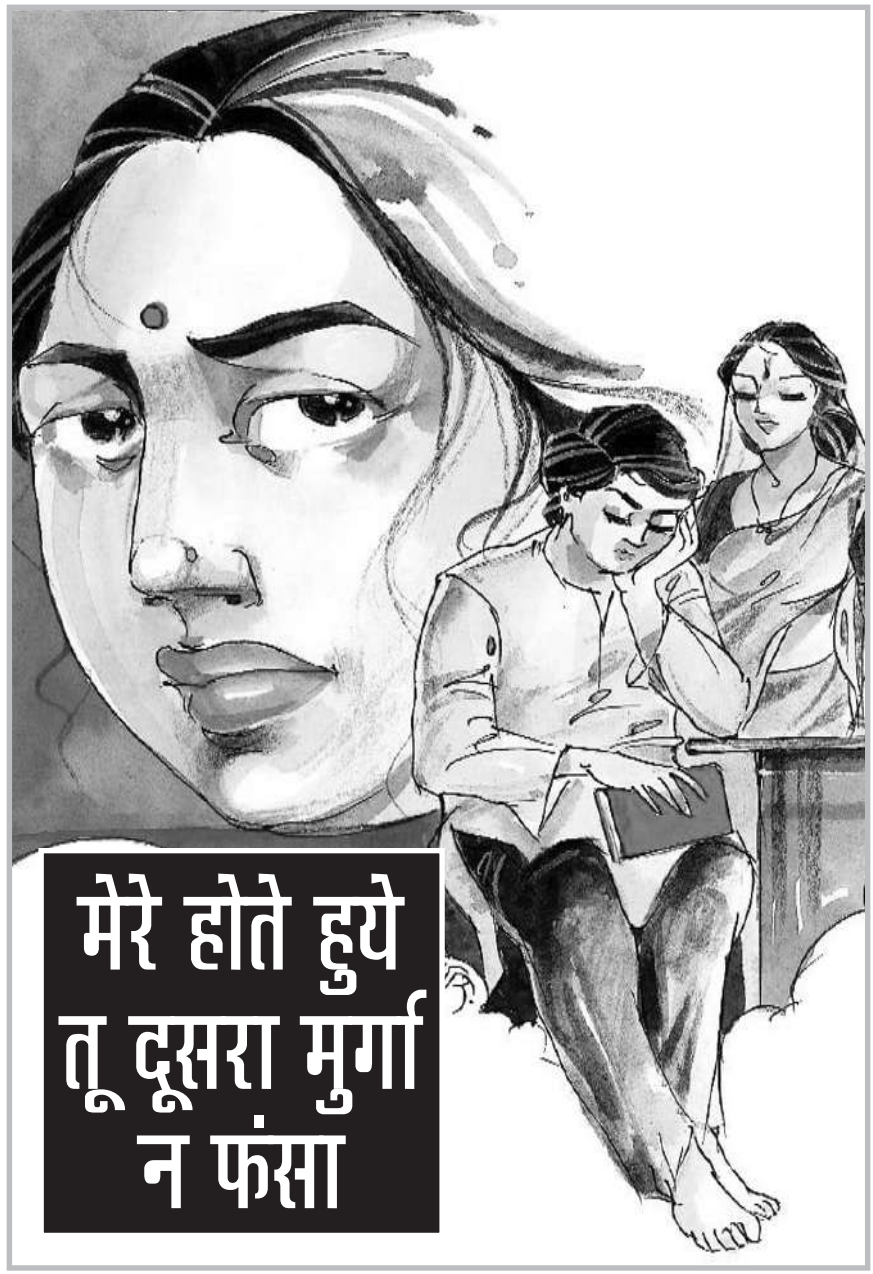

मेरे होते हुये तू दूसरा मुर्गा न फंसा

इन दिनों शायर प्यारेलाल बड़े उदास से रहते हैं। मायूसी से भरे दिन एवं खोयी-खोयी रातें जैसे-तैसे कट रहीं हैं। लगातार आ रही नई फिल्मों के दर्द भरे गीत उन्हें रोने पर विवश कर रहे हैं। दरअसल ये सब शायर प्यारेलाल की जिंदगी में पहली बार हो रहा है। जिस कमनीय चतुर कन्या के 'मोहब्बत नामक भ्रमजाल' में शायर प्यारेलाल फंसे थे उस चतुर कन्या की रजिस्ट्री पहले से ही किसी बेवड़े ने खुद के नाम कर रखी थी। ये उस चतुर कन्या की चतुराई ही थी कि किसी के नाम पर रजिस्टर्ड होते हुए भी वो लगभग प्यारेलाल जैसे एक दर्जन मजनुओं पर जीती मरती थी। सच्ची मोहब्बत करने का दावा रोज रात 2 बजे तक वाट्सएप और मैसेंजर पर करती थी। प्यारेलाल एक सहज, सरल और मशहूर शायर थे, लिखते बाकमाल थे। सम्मान पूर्वक जिंदगी जी रहे थे।

बात 2017 की है जब मुशायरे में जाते समय उनका मोबाइल बज उठा। पहले तो आवाज सुनकर यूं लगा जैसे कोई मर्द बोल रहा है। लेकिन नेटवर्क एरिया में आने के बाद और फोनकर्ता के नाम बताने के बाद प्यारेलाल को यकीन हो गया कि सामने से कोई कन्यानुमा ही है। मर्द जैसी आवाज वाली उस चतुर कन्या ने फोन पर हुई चंद मिनट की बातों से प्यारेलाल को एहसास करा दिया कि वो प्यारेलाल की जबरा फैन है। यूट्यूब पर प्यारेलाल की शायरी सुनती है। फेसबुक प्रोफाइल को जूम करके देखा करती है।

इतनी बात सुनते ही प्यारेलाल को यूं लगा जैसे ईश्वर की अटकी हुई कृपा आनी शुरू हो गई है। मारे खुशी के उस रात प्यारेलाल ने मुशायरे में मोहब्बत की वो शायरी भी पढ़ी जो उन्होंने कभी लिखी भी ना थी। प्यारेलाल उसके साथ पींगे बढ़ाने को आतुर हो उठे। बात बढ़ती ही गई वाट्सएप चैट, वीडियो कॉल, पर देर तक बातें भी होने लगीं। मौके की नजाकत को भांपते हुए चतुर कन्या प्यारेलाल से मोबाइल में बैलेंस डलवाने के साथ ही टीवी आदि का रिचार्ज भी करा देने का आग्रह करने लगी। अत्याधिक पैसे की जरूरत पड़ने पर कन्या प्यारेलाल से बैंक खाते में आरटीजीएस भी करवा लेती। मुशायरे में आते-जाते समय नजदीकी रेलवे स्टेशन पर प्यारेलाल से मिलने कन्या अपना मुंह ढांककर ही आया करती थी, जिससे उस कन्या के दर्जनों छिछोरे टाइप के प्रेमी भी उसे नहीं पहचान पाते थे। कभी कभार तो प्यारेलाल खुद भी नहीं पहचान पाते थे। चतुर कन्या के आग्रह पर ही प्यारेलाल उसको शायरी और कविता लिखकर देने लगे, उसके नाम से अखबार में प्रकाशित कराने लगे। अखबार में छपी कविता और फोटो को उसने फेसबुक प्रोफाइल बनाकर खुद के आशिकों की संख्या में इजाफा कर लिया। अब उसके पास मोबाइल, टीवी रिचार्ज करा देने वाले आशिकों की भरमार थी। कुछ तो इतने खतरनाक आशिक मिले की निजी तस्वीर मिलते ही उसे बहुत से ग्रुपों में एडमिन बना दिए। और शायद फेसबुक ग्रुप में एडमिन बनना ही उस चतुर कन्या के जीवन का अंतिम लक्ष्य था जिसे वो प्राप्त करने के बाद से प्यारेलाल से दूरी बनाने लगी। प्यारेलाल नवोदित आशिक की तरह अधीर हो उठे। विरह वेदना में सुलगने लगे। कभी कभार तो दुनिया को अलविदा कहने के भाव भी प्यारेलाल के मन में उठने लगे। किसी के समझाने पे अब प्यारेलाल मोबाइल युग एवं आधुनिक मोहब्बत को कोसते हु, अपनी पुरानी जिंदगी में धीरे-धीरे लौट रहे हैं और सबसे सोच समझकर और दिखावे की मोहब्बत के झांसे में ना आने की सलाह दे रहे हैं। अपनी मोहब्बत को याद करते हुए प्यारेलाल गीत गुनगुना रहे थे-

मुझको टरका दिया औरों से बहाने से मिली,
एक मेरे सिवा सारे जमाने से मिली,
तू फलाने से फलाने से फलाने से मिली
काश मुझको भी चखा दे मोहब्बत का मजा।
ऐ मेरी जान वफा, जान वफा, जान वफा,
मेरे होते हुए तू दूसरा मुर्गा ना फंसा।

● **आशीष तिवारी निर्मल**

कमल नाथ, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश शासन

मुख्यमंत्री सोलर पम्प योजना

प्रदेश में पहली बार 2 लाख किसानों को सिंचाई हेतु मिलेंगे सोलर पम्प

सोलर पम्प स्थापना हेतु पोर्टल www.cmsolarpump.mp.gov.in पर ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। सोलर पम्प स्थापना के लिए भारत शासन व मध्यप्रदेश शासन द्वारा अनुदान दिया जा रहा है। आवेदन के साथ कृषक द्वारा स्वप्रमाणीकरण किया जाएगा कि उसके खसरे/ बटांकित खसरे की भूमि पर विद्युत पम्प संचालित/संयोजित नहीं है। विद्युत पम्प संचालित होने की स्थिति में यदि सम्बन्धित कृषक विद्युत पम्प का कनेक्शन विच्छेद करवा लेता है अथवा उस पर प्राप्त अनुदान छोड़ देता है, तब उसे सोलर पम्प स्थापना पर अनुदान दिया जा सकता है। इस योजनांतर्गत कृषक को सोलर पम्प का लाभ इस शर्त पर दिया जाएगा कि कृषक की कृषि भूमि के उस खसरे/बटांकित खसरे पर भविष्य में विद्युत पम्प लगाये जाने पर उसको विद्युत प्रदाय पर कोई अनुदान देय नहीं होगा।

क्र.	सोलर पंपिंग सिस्टम के प्रकार	हितग्राही किसान) अंश (रु.)	डिस्चार्ज (लीटर में प्रतिदिन)
1.	1 एच.पी.डी.सी. सबमर्सिबल	19000	30 मी. के लिए 45600 शट ऑफ डायनेमिक हेड 45 मी.
2.	2 एच.पी.डी.सी. सरफेस	23000	10 मी. के लिए 198000 शट ऑफ डायनेमिक हेड 12 मी.
3.	2 एच.पी.डी.सी. सबमर्सिबल	25000	30 मी. के लिए 68400 शट ऑफ डायनेमिक हेड 45 मी.
4.	3 एच.पी.डी.सी. सबमर्सिबल	36000	30 मी. के लिए 114000 शट ऑफ डायनेमिक हेड 45 मी. 50 मी. के लिए 69000 शट ऑफ डायनेमिक हेड 70 मी. 70 मी. के लिए 45000 शट ऑफ डायनेमिक हेड 100 मी.
5.	5 एच.पी.डी.सी. सबमर्सिबल	72000	50 मी. के लिए 110400 शट ऑफ डायनेमिक हेड 70 मी. 70 मी. के लिए 72000 शट ऑफ डायनेमिक हेड 100 मी. 100 मी. के लिए 50400 शट ऑफ डायनेमिक हेड 150 मी.
6.	7.5 एच.पी.डी.सी. सबमर्सिबल	135000	50 मी. के लिए 155250 शट ऑफ डायनेमिक हेड 70 मी. 70 मी. के लिए 101250 शट ऑफ डायनेमिक हेड 100 मी. 100 मी. के लिए 70875 शट ऑफ डायनेमिक हेड 150 मी.
7.	7.5 एच.पी.ए.सी. सबमर्सिबल	135000	50 मी. के लिए 141750 शट ऑफ डायनेमिक हेड 70 मी. 70 मी. के लिए 94500 शट ऑफ डायनेमिक हेड 100 मी. 100 मी. के लिए 60750 शट ऑफ डायनेमिक हेड 150 मी.

योजना के विवरण हेतु सम्पर्क करें

आपके जिले के : जिला अक्षय ऊर्जा अधिकारी, म.प्र. ऊर्जा विकास निगम

www.cmsolarpump.mp.gov.in या mponline कियोस्क के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है।

अधिक जानकारी हेतु मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम के जिला कार्यालय या मुख्यालय, भोपाल में सम्पर्क कर सकते हैं।

नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा विभाग, मध्यप्रदेश शासन

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2020

जो वचन दिया, पूरा किया

मध्यप्रदेश शासन

जय किसान समृद्धि योजना

(गेहूँ)
रबी 2018-19

> “ वर्ष 2019 में निर्धारित समय में मण्डी तथा उपार्जन केन्द्रों में गेहूँ बेचने वाले पंजीकृत किसानों को 160 रुपये प्रति क्विंटल प्रोत्साहन राशि देने की जो घोषणा हमने की है उसका वितरण 1 अप्रैल 2020 से प्रारंभ होगा। ”
>
> **कमल नाथ**
> मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

लगभग 11.75 लाख किसानों को प्रोत्साहन राशि का लाभ मिलेगा।

उम्मीदें रंग लाईं, तरक्की मुस्कुराई

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2020